अपनी स्वतन्त्र बुद्धिसे कोई काम कर सकता है उसके खयालमें मनुष्यका रत्ती रत्ती काम भाग्यके बन्धनोंसे जकड़ा हुआ है।

मुराद बोला—अब यही दोनो महाशय फैसला कर देंगे कि मेरा खयाल ठीक था या तुम्हारा।

सालहने उसका उत्तर न देकर कहा—"ज्यों ज्यों मैं बड़ा हुआ अपने पिताके साथ व्यापारकी कुल आवश्यक बातें और पेच सीखता रहा। उनके मरनेके बाद, जैसा कि आपसे मुराद कह चुका है मुझे चीनीके बरतनवाले रंगसे बहुत फायदा हुआ। मुरादके चले जानेके बाद सुलतानाके महलसराकी अनेक बीबियां मेरी दुकान पर आने जाने लगीं। धीरे धीरे मैं अपना व्यापार बढ़ाने लगा। हर तरहका माल जो अमीर बीबियोंको दरकार होसकता है मेरी कोठीमें रहने लगा। मैं अपनी कमाई से यहां तक अमीर होगया कि यह आलीशान मकान और बाग आदि बनवा सका। अनेक गुलाम और लौंडियां भी खरीदीं और बड़े आरामसे रहने लगा। एक दिन एक यहूदी मेरे पास आया और कहा कि आपके गुलामोंके लिये कपड़े लाया हूँ पसन्द हों तो ले लीजिये। मैंने पूछा, कपड़े कहां हैं? उसने कहा—घर पर, जहां मैं ठहरा हूँ, साथ चलो तो दिखा दूं। नये गुलामोंके लिये मुझे वास्तवमें कपड़ोंकी जरूरत थी इसलिये मैं उसके डेरेपर गया। देखा एक बड़ा सन्दूक कपड़ोंसे भरा है। यहूदीने उनमें हाथ लगानेसे पहले दस्ताने पहन लिये और कोई तेल नथनोंमें लगा लिया। मैंने पूछा—यह क्या करता है? बोला—जनाब कपड़ों के नीचे एक मुश्ककी डिब्बी रखी है उसकी बू मुझसे बरदाश्त नहीं होती इसीलिये तेल लगायाहै। मैंने पूछा दस्ताने क्यों पहने? तब तो वह जरा चकराया पर सम्हलकर बोला कि कपड़ोंमें बसी हुई बू कहीं हाथमें न लग जाय इस लिये दस्ताने चढ़ाये हैं। मुझे यहूदीकी इन बातोंसे सन्देह हुआ। कपड़े देखे तो वह एक प्रकार से नये थे पर यहूदी उन्हें मट्टीके मोल देता था। उससे कारण का

तो कोई सन्तोषदायक उत्तर न मिला। पर बातचीतमें मैंने मालूम कर लिया कि वह हलब और शामसे होकर मिसर गया वहांसे कुस्तुन्तुनिया आया। मैं सुन चुका था कि शामके सिम्नी आदि नगरोंमें प्लेग फैली हुई थी और मिसरमें भी आरम्भ होचली थी। मुझे दृढ़ विश्वास होगया कि वह कपड़े प्लेगकी छूतसे भरे थे। यहूदीसे कुछ न कहकर मैं सीधा काजीके पास गया और उनसे अपना सन्देह प्रगट किया। प्लेगका नाम सुनकर वह चौंक पड़े। कोतवालको आज्ञा दी कि उसीदम यहूदीको बक्स सहित पकड़ लावे। कोतवाल गया और उसे पकड़ा भी पर वह उसे धोखा देकर निकल गया। काजीने उसी दम कपड़े जला देनेकी आज्ञा दी और इस तरह मैं कुस्तुन्तुनियाको प्लेगसे बचा सका। इसलिये नगर निवासियों और स्वयं प्रधानमन्त्रीने मेरा बहुत धन्यवाद किया। इसी प्रकार एक बार मैं यह नगर जलनेसे भी बचा चुका हूँ। उसके लिये स्वयं हजरत सुलताननें मेरा धन्यवाद करके मेरी इज्जत बढ़ाई और बहुत कुछ इनाम दिया। बड़े बड़े व्यापारी और सरकारी अफसर मेरे यहां आनेजाने लगे और दिन दिन मेरी इज्जत बढ़ने लगी।

एक दिन रातके समय अपने घर सोया हुआ था कि किसीने जोरसे सदर दरवाजा खटखटाया और नाम लेकर आवाज दी। मैं उठ बैठा और जल्दीसे नीचे उतरकर द्वार खोला। मैं समझा था कि कोई व्यापारी किसी विशेष कामसे आया होगा, पर देखा तो बाहर कोई नहीं था मैंने आवाज दी और पुकारा कि कौन द्वार खटखटाता था, पर किसीने जवाब न दिया। एकाएक मेरी निगाह किसी कालीसी चीजपर पड़ी जो एक ओर दरवाजेके बाहर रखी थी, रोशनीसे देखा तो एक बड़ा सन्दूक था। उसका ताला बन्द था पर चाबी तालेमेंही थी। गुलामोंसे उठवा कर मैं बक्स घरके भीतर लेगया और सोचने लगा कि क्या करना चाहिये। बहुत विचार करके यही निश्चय किया कि सन्दूक

खोलकर देखना चाहिये कि उसमें क्या है, शायद उसीसे उन आनेवालोंका पता लगे जो उसे यों मेरे द्वार पर छोड़ गये थे। यह विचारकर मैं सन्दूक एकान्तमें लेगया और उसका ताला खोला ढकना उठातेही मैं आश्चर्यमें डूब गया। देखा एक अति रूपवती स्त्री उसमें मुर्दासी पड़ी है। उसके शरीर पर अनेक जख्म थे, शायद उसीसे वह बेहोश थी मरी नहीं थी। उसी दम मैंने अपने एक विश्वासी गुलामको बुलाया और उसकी सहायतासे युवती को सन्दूकसे निकाल कर पलंग पर लिटाया और फिर गुलामसे एक चतुर जर्राहको बुलवाया। उसने आकर युवतीके जख्मोंकी मरहम पट्टीकी और बिदा होगया। एक लौण्डीको युवतीकी सेवा पर नियत करके मैं अपने कामसे लगा। दूसरे दिन लौण्डीने खबर की कि युवतीको कुछ होश हुआ है मैं यह सुन उसके पास गया, देखा वह चारों ओर आश्चर्यसे देख रही है। मुझे देखतेही और भी आश्चर्य करने लगी। मैंने उसे तसल्ली दी और उसकी वैसी दशा होनेका कारण पूछा। उसने कहा कि पहले तुम यह बताओ कि मैं यहां कैसे आई। मैंने कुल मामला कह सुनाया, तब वह आंखोंमें आंसू भर लाई और बोली मेरा घर हलब नगरमें है। इस नगरमें मेरा एक मामा रहता है। आज एक महीना हुआ हम, अर्थात् मैं, मेरे माता पिता और कई नौकर चाकर, हलबसे चले। राहमें किसी नगरसे दस और बारह यात्री भी हमारे साथ होगये। परसों सन्ध्या समय हम एक सघन जंगलसे होकर निकले। एक स्थानपर जहां जंगल खूब घना था हमारे साथवाले यात्रियोंने जो असलमें डाकू थे एकाएक हम पर आक्रमण किया, लड़ाई हुई, मेरा पिता पहलेही हल्लेमें मारा गया, फिर माता और मैं भयंकर रूपसे खजमी हुईं। फिर क्या हुआ मुझे याद नहीं क्योंकि बेहोश होगई। युवतीने फिर कहा, मालूम होता है कि हमारे सब साथी मारे गये और कुल माल डाकुओंके हाथ लगा। पर यह नहीं समझमें आया कि डाकू मुझे तुम्हारे घर कैसे छोड़ गये।

सच पूछिये तो इसीका मुझे भी आश्चर्य था। दूसरे दिन काजी से कुल हाल कहा उसने उसीदम तहकीकात शुरू कर दी। मैंने भी खूब सोच विचार कर स्थिर किया कि जो लोग सन्दूक दरवाजे पर रख गये उनमेंसे कोई मुझे जरूर जानता था, तभी तो मेरा नाम लेकर पुकारा। सोचते सोचते याद आया कि नगरमें आग लगानेके अपराधमें मैंने नगर और आस पासके कई बदमाशोंको दण्ड दिलाया था, शायद उन्हींमें का कोई इस मामलेमें शरीक हो। अपना सन्देह काजी पर भी प्रगट किया उसने भी इस बात को स्वीकार किया और उन्हीं बदमाशोंकी मण्डलीसे जांच शुरूकर दी। इधर उस युवतीके मामासे खबर कीगई। वह नगरका एक मशहूर व्यापारी था, युवतीको घर लेगया और उसका इलाज कराता रहा। मेरे पता देने पर कई बदमाश पकड़े गये, अन्तमें कुछने अपना अपराध कबूल किया और छिपाये हुए मालका पता भी बता दिया। परिणाम यह हुआ कि बहुतसा माल मिल गया और कुल डाकुओंको उचित दण्ड मिला। मैं युवतीका हाल मालूम करने रोज उस व्यापारीके घर जाता था। उसके प्रेमने मेरे दिलमें यहां तक जगहकी कि मेरा दिल उचाट रहने लगा, बिना व्यापारी के घर गये चैन नहीं पड़ता था। कई महीने इसी प्रकार बीतनेपर एक दिन मैंने उस व्यापारीसे युवतीके पाणिग्रहणका प्रश्न किया। उसने खुशीसे स्वीकार किया और कुछ ही दिनोंमें युवती मेरी पत्नी होगई। मेरे दो पुत्र भी हुए और अब मैं अपनी गृहस्थी में बड़े सुख पूर्वक दिन काटता हूं। अब मुरादसे भी कहता हूं कि वह मेरेही पास रहे और किसी तरहकी चिन्ता न करे। यह बरतन मैं किसी तरह जुड़वाकर बनवा लूंगा, आशा है कि सुलताना क्षमा करेंगी।

सालहके चुप होतेही दोनों नकली व्यापारी अर्थात् सुलतान और प्रधान मन्त्री खड़े होगये। सुलतानने कहा—बस सालह, अब तू बरतन की चिन्ता न कर, मुराद तू भी खुश हो। सुलताना तुम

दोनोंसे नाराज न होंगी। फिर मन्त्रीसे कहा कि वास्तवमें तेरा कहना सच निकला। एक अपनी मूर्खतासे उस दरजेको पहुंचा और दूसरे ने केवल अपनी बुद्धि और परिश्रमसे यह प्रतिष्ठा प्राप्त की, भाग्य का उससे कुछ सम्बन्ध नहीं है। सालहको पहले तो नकली व्यापारियों पर आश्चर्य हुआ पर साथही वह कुल मामला समझ गया। बड़े अदबसे उसने मुजरा किया और कहा, गुलाम हजरत सुलतान को नहीं पहचान सका, आशा है कि माफ किया जायगा। भाईसे भी जो बेअदबी हुई हो जहां पनाह उसे क्षमा करें। मुराद आंखे फाड़ फाड़कर सबको देखता था, उसके समझमें खाक भी न आया कि दोनों व्यापारी कौन थे। सालहने जल्दीसे इशारेमें समझाया कि एक सुलतान हैं और दूसरा मन्त्री। यह सुनतेही मुराद उनके पैरों पर गिर पड़ा और गिड़ गिड़ाकर क्षमा प्रार्थना करने लगा। मन्त्रीसे बोला कि अब आपको पूरा विश्वास होगया होगा कि मैं नानबाई नहीं हूं, जैसा कि लोग उस दिन आपके सामने कहते थे। मन्त्रीने मुसकराकर कहा, कि हां मालूम होगया कि तू नान बाई नहीं पर मूर्ख परले सिरेका है। सालहने कहा कि इसी लिये आशा है कि सुलतान उसे क्षमा करेंगे।

सुलतानने दोनों भाइयोंको बहुत तसल्ली दी और मन्त्रीसे कहा कि मैं आज्ञा देता हूँ कि आजसे सालह भाग्यवान, सालह बुद्धिमान कहा जाय और आभागा मुराद, मूर्ख मुराद पुकारा जाय।

पाठक, बस इतना और कहना बाकी रह गया कि सालह दिन दिन उन्नति करता रहा और अन्तमें उसने बड़ा दरजा प्राप्त किया और मुराद नामुरादने अपनी बाकी उम्र कुस्तुन्तुनियाके चण्डू खानोंमें गंवादी और अन्त तक "मूर्ख मुराद" ही कहलाया।

॥ मधुमक्षिका ॥
महावीरप्रसाद ।

॥ श्रीः ॥

मधुमक्षिका ।

प्रथम भाग ।

mahabir prasad

महावीरप्रसाद द्वारा

संकलित ।

कलकत्ता ।

९७ मुक्ताराम बाबू ष्ट्रीट, भारतमित्र प्रेससे

पण्डित क्षष्णानन्द शर्म्मा द्वारा मुद्रित और

प्रकाशित ।

सन् १९०३ ई० ।

॥ श्रीः ॥

मधुमक्षिका।

जगत पिता जगदीश्वर की करुणा और शिल्प कौशल चाहे छोटे से छोटा कीटाणुहो चाहे मनुष्यादि श्रेष्ठ जीव सब प्राणियोंमें समभाव से विराजमान हैं। खुर्दबीन द्वारा छोटे छोटे कीड़ों की देह देखने से विस्मित होना पड़ता है। उनके छोटे छोटे अङ्ग प्रत्यङ्ग जब आनन्द से इधर उधर नाचते फरफराते हैं तब उन्हें देख कर अन्तः करण एकबारही प्रफुल्लित होजाता है। वास्तवमें ईश्वर बड़ा विलक्षण है जिस प्राणीके लिये जिस प्रकार का अङ्ग प्रत्यङ्ग उसकी जीवन रक्षाके उपयोगी होगा उसको उसने वैसाही अङ्ग प्रत्यङ्ग दिया है। हाथीका सूँड़ जिराफे की लम्बी गरदन जलचर पक्षियों के सिकुड़ते हुए पेर इत्यादि इस विषयके असंख्य उदाहरण दिये जासकते हैं। केवल यही नहीं उसने जीव जन्तुओंको कुछ स्वाभाविक ज्ञानभी दिया है, जिससे वह विपदसे अपनी रक्षा करने में समर्थ होते हैं, अपना घर बनाने और सन्तानोत्पादन कार्य्यमें प्रवृत्त होते हैं और स्वाभाविक स्नेहसे मुग्धहो असहाय शिशुका लालन पालन करके सदा अपना वंश कायम रखते हैं। चीटीं मकड़ी मधुमक्षिका, विविध प्रकार के पक्षी और बीवरके घोंसला बनानेकी विद्या, शासन प्रणाली परिश्रम अपार स्नेह, किफायत और भविष्यत के लिये संग्रह प्रभृति की पर्य्यालोचना करनेसे अन्तःकरण ईश्वर का रचना-कौशल और बुद्धि--वृत्ति की पराकाष्ठा देखनेके लिये औरभी उत्सुक होता है। मधुमक्षिका के छत्ता बनानेकी विद्या देखकर प्राणि-तत्व-वेत्तागण बहुत ही विस्मित होते हैं। सामान्य कीटको मोमसे स्वहस्ते दृढ़ और

सुन्दर षट्कोण गृह बनाते देखकर किसका मन विस्मित नहीं होगा? बड़े बड़े वैज्ञानिक भी घर बनाने की प्रणालीमें शायद इसके आगे हार मानेंगे। मधुमक्षिका के अधिकांश कार्य्य मनुष्य के व्यवहार के सदृश हैं। हम संक्षेपमें इसका विवरण पाठकों को सुनाना चाहते हैं, आशा है कि उनको वह अरुचिकर नहीं होगा।

अति प्राचीन कालसे मधुमक्षिका के ऊपर मनुष्योंकी दृष्टि है। यहूदियोंकी धर्म पुस्तक पढ़नेसे विदित होता है कि उन्होंने बहुत पहले मधुमक्षिका के आचार व्यवहार और स्वभाव की ओर ध्यान दियाथा। प्राचीन कालके विख्यात प्राणि तत्ववेत्ता प्लीनी साहब का कथन है कि एरिस टोमिकस नामक प्राणीविद्याके ज्ञाताने अपनी उमरके ८८ वर्ष मधुमक्षिका के काम देखने भालनेही में बितादिये। फिलिस्कस नामक किसी ग्रीस देशवासी ने अपने जीवन का अधिकांश समय मधुमक्षिका का स्वभाव जानने में ही बितादिया था। एरिसटाटलने अपनी प्राणितत्व विद्या की पुस्तक में मधुमक्षिका के स्वभाव आदिका वर्णन बहुत विस्तार पूर्वक किया है। प्राचीन रोमके पूज्यतम कवि वर्जिलने भी मधु-मक्षिकाको अपनी सुन्दर कवितामें स्थान दिया है। आधुनिक कालमें जिन लोगोंने मधुमक्षिका का कार्य्यकलाप पर्य्यालोचना करनेमें अधिक समय व्यतीत किया है उनमें सोयामार्डम, लिनीयस हण्टर, हिउबर और कर्बी प्रधान हैं। उक्त हिउबर का पुत्र भी प्राणि तत्व वेत्ताथा किन्तु उस के पिताका नामही अधिक विख्यात है। बड़ा हिउबर सत्रह वर्षकी अवस्थामें अन्धा होगया था इसीसे वह स्वयं किसी प्रकारकी देखभाल करनेमें समर्थ नथा, तथापि वह चुप नहीं रहा; अटल प्रतिज्ञा वाला मनुष्य सब प्रकारके कठिनसे कठिन विघ्न भी सहजमें टाल सकता है। कालिदास कहगये हैं कि ऊंचेसे नीचे गिरती हुई जलधाराकी भांति अभीष्ट सिद्धिके लिये स्थिर और निश्चित मनको कोई बाधा देकर रोक नहीं सकता। "स्वर्गभ्रष्ट काव्य"

(Paradise Lost) के रचयिता इङ्गलेण्डके महाकवि मिल्टनने अन्धे होकर उस जगद्विख्यात काव्यकी रचना कीथी। तब हिउबर क्यों निरास होता ? वरनेनस नामी उसका एक विश्वासी नौकरथा, वही उसकी तरफसे देखभाल करके उसकी सहायता करने लगा। उस नौकरके इस्तेफा देकर चलेजाने पर उसकी स्त्री और पुत्रने उसको यथाशक्ति सहायता दीथी। इसप्रकार उसने अध्यवसायसे कार्य्य कर के प्राणि तत्व विज्ञानमें विशेष उन्नति की। प्राचीन हिन्दुओं ने प्राणितत्व विद्यामें कहांतक उन्नति कीथी सो हमको भलीभांति विदित नहीं है। संस्कृत भाषामें प्राणि तत्व विद्या सम्बन्धी कोई पुस्तक है कि नहीं—इसमें हमको विशेष सन्देह है। इस विषय की मीमांसा संस्कृत के सुपण्डित लोगही कर सकते हैं। अस्तु संस्कृत कवियों के निकट मधुमक्षिका का विशेष आदर नहीं देखा जाता, इस विषयमें भ्रमर ही बड़ा सौभाग्यशाली है। वह कभी कामदेव के अमोघास्त्रका प्रधान सहाय और कभी बहुस्त्रिया-सक्त शठ लम्पटका आदर्श स्वरूप होकर संस्कृत कवियों का अत्यंत प्रीति पात्र हुआ था। किन्तु सच्चरित्र परिश्रमी परिमिता-चारी मधुमक्षिका शृङ्गार रस-प्रिय कवियों का मनोरञ्जन करनेमें समर्थ नहीं हुई। कविकी दृष्टिमें जोहो, चिंता शील वैज्ञानिकों के निकट मधुमक्षिकाका कभी अनादर नहीं होगा। हम लोगोंकी बोल चालमें मधुमक्षिकाके कई नाम हैं - जैसे मधुमक्षिका, मधु मक्खी, मदमाक्खी, मौमाखी शहदकी मक्खी इत्यदि।

प्राणिविद्याके पण्डितोंने जीवसमूहको प्रधानतः पांच श्रेणि-योंमें बांटा है। उनमें से स्तनपीने वाले, पक्षी, कीड़े और मछली प्रथम श्रेणीमें हैं। इस श्रेणीके जीवों के रीढ़होते हैं। इसलिये इसश्रेणीके जीव रीढ़दार कहलाते हैं। इनके सिवा अन्य किसी जीव के रीढ़ नहीं होता। मधुमक्षिका दूसरी श्रेणीमें है। इस श्रेणीको "गिरहदार" (Articulates) कहते हैं। क्योंकि इस श्रेणीके जीवोंके शरीर दो या कई भागोंमें बटेहुए हैं। मधुमक्खी

"गिरहदार" श्रेणीके कीड़ोंमें दाखिल है। अन्यान्य कीड़ोंकी भांति मधुमक्खीकी देह तीन गोलाकार अंशोंमें बटीहुई है। इन तीन अंशों में पहलेका नाम मस्तक, दूसरेका छाती और तीसरेका नाम पेट है। छातीके फिर तीन अंश है, और पेटके छ: सात। मस्तक अखण्ड है। मस्तक छाती और पेट पतले बन्धनों के द्वारा परस्पर इस प्रकार मिले हुए हैं कि जिससे उनको इधर उधर घूमने फिरने में किसीप्रकार की रुकावट नहीं होती। छाती और पेटके छोटे छोटे टुकड़ों के बीचका हिस्सा ऊंचा और अगल बगल नीचा है। मधुमक्खी के तीन तीनके हिसाबसे दोनों तरफ छ: पैरहैं। पैर छातीके तीन अंशके निचले तीन अंशों से मिले हुए हैं। मधुमक्खी के दोजोड़े अर्थात् चार पंख हैं जो छाती के दूसरे और तीसरे अंशके ऊपरी भागसे सटे हुए हैं। चार पंखोंमेंसे सामने के दो पिछले दोकी अपेक्षा बहुत बड़े हैं। इस के मस्तक के दोनों तरफ से दो पतले सूंड़निकले रहतेहैं। इन सूंड़ोंमें बारह तेरह गांठें हैं। दोनों सूँड़ों का पिछलाभाग गोल कुछ मोटा और नोकीला होता है। प्राणि विद्याके सब पण्डित कीड़ोंके सूंड़को उनका एक प्रधान अङ्ग बतलाते हैं किन्तु उसके काम के विषय में उनका मत भेद पायाजाता है। किसीकी रायमें दोनों सूंड़ स्पर्शेन्द्रिय हैं, जब मधुमक्खी छत्तेके भीतर घुसती है और अन्धकार में काम करती है तब इन सूंड़ोंसे उसको बहुत सहायता मिलती है। किसी किसी के मतमें सूँड़ कानका काम देते हैं और कोई कोई इनको नाक बताते हैं। कर्वी आदि अन्य कुछ लोग कहते हं कि सूँड़ आंख और कान के बीच कोई छठी इन्द्रिय होगी। ऐसी छठी इन्द्रिय किसी बड़े जीव की देहमें नहीं दिखाई देती। जोहो, इन सूँड़ों के द्वारा मधुमक्खियां अपना अपना अभाव एक दूसरे को बताती हैं और समाचार भी भेजा करती हैं। इनकी हरेक ठोड़ीके दो हिस्से हैं। हम लोगोंके मुंह फैलाने पर जैसे ऊपरकी ठोड़ी ऊपरको और नीचेकी ठोड़ी नीचेको खिकुड़ जाती है वैसे मधुमक्खी

की नहीं होती। उसकी ठोड़ीकी बाईतरफ के दो हिस्से बाईं तरफ और दाहिनी तरफके दोहिस्से दाहिनी तरफकोसिकुड़ जाते हैं। इसकी जीभ एक थैलीसे ढकी है। इसके पंख बहुत तेज उड़ने वाले पक्षियोंके डैनोंसे भी अधिक मजबूत हैं। इसके चार परों की बनावटसे मनुष्यके हाथोंकी बनावट बहुत मिलती है। हरेक पैरके अन्तमें एक दूसरेकी ओर मुड़ेहुए दो कांटे हैं; इन्हीं कांटोंके जरिये वह छत्तेके ऊपर पैर रखकर आनन्द से झूल सकती है। इसके सिवा मधुमक्खीके मुंहकेदोनों तरफसे दोजोड़े विशेष अङ्ग निकलते हैं; एक जोड़ा ओठसे मिला रहता है और दूसरा जोड़ा नीचेकी ठोड़ीसे मिलाहोता है। इनको अंगरेजी भाषामें Palpi या Feelers कहते हैं, हम इनका नाम स्पर्शक रखते हैं। मधुमक्खी आहार करनेसे पहले इन स्पर्शक अङ्गोंसे भोजन को टटोलती है। सूंड़ और स्पर्शक सदा चलायमान रहते हैं।

मधुमक्खियां मनुष्यकी भांति समाजबद्ध होकर रहती हैं, किसी किसी छत्तेमें पचास हजार तक एकत्र रहते देखी गई हैं। प्रत्येक छतेमें तीन श्रेणीकी मधुमक्खियां पाई जाती हैं जिनके नाम क्रमसे "रानी" "निखट्टू नर" और "काम-काजी" हैं। प्रत्येक छत्ते में केवल एक रानी रहती है। छत्तेमें जितनी मधुमक्खियां होती हैं उनके प्राय: तीस भागका एक भाग निखट्टूनर होता है और शेष सब काम काजी। प्राणि तत्व वेत्ताओं ने पहले कामकाजियों को नपुंसक समझाथा किन्तु वास्तव में यह अपूर्ण अङ्ग वाली स्त्री जाति है। इन तीनोंप्रकार की मधुमक्खियों का विशेष विवरण आगे लिखते हैं।

रानी।

किसी ज्ञानी दार्शनिक ने कहा है कि मनुष्य जितना ही उन्नत होता है स्त्रियोंका आदर उसके यहां उतनाही अधिक होता है। वर्त्तमान सभ्य जाति के मनुष्यों का स्त्रियों के प्रति व्यवहार इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। मधुमक्खी स्वभाव

शिचित है, इसकी उन्नति भी नहीं है अवनतिभी नहीं। वह सदा एक भावसे मधु संग्रह करती, और मधुका छत्ता बनाने आदिका काम करती है। किन्तु वहभी संस्कार वश स्वीजातिकीही पचपातिनी है। एक ही मधुमक्खी ही मचिका साम्राज्य की अद्वितीया

रानी

रानी है। प्रकृति देवी ही मानो उसको रानी बनाकर मचिका राज्य में भेजती है। उसके अङ्ग प्रत्यङ्ग उसकी प्रजाके अङ्ग प्रत्यङ्गों से बहुत बड़े होते हैं; उसका रङ्ग सबकी अपेचा स्वच्छ होता है, अङ्ग प्रत्यङ्ग सबल और सुडौल होते हैं। डंक कुछ टेढ़ा और पंख बहुत छोटे होते हैं। कामकाजी और निखट्टूनर के पंखोंसे उनकी छाती और पेट भलीभांति ढकजाते हैं किन्तु रानीके पंखसे उसकी छाती का कुछ अंश ढक सकता है पेटका प्रायः सब हिस्सा खुलाही रहता है। कामकाजी मक्खियोंकी भांति इसके पैरमें ब्रुश के कड़ेबालोंकी तरह रोएं अथवा रज संग्रह करने की थैली नहीं होती। उसको इन सबका प्रयोजन भी नहीं है। कारण यह कि उसकी भक्त प्रजा उसका अभाव बड़े प्रेमसे पूरा करदिया करती है। मधुमचिका वंशकी एक मात्र जननीका उदर निखट्टू और कामकाजियों के उदर की अपेचा बहुत बड़ा होता है, विशेष कर गर्भावस्था में वह बहुत बड़ा होजाता है। मधुमक्खियां अपनी रानीको बड़ा प्यार करती हैं। दिनरात परिश्रम करके वह रानी के लिये सहस्रों सूतिका गृह बनाती हैं, स्वयंरूखासूखा खाकर रानी को स्वादिष्ट और पुष्टि कारक भोजन खिलाती हैं और कभी उससे अलग नहीं होतीं। इसीसे भारत वर्षके किसी किसी प्रान्तके निवासी जब घरमें मधु का छत्ता लगवाना चाहते हैं तो पहले रानीको पकड़ कर उसके पंख छेदकर अथवा उसके पैर में तागा बांध कर निर्दिष्ट स्थान में रख छोड़ते हैं, बस बिना विलम्ब मधुमक्खियां वहाँ आकर छत्ता बनाने लगती हैं।

पहलेही कहागया है कि मधुके छत्ते में केवल रानी ही एक मात्र स्त्री मक्षिका है, उसीसे सब मक्खियों का जन्म होता है, इसीसे जर्मनी वाले रानीको जननी मधुमक्षिका (Mother-bee) कहा करते हैं। किन्तु अकेले सैकड़ों पुरुष मक्षिकाओं के बीच रहने पर भी रानी कभी नीति विरुद्ध कार्य्य नहीं करती। सम्पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त रहने पर भी वह एकही पुरुषको भजती है, मरतेदम तक किसी दूसरेको पति नहीं बनाती। दो तीन दिन की उम्र होतेही रानी विवाह योग्य होती है, और प्राय: पतिनिर्वाचन करनेमें अधिक विलम्ब नहीं करती, यदि रानी पति चुनने में कुछ दिन विलम्ब करे तो प्रजावर्गमें राजवंश लोपके भयसे खलबली पड़जाती है और वह भयभीत होकर रानीका चित्त विविध प्रकारसे इस ओर फेरनेकी चेष्टा करती हैं। अन्तमें रानी एक मेघशून्य स्वच्छ दिनको राज प्रासाद से निकल कर निर्मल नील नभोमण्डल में उड़ने लगती है, और निखट्टू नर उसी क्षण रानीका प्रेमपात्र बननेकी लालसासे प्राचीन हिन्दू राजाओंकी स्वयंवर सभाकी भांति गगन मण्डल में उड़कर स्वयंवरा रानी कोघेरलेते हैं। पीछे रानी सहस्रों वरोंमेंसे एकको वरतीहै, शेष पुरुषगण लज्जा और विषादसे मुख मलिन करके छत्ते को लौटआते हैं, स्वयंवरके पश्चात राजाओं की तरह वह वरके साथ घोर संग्राम नहीं करते। किन्तु हाय! उक्त सौभाग्यवान नर नव विवाहिता वधूके साथ दोदिन भी सुखसे नहीं बितानेपाता, विवाह के दिन ही अतिभोग करके उसके सुखमय जीवनका अन्त होजाता है। संसारका सुख ऐसाही क्षण भङ्गुर है! किन्तु तथापि पति वियोग विधुरा मक्षिका रानी का अनुराग आजीवन अटल रहता है, उसको कभी पुनर्विवाह करते नहीं देखागया है। धन्य रानीधन्य! सहस्रों पुरुषोंके बीचमें निवास कर केभी तेरा'एकै धर्म्म एक व्रतनेमा काय वचन मन पति पदप्रेमा' है, तूने सतीत्वमें भारत ललनाओंको भी पराजित किया है। भारत ललनाएं पतिव्रता होकर यद्यपि जगत प्रसिद्ध हुई हैं किन्तु उनका

पातिव्रत्य अधिकांशमें भारतवासियों के निकट ऋणी है। अहा! तू तुच्छ कीट वंशमें जन्मलेकर सहस्रों पुरुषों के साथ निवास करके सम्पूर्ण स्वतंत्रता रहने परभी इन्द्रिय संयम की क्याही पराकाष्ठा दिखलारही है!

किन्तु रानीके पुनर्विवाह न करनेपर भी मक्षिका समाज को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुंचती। रानीका जिस दिन विवाह होता है, कह चुके हैं कि, केवल उसी दिन उसे पतिका सहवास लाभ होता है। केवल एक दिनके सहवास से वह दीर्घवर्षतक अण्डे देती है। उन अण्डों सेही असंख्य मधुमक्षिकाओं का जन्म होता है। विवाहके दोहीदिन पीछे रानी अण्डा देना आरम्भ करती है; अण्डेका आकार एक बारहवें इञ्चका होता है; रङ्ग कुछ नीलापन लिये साफ और कुछ टेढ़ा होता है। काम काजी मक्खियांपहलेहीसे उपयुक्त गृह बनारखती हैं। रानी प्रत्येक कोठरीमें एक एक अण्डा प्रसव करती है। अण्डादेनेके पहले वह बिलमें सिर घुसेड़कर अच्छी तरह उसके चारोंओर देखलेती है। किन्तु हमारे देशके लोग विद्या बुद्धि सम्पन्न होनेपरभी क्या सूतिका घर चुननेमें इतना परिश्रम करते हैं? यदि ऐसा होता तो हमारे देशमें बच्चोंकी इतनी मृत्यु नहीं होती। इस विषय में इस तुच्छ मक्षिका के काम से हम लोगोंको शिक्षा लेना चाहिये। बिल अच्छा विदित होने पर रानी उसमें अपने शरीरका पिछला भाग डालकर केवल एक अण्डा देती हैं, इसीप्रकार एकसे दूसरे में जाकर वह एक दिन में लगभग दो सौ अन्डे देती है।

जिस प्रकार आसन्न प्रसवा युवती को स्त्रियां सहानुभूति और सहायता के लिये चारोंओर से घेरकर बैठती हैं उसीप्रकार रानी को कामकाजी मक्खियां अन्डे देनेके समय घेरे रहती हैं और समय समय पर रानीके मुंह में मधुप्रदान करती हैं। अन्डा देदेने पर वह बिलमें घुसकर उसे भलीभांति झाड़पोंछ देती हैं। कभी कभी रानी बहुत जल्द जल्द अंडे देती है, सुतरां कभी

कभी एक एक बिलमें दो या दो से अधिक अन्डे गिरजाते हैं, किन्तु हरेक बिल एकही अन्डे केयोग्य बना होता है इससे उसमें एकसे अधिक अंडे रहनेसे अनिष्ट का भय करके कामकाजी मक्खियां एक को छोड़कर बाकी अंडे खाजाती हैं।

गर्भ धारण के पीछे छः अथवा आठ सप्ताह तक रानी लगातार अण्डे देती है, उन अन्डोंसे केवल कामकाजियां जन्म लेती हैं। उन अन्डोंके लिये पहलेहीसे कामकाजी मक्खियां घर बना रखती हैं। कई सप्ताह विश्राम लेकर रानी फिर अण्डे देती है, उन अण्डों से केवल निखट्टू नरों का जन्म होता है। उन के लिये भी पहलेही से कुछ बड़े और भिन्न प्रकारके घर तय्यार रहते हैं। कामकाजी मक्खियों के अन्डोंकी अपेक्षा नर मक्खियों के अन्डे कम होते हैं, कामकाजी संस्कार वश नर मक्षिकाओं के निमित्त घरभी अल्पही बनाती हैं। अन्तमें रानी थोड़ेसे अन्डे देकर फारिग होजाती है। इनसे राज कुमारियोंका जन्म होता है जोपीछे रानी होती हैं। अण्डे देदेनेके पश्चात् कामकाजी मक्खियां मधु और पराग मिश्रित मण्डथोड़ा २ हरेकघरमें डालकर उसका मुंह अच्छीतरह बन्द करदेती हैं। अन्डा धीरे धीरे बच्चा (Larva) होकर उक्त चीज खाकर बढ़ता है, फिर (*Pupa*) नामक अवस्था को प्राप्त होकर अन्तमें पूर्ण मक्षिकाअवस्था को धारण करता है। अन्डे से पूरी मक्खी बनने में कामकाजीकी अपेक्षा पुरुष मक्षिका को अधिक समय लगता है। राज कुमारियों वाले अण्डे बड़े और सुन्दर गृहमें रखे जाते हैं, अत्युत्कृष्ट पदार्थ खानेको पाते हैं और बड़े यत्नसे लालित पालित होते हैं।

जब राजभवनमें राजअन्डे राजकुमारीकी अवस्था प्राप्त होकर युवती मक्षिका होनेलगते हैं तब आदि रानी बड़ी चञ्चलता प्रगट करने लगती है। उसको अब अनुचरवर्गके साथ रहना अच्छा नहीं लगता और वह विविध उपायसे शिशुओं को मारडालनेकी चेष्टा करती है। किन्तु राज कुमारियां सदा सतर्क संत्रियोंके पहरेमें

रहती हैं। रानी बहुधा उनका कुछ अनिष्ट नहीं करने पाती। धीरे धीरे रानीका उद्वेग सब मक्खियों पर प्रगट होजाता है, छत्तेमें जगह जगह बलवा दिखाई देता है और तुरन्तही सम्पूर्ण छत्ते में अराजकता और अशान्ति फैलजाती है। अन्तमें एक साफ दिन के मध्यान्ह कालमें रानी दलबल सहित छत्तेसे बाहर निकल कर अन्यत्र चलीजाती है। अधिकांश मक्खियां उसके साथ जाती हैं। इससे पहलेही रानी छत्तालगाने योग्य स्थान ढूढ़नेके लिये चारों ओर दूत भेजती है, वह इधर उधर भ्रमण कर अन्तमें एक वृक्ष शाखा अथवा लता पताकी ओटमें स्थान पसन्द करते हैं। मक्खियां वहांही जाकर बसती हैं और कामकाजी मक्खियां छत्ता बनाने लगती हैं। पुराने छत्ते काविद्रोह दो तीनदिनमें समाप्त होजाता है और मक्षिका समाज शान्त होजाती है। सब नई रानियां एकही समय में युवती नहीं होतीं, जो सबसे पहले युवती होती है वह नाना भांति छलबल करके अन्यान्य राज कुमारियों को मारडालने की चेष्टा करती है। जब बुद्धिमान मानवजाति तुच्छ सिंहासनके लिये लड़कर आपसके पवित्र रक्तसे अभिषिक्त होकर मानव नामको अपमानित, पृथ्वी को पतित और इतिहास के प्रत्येक पृष्ठको कलङ्कित करने में जरा भी शङ्कित या लज्जित नहीं होती तब कीट पतङ्गको तो बातही क्या है। सब राजकुमारियां सर्वदा पहरेमें रहनेपरभी बड़ी रानी एकप्रकारका ऐसाशब्द करती है कि पहरेदार उसे सुनतेही मुग्ध होजाते हैं और प्राय: सब अपने अपने कामको भूल जाते हैं, तब बड़ी छोटी बहनोंको सहजमें मार कर निश्चिन्त होजाती है। अगर उसदिन वह किसी कारणसे कामयाब नहुई तो वहभी उस बूढ़ी रानीकी भांति अपने प्यारे अनुचरों सहित छत्ता त्यागकर अन्यत्र जा नई बस्ती बसाती है। यों दूसरा छत्ता तयार होता है। अब पुराने छत्तेमें बहुत थोड़ेही सन्तरी रहजाते हैं, तब नई युवती रानियोंमें से जो बड़ी होतीहै वह और सबको मारडालती है अथवा अगर वह सब एकही उमरकी हों तो

उनमें घोरयुद्ध प्रारम्भ होता है। इस युद्धमें सबके मरजानेकी सम्भावना नहीं, क्योंकि यदि दो मधुमक्खियां लड़ाईमें डंक मारनेमें बराबर निकलीं तो वह स्वभाव वश लड़ाई बन्द करदेती हैं। इस प्रकार छत्तेमें फिर शान्ति होजाती है। किन्तु यह कुछ बात नहीं है कि बूढ़ी रानीकोही छत्ता छोड़ना पड़ेगा, बहुधा नई रानियांही अलग जाकर नये छत्ते बनाती हैं। मनुष्य समाजकी भांति मधुमक्खिका समाजमें भी कभी दो रानी थोड़ी देरके लियेभी मित्र भाव से एकत्रनहीं रहसकतीं। अगरकिसी प्रकारकोई दूसरी रानी छत्तेमें आजाय तो उसीवक्त दोनों रानियोंको संतरी इस तरह घेर लेतेहैं कि उनके भागने का रास्ता नहीं रहता, इससे वह एक दूसरे की ओर बढ़तीहैं, लड़ाई ठनजाती है औरजो जीतती है वही सिंहासन पातीहै।

रानीकी मृत्यु छत्तेमें एक बड़ी शोचनीय घटना है। जब रानी मरती है तब मधुमक्खियां अपना अपना कार्य्य छोड़कर उसकी लाशको चारोंओर से घेर लेतीहैं और एक विचित्र करुणा स्वरसे विलाप करने लगती हैं। जोहो, कुछ कालतक शोक प्रकाश करके मक्खियां नई रानी की खोजमें लगती हैं। रानी बिना मधु का छत्ता कभी रह नहीं सकता, किसी किसी राजनीतिज्ञ पण्डित की भांति मधुमक्खियां प्रजा तन्त्र राज्य शासन प्रणाली की पक्ष पातिनी नहीं हैं। अगर रानीकी मृत्यु होतेही कोई नई रानी छत्ते में घुसादीजाय तो मक्खियां तत्काल उसको ऐसे घेरलेतीहैं कि उसे तुरन्तही भूखसे प्राण देदेना पड़ता है। शत्रु होनेपर भी मक्खियां कभी रानीके शरीरमें डंक नहीं मारतीं। किन्तु मधुमक्खिका की स्मरण शक्ति बहुत कम होती है रानीके मरनेके १८ घण्टे बाद अगर कोई नई रानी छत्तेमें आजायतो मक्खियां पहलेतो उसे घेर लेंगी; किन्तु चणभर बाद उसको स्वाधीनता देकर रानी बना लेंगी। अगर रानीके मरनेके २४ घण्टे पीछे कोई नई रानी छत्तेमें आवेतो मक्खियां तुरत उसको अपनी रानीबनालेंगी। रानीकी मृत्यु होनेपर बहुधा कामकाजी मक्खियां कामकाजी अण्डोंको संस्कार

वश विशेष खाद्य खिलाकर पुष्ट करती हैं अन्तमें इन्ही बच्चों में से किसी एकसे नई रानीका जन्म होता है। पहलेही कहा गयाहै कि बहुधा दो दिनकी उमर होतेही रानी विवाह करती है; मक्खी समाज की सुख समृद्धि के निमित्त यह बात विशेष प्रयोजनीय है। क्योंकि रानी विवाह करने में जितनाही विलम्ब करेगी उतनोही उसकी होनेवाली सन्तान में निखट्टू नरोंकी संख्या बढ़ेगी। जैसे वह अगर दो सप्ताह की अवस्थामें विवाह करे तो उसकी नरसन्तान और कामकाजी सन्तान की संख्या समान होगी और अगर तीन सप्ताह की अवस्था में विवाह करे तो वह केवल नर सन्तान ही प्रसव करेगी। नर मक्षिकागण समाज का कोई काम नहीं करते; इनकीसंख्याजितनीही अधिकहोगी उतनीही समाजकी हानिहोगी। रानी अधिक उमरमें विवाहकरे तो फिर वह दूसरी रानीसे कभी द्वेषनहीं करेगी। मक्षिका समाजके एकदम अयोग्य होनेपर भी कामकाजी मक्खियां उस रानीका किसीप्रकार अनादर नहीं करतीं। हिउबर साहबने इस बातको कईबार परीक्षाकरके देखा है। पहले कहा जाचुकाहै कि रानीका विवाह निर्मल मेघशून्यदिनको आकाशहीमें होता है। यदि विवाहके पहले किसी रानीका पंख छेद दिया जाय तो वह उड़नेसे लाचार होकर रोमनकैथलिक कुमारियों की भांति आजन्म कुमारी रहती है। हिउबर साहबने कुछरानियोंके सूंड़छेद कर देखाथा इससे उनका ज्ञान लोप होजाता है; किन्तु ऐसी अवस्थामें भी कामकाजी मक्खियां रानीका अनादर नहीं करतीं। रानी पांच छः वर्ष तक जीती है।

निखट्टू नर।

नर आकारमें छोटा होनेपर भी कामकाजी की अपेक्षा बहुत बड़ा और मोटा होता है। इस के पेट और छाती कत्थाई रंगके पतले रोंओंसे ढके रहते हैं। पेट लम्बाईमें रानीके पेटकी अपेक्षा बहुत छोटा और चौड़ाईमेंप्राय:

समानहोता है। पंख शरीरकी अपेक्षा बड़े और नेत्रभी बड़ेहोते हैं; नरोंके डंक नहीं होते। वह २४ दिनमें अंडे से पूर्णावस्था को प्राप्त होते हैं। हरेक छत्तेमें इनकी संख्या ६०० से लेकर २००० तक होती है। यह मधुमक्षिका समाजका कोई काम नहीं करते। इसीसे इनका नाम निखट्टू नर है। कामकाजियोंकी भांति मधु या मोम बटोरनेके निमित्त इनके कोई थैली नहीं होती। मनुष्य समाजमें भी ऐसे पुरुषोंका अभाव नहीं है। ऐसे अनेक चपरगट्टू पाये जाते हैं जो संसारके किसी काममें हाथ नहीं डालते हरामका खाना, खूब सोना और केवल पाशव इन्द्रिय सुखमें मत्त होकर जगतका दुःख बढ़ानाही उनका काम है। नर मक्ष जब उड़तेहैं तो इनके पंखसे एक प्रकारकी भिनभिनाहट निकलती है। इससे अंगरेजी भाषामें इनको *Drone* कहते हैं। यह आलसी और बड़े डरपोक होते हैं; भगवानने मानो इनको सहजमें मरजाने के लियेही, आत्मरक्षाका एक मात्र उपाय डंक भी नहीं दिया है। यह कुछ महीनों तक जीते हैं और इनकी मृत्यु प्रायः स्वाभाविक नहीं होती। जो रानीका पति होताहै वहतो अत्यन्त इन्द्रिय सुख भोग करके उसी दिन प्राण गंवा देता है। शेषमेंसे जो नईरानीके साथ अन्यत्र जा बसते हैं वह कुछ दिन जीते हैं। और जो पुराना छत्ता नहीं छोड़ते उनके ऊपर मक्षिका समाज की घृणा क्रमशः बढ़ने लगती है; अन्तमें भादों अथवा आश्विन महीनेमें एक दिन कामकाजी मक्खियां मिलकर सब निखट्टू नरोंको मारडालती हैं। किन्तु छत्तेमें अगर रानी न हो या नई राजकुमारियां युवती न हुई हों तो कामकाजी मक्खियां उनका विनाश नहीं करतीं। यों कोई नर छः महीनेसे अधिक नहीं जीनेपाता।

कामकाजी।

का· कामकाजी मक्खीका आकार नरसेभी बहुत छोटा होता है। इसका चेहरा कत्थयी रङ्गका होता है; मस्तक और छाती रानीके मस्तक और छातीके सदृशहैं, उदर गावदुम होकर नीचे एक बिन्दुमें आकर समाप्त होजाता है। इसका सर्वांशरीर रोमसे ढका रहता है; इस से इसको मधु और पराग संग्रह करनेमें बड़ा सुभीता है। इसके पंखोंसे उदर भलीभांति छिपसकता है। इसकी छाती गोल और डंकसीधा होता है। इस के एक लचकदारसुण्ड और पिछले दो पैरोंमें पराग बटोरनेकी दो थैलियां होती हैं। अण्डे से पूर्ण अवस्था प्राप्त होनेमें इसको २१दिन लगते हैं। अनेक प्राणीतत्त्ववेत्ताओंका अनुमान है कि कामकाजी मक्खियां अंडेकी अवस्थासेही बहुत छोटे घरमें रहती हैं इस कारण इनका शरीर ठीक बढ़ने नहीं पाता। मधुके छत्ते में इन्हींकी संख्या अधिक होती है, अक्सर इन मक्खियोंकी संख्या १२००० से २०००० तक हुआ करती है; किसी किसी बड़ेछत्ते में ६०००० कामकाजी मक्खियां भी देखीगई हैं। देखनेमें छोटी होनेपर भी यही समाज का प्राण हैं। मधुसंचय, शिशु प्रतिपालन, गृह निर्माण प्रभृति सब काम इन्हींके द्वारा सम्पादित होते हैं। प्राचीन कालमें प्राणी तत्व वेत्तागण कामकाजियों को नपुंसक समझतेथे किन्तु अब सिद्धान्तहुआ है कि यह अपूर्णअङ्ग वालीस्त्री जातिकी हैं; पहलेही कहागया है कि रानीकी अकालमृत्यु होनेपर कामकाजी मक्खियां कुछ कामकाजी अंडोंको तेजस्कार खाद्य विशेष द्वारा पोषण करके उन्हीं को रानी बनाती हैं। इससे स्पष्टहै कि कामकाजी मक्खियां स्त्री जातिकी हैं।

फूलका रस और मधु मिलाहुआ परागही मधुमक्खिका का प्रधान आहार है। किन्तु बारहों महीने मकरन्द वाला फूल बहुतायतसे नहीं पायाजाता; इससे मधुमक्खियां, स्वभाववश अधिक

फूलके मौसिम में दुर्दिनके लिये विशेषकर जाड़ेके लिये जहांतक मिलता है मधु संचय कर रखती हैं। ग्रीष्म ऋतुही मधु बटोरने का प्रधान समय है। मधुमक्खियां यद्यपि प्राय: सब फूलोंसे मधु लेती हैं तथापि कोई कोई फूल उनको बहुत पसन्द है; कोबी जैसे सब तरहके साग (कोबी, सरसों, मूली, शलगम इत्यादि) सफेद तीन पत्ते (white clover) थाइम (thyme) स्ट्रोबिलेन्थिस (strobi lanthes) इत्यादि के फूलही भारत वर्षकी मधु मक्खियों को अधिक पसन्द हैं; जहां यह सब फूल बहुतायत से मिलते हैं वहां मधुकर्त्तों की संख्या अधिक होती है और वहां का मधु भी बढ़िया होता है। मधुमक्खियों की मधु और फूलकी रज संग्रह की रीति बड़ी विचित्र है। जिस फूल से मधु लेना होता है, मधुमक्खियां पहले उस फूल के ऊपर अच्छी तरह जमकर बैठ जाती हैं; फिर अपने लम्बे पतले सूँड़ोंसे फूलकी केशर छेदकर मधु खेंचने लगती हैं; जबतक उसमें एक बूँद भी शहद रहता है तबतक उसे छोड़कर दूसरे फूलपर नहीं जातीं। मधु पहले जीभसेही संग्रहीत होता है। मधुमक्खियों की जीभमें केवल लचकापनही नहीं है उसमें और भी एक विशेष गुण देखाजाता है। वह अपनी अपनी इच्छानुसार अपनी अपनी जीभोंको फुलाकर थैली बनासकती हैं और उन्हीं थैलियोंमें कामकाजी मक्खियां पहले मधु बटोरती हैं। पीछे उसे निगलजाती हैं; निगलजानेपर वह मधु संचय के निमित्त निर्दिष्ट पेटकी पहली थैलीमें जाता है। यह थैली निखट्टू नर या रानीके पेटमें नहीं देखी जाती। वहां से थोड़ासा शहद शरीरपोषणके लिये पाकाशयमें जाता है; शेष भाग को कामकाजी मक्खियां छत्तेमें आकर उगलकर वहांकी खजानची कामकाजी मक्खियोंके मुँहमे छोड़ देती हैं। वह उससे अपना अपना पेट भरकर शेषभाग निर्दिष्ट खजानेमें संचय कर रखती हैं; कामकाजी मक्खियां आकर इन सब मधुपूर्ण घरके दरवाजोंको मोम से अच्छीतरह बन्द करदेती हैं। फूलसे जब पराग लेना होताहै

तब कामकाजी मक्खियां पहले अपने पैरके कड़े रोमोंद्वारा केशरसे रेणु एक जगह बटोरती हैं ; पीछे ठुड्डी और आगेके दो पैरोंद्वारा उसे छोटी छोटी गोलियोंकी तरह बनाकर पिछले पैरोंमें सटी हुई रेणुसंग्रहकी थैलीमें डालती जाती हैं। कामकाजियों की इन थैलियोंका ऊपरी भाग मुलायम और सफेद और भीतरी भाग छोटे छोटे रोमोंसे ढका रहता है ; इन रोमोंके कारण ही मक्खीके उड़ते समय थैलीसे जराभी रेणु गिरने नहीं पाती। यह ऐसी सफाई बाज होती हैं कि पराग लेते समय पेट और छाती में जो चूर्ण लगजाता है उसेभी अच्छीतरह झाड़कर डलिया वन्य रज संग्रह की थैलीमें रखलेती हैं, जराभी बरबाद नहीं होनेंदेतीं। छत्तेमें जैसे शिशु पालनके लिये तीन और मधुसञ्चयके लिये अलग अलग घर बने होते हैं वैसेही रजकी हिफाजत के लिये भी अलग घर देखाजाता है दोनों थैलियां रजसे भरजाने पर कामकाजी मक्खियां छत्तेको लौट आती हैं। वहां कामकाजियोंका एक दल उनसे पराग लेकर निर्दिष्ट स्थानमें रखदेता है। पराग विशेष कर बच्चोंके खानेमेंही खर्च होता है।

कामकाजी मक्खियोंकी मुख्य दो श्रेणी होती हैं। जो बन और बगीचेमें जाकर फूलोंसे मधु और पराग बटोरती हैं और मोम बनाकर छत्ता बनानेमें सहायता करती हैं उनको " मोम बनाने वाली " (Wax-makers) कहते हैं ; और जो खास कर बच्चोंको पालने और घर बनानेमें लगी रहती हैं उनको दाई (Nurse) कहते हैं दाइयां भी काम पड़नेपर थोड़ा बहुत मोम बनालेती हैं।

मधुका छत्ता।

मधुमक्खियोंकी छत्ता बनानेकी विचित्र बुद्धि देखनेसे दर्शक का मन हर्ष और विस्मय से भरजाता है; तुच्छ कीट जातिकी अलौकिक संस्कार प्रणाली देखकर सर्व संस्कार दाता असीम ज्ञानवान ईश्वरके चरणमें किसको भक्ति न होगी ? प्राचीन कालमें

जब मनुष्य जाति पहाड़की गुफाओं में या पत्तोंके झोपड़ों में वास करके सूर्यकी धूप, वर्षाकी मूसल धारा और जाड़ेकी दांत कटाकटसे किसीतरह प्राण बचातीथी उस समय मधुमक्षिका छत्ता बनानेमें जो कौशल दिखलाती थी आज दिन भी उसका वह कौशल वैसाही है। आज दिनभी क्या सुसभ्य युरोप क्या बियावान अफरीका क्या पूर्व गौरव गर्वित भारतके नीलगिरि अथवा हिमालय पर्वतकी ऊंची चोटी सर्वत्रही मधुमक्षिका एक ढङ्गसे काम करती है। जुदा जुदा स्थानोंमें मधुके छत्तेका आकार यद्यपि जुदा जुदा मालूम देता है किन्तु हरेक छत्ता षट्कोण होता है, और उसके बनाने की प्रणाली, मधुसञ्चय और मोम बनानेकी रीति सब जगह एक समान है। षटकोणाकार घर बनानेमें कितना सुभीता है यह विषय गणित शास्त्रकी उन्नतिके साथ२ लगभग आधी शताब्दीहुई, युरोपके पण्डितोंकी समझमें आया है; किन्तु मधुमक्षिका सैकड़ोंवर्ष पहलेसे ऐसा घर बनाती आती है। गणित विद्याविशारद पण्डितोंने यह निश्चय कियाहै कि षट्कोणाकार घर बनानेसे किसी निर्दिष्ट स्थानमें कमपरिश्रम और कम सामानमें अधिक घर तय्यार हो सकते हैं। मधुमक्खीको यह कैसे मालूम हुआ ? किसने उसे यह बात सिखाई ? यह क्या दैव घटना है या मधुमक्षिकाकी मान्-सिक उन्नतिका चरम फल है ? ईश्वरका दिया स्वाभाविक संस्कार ही इसका एक मात्र कारण है। जैसे संस्कार वश माता अपने सद्यप्रसूत बच्चोंपर स्नेह करती है जैसे अंडा देतेही चिड़िया खाना पीना छोड़कर बच्चे निकलनेतक उसपर बैठी रहती है जैसे तुरन्तका जन्माहुआ बच्चा माताकी छाती की ओर दौड़ता है, और जैसे चिड़िया आसन्न प्रसवा होनेपर घोंसला बनाने लगती है वैसेही मधुमक्षिका भी ईश्वर प्रदत्त संस्कार के वशीभूत होकर षट्कोण घर बनाया करती है।

छत्तेके भीतरी भागकी ओर दृष्टिफेरनेसे ज्ञानी अज्ञानी सबको विस्मित होनापड़ेगा। दर्शक अपने सामने एक सुन्दर क्षुद्रनगरी देखेगा

और देखेगाकि अच्छे अच्छे षट्कोण घरोंकी कतार खड़ी है, बीच बीचमें समानान्तर और सीधी सड़कें निकली हैं। मनुष्य समाजके प्रधान प्रधान नगरोंकी भांति वहां कहीं माल असबाब से भरे घरोंकी कतार कहीं साधारण प्रजाके छोटे छोटे घर और कहीं आलीशान बादशाहीमहल देखकर उसको आश्चर्य्य होगा। मधुमल या मीम छत्ता बनानेका मुख्य सामान है; विज्ञान शास्त्रके ज्ञानाभिमानी विद्वानों को आजतक मोम बनानेकी विद्या नहीं आई; वरंच मधुमक्षिका की मोम बनानेकी प्रणाली के विषयमें पण्डितोंका एक मत नहीं है। किसी कीरायमें, मधु-मक्षिका पराग खाती है और यह परागही उसके पेटमें मोम बन जाता है। हिउवर हण्टर आदि कुछ प्राणितत्व वेत्ताओंकी राय है कि मधु सेही मधुमक्षिका के पेटमें मोम तय्यार होता है; उनकी रायमें पराग केवल बच्चोंके खानेमें खर्च होता है। पूरी उमरकी मक्खियां केवल मधु पीकरही जीती हैं। जोहो, कोई बड़ाभारी सेमारभी खाली मोम से मधुमक्षिका की तरह कभी घर नहीं बना सकता। किन्तु तुच्छ मधुमक्षिका दो छोटे दांतों और होठोंकी सहायता से सहजमें छत्ता बनालेती है। बहुत पुराने जमानेसे आजतक प्राणितत्व वेत्ताओंने बराबर स्वीकार किया है कि मधुका छत्ता बनाना और मोम तय्यार करना बड़ाही विस्मयकारक और मनुष्योंकी क्षमतासे परे है।

कुछ देरतक ध्यानपूर्वक मधुकाछत्ता देखनेसे स्पष्ट विदित होगा कि मक्खियोंने कम जगहमें कम परिश्रम करके कम मोमसे अनेक घर बनाकर कमाल किया है। मोम सहजमें मिलनेकी चीज नहीं है, इसलिये थोड़ेसे मोमसे जितनेही अधिक घर बनें मक्षिका समाजके लिये उतनाही अच्छा है। संस्कारवश वह बहुत उत्तम उपाय से कामलेती हैं; महा प्रतिभाशाली ज्ञानाभिमानी मनुष्य की रायमें भी उससे बढ़कर दूसरा उपाय नहीं है। एक साथ सटेहुए अनेक घर बनाना हो तो त्रिकोण, चतुष्कोण अथवा

षट्कोण घर बनानाही उत्तम है; क्योंकि गोलाकार या और किसी आकारका घर बनानेमें अधिक स्थान व्यर्थ पड़ा रहजायगा, इससे बहुतसा मोमभी व्यर्थ खराब होगा। इसलिये उक्त तीन आकारों मेंसे किसी एक आकार का घर मधुमक्षिका को बनाना होगा। अब देखना चाहिये कि उक्त तीन प्रकार के घरोंमें किस प्रकार का घर मधुमक्षिकाके विशेष उपयोगी होसकता है और काम खर्चमें बन सकता है। मधुमक्खी की शकल लम्बाई में अधिक गोल होती है; इसलिये त्रिकोण या चारकोण घरके कोनेके निकट मक्खीके आने जानेके लिये अधिक जगह किसी काम न आवेगी। षट्कोण घर त्रिकोण और चतुष्कोण घरकी अपेक्षा लम्बाईमें अधिक गोलाकार होता है। अतएव छः कोनेका घरही मधु-मक्षिका के लिये कमखर्च वालानशीन है। कैसे आश्चर्यकी बात है! मधुमक्खियां स्वभावतः त्रिकोण या चतुष्कोण घर न बनाकर षट्कोण घरही बनाती हैं। घर एक तरफा होनेसे हरेक घरके पीछे एक दीवार दरकार होती; किन्तु सब घर छत्तेके दोनों तरफ बनते हैं इससे दोदो घर के बीच एक एक दीवार दर-कार होतीहै; यह दीवार सीधी होनेसे टूटजानेका डर रहता; इसी से मधुमक्खियां सब घरोंका पिछला भाग पिरामिडके आकार का बनाती हैं; इसमें जराभी जगह फुजूल पड़ी नहीं रहती अथच दीवार खूब मजबूत होती है। मधुमक्खियां और एक कामकरती हैं; सटे हुए दो घरोंके बीचकी दीवार बहुत पतली बनाती हैं; किन्तु ऐसा होनेसे आते जाते समय उनके मुंहकी ठेस लगनेसे घरका दरवाजा सहजमें टूट सकताहै; इसीलिये वह हरेक घरका दरवाजा भीतरकी अपेक्षा अधिक मोटा बनाती हैं इससे सब मोटा करनेमें जितना मोम लगता उससे बहुत कम लगता है और घरभी मजबूत होता है। इससे बढ़कर औरक्या आश्चर्यकी बात होसकती है! पाठक! मधुमक्षिका ने तो गणितशास्त्र नहीं पढ़ाहै तब वह क्योंकर ऐसे ज्ञानीका काम करती है?

घर बनानेके समय पहले मोम बनानेवाली कामकाजी मक्खियां कार्य्य आरम्भ करती हैं। भरपेट मधु पीकर हरेक मक्खी अपने सामनेके दो पैरोंसे अपने ठीक ऊपर बैठी हुई मक्खीके पिछले दो पैरोंको पकड़कर लम्बीही लटक जाती है। यों २४ घंटेतक चुप चाप लटकी रहती है। पीछे उनमेंसे एक उड़कर छत्तेके ऊपर जाती है और वहां लगभग एक इंच व्यासकी जगह को झाड़बुहार देती है। फिर एक, पिछले दो पैरोंसे पेटके एक खास हिस्सेसे एकतरहकी निरंग साफ चीज निकालकर अपने मुंहमें लेती है; मुंहसे उस चीजको सामनेके दोपैरोंसे पकड़कर जीभ और होंठकी सहायता से फीतेकी तरह बनाडालती है। पीछे मुंहकी रालमें उसे अच्छीतरह मिलादेनेसे असली मोम तयार होजाता है। रालसे मिलाकर इस प्रकार मोम न बनानेसे उस चीजसे कुछ काम न होता। मोम बनाकर वह साफकी हुई जगह में पोत देती है; इस तरह सब मक्खियां एकएककरके अपनाअपना मोम यथास्थान पोत देती हैं। अगर कोई भूलसे अपना मोम किसी और जगह रखदे तो दूसरी मक्खी जरूर उसे लेकर उचित स्थानपर रखदेगी। इसतरह मोम बनानेवाली मकखियां आध इञ्च लम्बी एक छठाइंच ऊंची और एक चौबीसवां इंच मोटी मोम की दीवार बनाती हैं। दीवारबनतेही दाइयां घरबनाने आती हैं। पहले एक दाई दीवारकेपास आकर उसके बीचसे मोमलेकर दोनों तरफ लगाने लगती है। कई मिनट काम करके वह चलीजाती है और दूसरी दाई उस कामपर आती है; यों बीस दाइयोंके परिश्रमके बाद वह दीवार पिरामिडकी शकलकी होजाती है। इसप्रकार जब दाइयां घरबनानेमें लगी रहती हैं तब मोम बनानेवाली मक्खियां फिर अपने काममें लगकर उस दीवारको चारोंतरफ बढ़ाती रहती हैं। जब एक तरहके घर बनजाते हैं तब दाइयां उसे अच्छी-तरह झाड़ बुहार कर साफ करदेती हैं; पीछे दूसरी तरहके घर बनाती हैं। इस प्रकार कामकाजी कार्य्यविभाग

और श्रमविभाग द्वारा थोड़े समयमें बड़े बड़े छत्ते बनाडालती हैं। १५ इंच लम्बा ७ इंच चौड़ा चार हजार घर का छत्ता बनानेमें २४ घंटेसे अधिक समय नहीं लगता।

कामकाजी नर और राजकुमारियोंके अण्डों लिये हरेक छत्तेमें तीन तरह के घर होते हैं। कामकाजी अण्डोंके घर सबसे छोटे और सबसे अधिक होते हैं। नर अण्डोंके घर उनसे बड़े और अकसर छत्तेके बीचमें या बगल बगल होते हैं। राजअंडेके संख्यानुसार उनके लिये सबसे बड़े घर तयार होते हैं। इसके सिवा मधु और पराग रखनेके लिये छत्तेमें अनेक बड़े भाण्डार घर भी होते हैं।

मक्खियां बहुधा सबतरहकी जगहोंमें छत्ते बनाती हैं। क्या हिमालय या नीलगिरि की बीहड़ ऊंची चोटी क्या भयानक शेर बाघोंके रहने योग्य बन क्या निर्जन स्थानके ऊंचे पेड़की डालियों पर क्या दरिद्रके मचानपर जमीहुई लताओंपर क्या गृहस्थकी खिड़कियोंमें और क्या तालाबमें खिलेहुए कमलकी डंटियोंपर सर्वत्र ही मधुका छत्ता दृष्टिगोचर होता है। किसी किसी किस्मकी मक्खियोंको आदमियोंकी बस्ती इतनी प्यारीहोती है कि बार बार मधु खोनेपर भी वह आदमियोंकी बस्ती नहीं छोड़तीं। और एक किस्म की मक्खियां अन्य जीवोंके न जानेयोग्य निर्जन स्थानमें ही छत्ता लगाना पसन्द करती हैं। पेड़का कोटर, टहनी और पहाड़की गुफा इन्हीं तीन जगहों को वह छत्तेकेलिये पसन्द करती हैं। पश्चिम भारतमें एक किस्मकी मक्खियां हैं जो कभी एक जगह एकसे अधिक छत्ता नहीं बनातीं। उनकी ज्यों ज्यों संख्या बढ़ती जाती है त्यों त्यों वह छत्तेका आकार बढ़ाती हैं। कुर्ग प्रदेशमें कहीं कहीं सौसे अधिक छत्ते एक पेड़पर देखेजाते हैं। गंजाममें (मन्द्राज) एक किस्मकी मक्खियां एक एक जगह सात सात छत्ते लगाती हैं इसलिये उस देशके निवासी उनको सप्तपुरी मधुमक्खी कहते हैं। ब्रह्मदेशमें टेभय नामक स्थानमें वह हरसाल नया छत्ता

लगाती हैं। वाइनद नामक स्थानमें नदीकी तरफ टेढे मेढ़े ऊंचे पहाड़की चोटी या अनेक शाखा वाले वृक्षोंकी कतार को छत्ता बनानेके लिये पसन्द करती हैं। जैसे जुदा जुदा स्थानोंमें छत्तोंकी संख्या जुदा जुदा होती है वैसेही छत्तोंका आकार और परिमाणभी जुदा जुदा स्थानोंमें जुदाजुदा होता है। वास्तवमें मधुछत्ता त्रिकोण, गोलाकार, अर्द्धगोलाकार, अण्डाकृति इत्यादि सब आकारके देखे गये हैं। गंजाममें घोंसलेकी भांति एक प्रकारका छत्ता होता है वहांके निवासी उसे "हाथी कान" कहते हैं। छत्ते बहुत बड़े भी होते हैं और बहुत छोटेभी। भारतवर्षमें जगह जगह बहुत बड़ेबड़े छत्तेभी पायेजाते हैं। दक्षिण करनूल विभागमें ४ फुट लम्बा ३ फुट चौड़ा और एकफुट गहरा एक प्रकार का छत्ता देखाजाता है। ऐसे हरेक छत्तेमें ३ मन शहद और ३० सेर मोम पायाजाता है। तिनासरममें इससे बड़ा छत्ताभी देखागया है, वह लम्बाई में ७ फुट और चौड़ाई में ६॥ फुट होता है। उसमेंसे बहुत ज्यादा मधु और मोम निकलता है।

हरेक छत्तेमें घर समानान्तर होते हैं। उनमें आनेजानेके लिये सीधे रास्तेभी होते हैं; इनरास्तोंसे होकर मक्खियां एक से दूसरे घरमें या छत्तेके बाहर जासकती हैं। यह रास्ते दोदो पांतिके बीचमें होते हैं और इतने चौड़े होते हैं कि दोमक्खियां एक वक्त एक साथ आजासकतीं हैं। यह समानान्तर सड़कें लम्बभावसे स्थित कुछ सड़कोंसे जगह जगह मिलीहोती हैं। यह सब मक्षिका महानगरीकी सदर सड़कें हैं। सब सभ्य देशोंकी सदर सड़कों की भांति इनसड़कों पर भी सदा भीड़ रहती है; किसी सड़कसे काम काजी मक्खियां घर बनाने का सामान लिये जारहीं हैं, किसीमें मधु लाने वाली मक्खियां मधुलिये मधु भाण्डार की ओर जारही हैं, किसीमें कामकाजी मक्खियों का भुण्ड बालकों का आहार लिये आरहा है। जगह जगह निखट्टू नर निकम्मे बाबुओंकीतरह धीरे धीरे टहल रहेहैं। अनेक

सभ्य देशोंके राज मार्गोंसे कई बातोंमें इस कीट जातिके राजपथ बहुत अच्छे हैं। छत्तेके सबरास्ते सीधे, चौड़े और साफ होते हैं; रास्तेके दोनो तरफ सुन्दर बनेहुए इकहरे घरोंकी पांति देखकर मनमुग्ध होजाता है। किन्तु प्रश्न यह है कि इस सभ्यताभिमानी अंगरेजोंकी राजधानी सुन्दर सुन्दर इमारतों वाली कलकत्तानगरी की कितनी सड़कें सीधी चौड़ी और दुर्गन्धि रहित हैं? ऐसी कितनी सड़कें हैं जिधरसे जाने पर घुटने तक कीचड़ न लगजाय या दुर्गन्धिसे नाक न बन्द करना पड़े? हमारा अभिप्राय कलकत्तेके उतरीय विभागसे है।

अन्यान्य कीड़ोंकी तरह मधुमक्खी की देहमें एक बूंदभी खून नहीं है। तिसपरभी वह अन्यान्य जीवोंकी भांति सांस लिये बिना पलभरभी नहीं जीसकती; अम्ल जनक वायुकी मक्खियोंकी देह रक्षाकेलियेभी अत्यन्त आवश्यकता है। कामकाजी ऐसी होशियारीसे छत्ता बनाती है कि उसमें भलीभांति हवा आजासकती है कुछ रुकावट नहीं होती। कितने आदमी हवादार रास्ता छोड़ कर घर बनाते हैं?

शिशुपालन।

बच्चेके ऊपर माताकास्नेह प्राय, सब जीवोंमेंपायाजाता है; खूंखार वाघिन भी जीजानसे असहाय शावकका पालन करती है। किन्तु मक्खियोंकी दुनियाका नियम बिलकुल अलग और बड़ाही विचित्र है। रानी अंडे देकरही निश्चन्त होजाती है; जननेके बाद उसको और कोई कष्ट भोगना नहीं पड़ता; अंडे सेना, उसपर गर्मी पहुंचाना बच्चे को खिलाना पिलाना आदि सब माता का काम है किन्तु यह सब काम कामकाजी हो बड़े यत्न से करती हैं। रानीका बच्चोंपर माताके योग्य स्नेह दिखाना तो दूर रहे, वह शत्रुकी भांति अपूर्णावयवा असहाया राजकुमारियों को मारडालने के लिये सदा चेष्टा करती है। शिशुपालनके विषयमें मक्षिका जननीके साथ किसी किसी सभ्यदेश की आलस्यप्रेमी

विलासिनीमिसोंको उपमा दीजाती है। गर्भधारणका बोझ दूसरेके सिर नहीं पटका जासकता इसीसे वह गर्भ यंत्रणा सहती हैं। किन्तु सन्तान जन्मतेही उसकोकिसी नीच जातिकी दूधपिलाई दाई के हवाले करके निश्चिन्त होजाती हैं। सुतरां सन्तान दाईका दूध पीकर उसीका चाल चलन सीखकर नीचता ग्रहण करती है। स्वाभाविक नियमके विरुद्धाचरण करनेसे उसका फल भोगनाही पड़ेगा। ईश्वरने मनुष्यकी ऐसी सृष्टि की है कि माताके दूधसे बढ़कर शिशुके लिये और कोई खाने पीनेकी चीज उपयोगी और पुष्ट हो नहीं सकती इसलिये माताका दूध छोड़कर शिशुको दूसरे का दूध पिलाना बहुत अनुचित है।

किन्तु जगत् पिताने मक्खीरानीको शिशुके लालन पालन का भार नहीं सौंपा है। रानी गर्भावस्थामें अधिक दूर तक नहीं उड़-सकती और कभी कभी तो बिल्कुल ही नहीं उड़ सकती, सो शिशु-पालन तो दूर रहा, रानीको अक्सर अपनाही आहार जुटाने की सामार्थ्य नहीं रहती, इसीसे मालूमहोता है कि दूरदर्शी जगदी-श्वरने रानी और बच्चेके आहारादि जुटानेका भार राजभक्त परिश्रमी कामकाजियों के हाथ सौंपा है। निराश्रय बच्चे यद्यपि गर्भधारिणी के स्नेहसे वञ्चित होते हैं तथापि इससे उनका कुछ नुकसान नहीं होता; सैकड़ों कामकाजी मक्खियां दाई बनकर माताकी जगह उनका लालन पालन करती हैं, उनकी सब जरूरत बिना विलम्ब पूरी करती हैं और रक्षक बनकर यथाशक्ति उनको गर्भधारिणी के निष्ठुर आक्रमणसे भी बचाती हैं। निःस्वार्थ परो-पकार का इससे बढ़कर सुन्दर उदाहरण और क्या होसकता है।

दाइयां बच्चोंको जिसप्रकार अधिक गर्मी पहुंचाती हैं वह विशेष आश्चर्य जनक है। सब लोग जानते हैं कि परिन्दे खाना सोना भूलकर बराबर अण्डोंके ऊपर बैठेरहते हैं और उनको अधिक गर्म रखते हैं। किन्तु मक्खियोंके अण्डोंके ऊपर इस

प्रकार बैठे रहनेसे उनको विशेष गर्मी नहीं पहुँचती ! दाइयां स्वाभाविक संस्कार वश अधिक गर्मी पहुँचानेकेलिये एक दूसरा मगर सुन्दर उपाय अवलम्बन करती हैं। सांसलेने से वायुका अम्लजनक वाष्प (आक्सिजन) शरीरके अंगार और उद्जनकवाष्पसे मिलजाता है अंगारके साथ अम्लजनक वाष्प मिलनेसे जो गर्मी उत्पन्न होती है, साधारण पत्थरके कोयलेकी आगकी तरफ दृष्टि करनेसे स्पष्ट मालूम होगी। अतएव सांसलेने और छोड़ने से शरीरमें गर्मीका संचार होता है इसमें कुछ सन्देह नहीं; और इसी कारण सांसलेने की क्रिया जितनी जल्दी जल्दी होगी शरीरमें उतनीही अधिक गर्मी बढ़ने की सम्भावना है। जब मक्खियोंके बच्चे बढ़नेकी हालतमें रहते हैं तब एक एक दाई एक एक के घरके ऊपर बराबर बैठ कर खूब जोरसे जल्दी जल्दी सांसलेती है। अपने शरीरमें गर्मी बढ़ाकर उससे बच्चे के शरीरकी गर्मी बढ़ानाही उसका उद्देश्य है। इसप्रकार लगातार आठ या दस घण्टेतक परिश्रम करनेसे जब दाईका शरीर खूब गर्म और पसीने से भीग जाता है तब वह शान्त होकर नियमित चालसे सांस लेने लगती है। अन्तमें जब वह थक जाती है तो एक दूसरी दाई आकर उसकी जगह पर बैठती है और वह छुट्टी पाती है। प्राणितत्त्व वित्ता निउपोर्ट साहबने इस बातको अच्छी तरह परीक्षाकीथी कि दाइयां इसप्रकार कोशबद्ध बच्चेके शरीरमें कहां तक गर्मी पहुंचा सकती हैं। बच्चेके जिन घरोंमें दाई मक्खियां पूर्व्वोक्त प्रकारसे गर्मी नहींपहुँचाती थीं उन्होंने पहले उन्हीं घरोंमें तापमान-यंत्र लगाकर देखाकि पारा ८०·२ डिग्रीपर है। पीछे जिन बच्चोंके घरोंमें दाइयां गर्मी पैदा करती थीं उनमें से एकमें थर्मामिटर लगाया। कुछ देर बाद पारा असली जगह से धीरे धीरे ऊपर को उठने लगा और अन्तमें ९२·५ डिगरीपर आकर ठहर गया। इससे उनको स्पष्ट विदित हुआ कि दाई मक्खीने अपने सांस की गति बढ़ाकर बच्चेके शरीरमें १२·३ अंशतक गर्मी बढ़ादीथी।

छत्ते में गर्मी बढ़कर वायुकी चाल रुकजानेसे मधुमक्खियां कभी कभी कुछदेरकेलिये वहांसे अलग होजाती हैं। किन्तु वहुधा वह अपना अपना काम छोड़कर अन्यत्र जानेके बदले वायु सञ्चालन करनेके लिये एक अद्भुत उपाय करती हैं। ठंढ लाने और वायु राशिको चलानेके लिये कुछ मक्खियां लगातार पंख हिलाती हैं; जब वह हिलाते हिलाते थकजाती हैं तो उनकी जगह एक दूसरा दल आजाता है। इस तरह वह पंख हिलाकर छत्ते में हवा को चलायमान करदेती हैं। हिउवरसाहबने छत्ते में कृत्रिम उपाय से गर्मी पहुँचाकर देखाहै कि छत्तेमें जितनीही ज्यादा गर्मी बढ़ती है उतनी ही पंख हिलाने वाली मक्खियों की संख्या अधिक होने लगती है और अन्तमें छत्तेकी सब मक्खियां गर्मी घटानेकेलिये खूब जोरसे पंख हिला हिला कर हवाको चलाती हैं।

मक्खियोंकी इन्द्रियां।

मधुमक्खियोंकी दृष्टि बड़ी तेज होती है। मधुके लिये छत्तेसे बहुत दूर निकल जानेपर भी उनको वहांसे छत्ता दिखाई देता है और बिना विलम्ब सीधे रास्ते छत्तेको वह लौट आती हैं; कभी रास्ता भूलकर विहङ्गम नहीं बनतीं। कोई कोई कहतेहैं कि उनको पासकी चोजें अच्छी तरह नही सूझतीं। इसीलिये वह जब छत्तेके पास रहती हैं तब उनको छत्तेका दरवाजा सहजमें नहीं मिलता। किन्तु उड़कर कुछदूर जानेसे वह उन्हें साफ दिखाई देनेलगता है।

इनकी स्पर्श शक्तिभी नजरकी भांति खूब तेज है। छत्ते के भीतर अन्धेरी जगह में केवल स्पर्श शक्तिके सहारेही यह घर बनाना, मधु सञ्चय, रानीकी सेवा जुदा जुदा उमरके बच्चोंको जुदा जुदा ढङ्गका खानादेना इत्यादिकाम भलीभांति करती हैं। इनकी सूँघनेकी शक्ति भी कम नहीं है। अगर छत्तेसे बहुत दूर भी बढ़िया मधुवाले फूल खिले हों तो वह अपनी तेज नाकसे उसे जानजाती हैं और बिना विलम्ब उसको लूट लाती हैं। मक्खियां ज्ञानी मनुष्यकी भांति मनोहर रूप या सुन्दर चेहरा देखकर मोहित नहीं होतीं;

मकरन्द रूपीसङ्गणही उनके उन्नत हृदय को आकर्षित करता है। फूल देखने में चाहे जितना मनोहर क्यों न हो उत्तम मधुयुक्त न होनेसे मधुमक्षिका उसकी ओर देखेगी भी नहीं। और मधु अगर बहुत खराब और दुर्गम स्थानमें रखाहो तो भी अध्यवसायी मक्खियां उसे लेआनेकी जी जानसे चेष्टा करेंगी। एकबार विख्यात प्राणितत्ववित् हिउवर साहबने एक बाक्समें थोड़ा शहद रखकर उसमें दो चार छेदकर दिये और छेदोंको कागज के किवाड़से इसतरह बन्दकिया कि जिसमें मक्खियां उनसबको सहजमें हटा-कर भीतर घुससकें। उन्होंने बाक्सको एक छत्तेसे २०० गजके फासिलेपर रखा। आधे घण्टेमें मधुमक्खियोंने उसे देखलिया और उनका एकझुण्ड वहां पहुंचकर मानो भीतर जानेका रास्ता पानेकेलिये उसके चारोंओर फिरनेलगा! अन्तमें किवाड़ मिलगये और उन्हें अलग करके वह आनन्दसे मधु चटकर गया। संूघनेकी शक्ति अधिक तेज न होनेसे मक्खियां दोसी गजके फासिलेपर रखे हुए किवाड़ बन्द सन्दूकके भीतर के मधुका गन्ध कैसे पासकतीं? इनकी जीभ भी बड़ीतेज शक्ति रखती है वह चुन चुनकर सबसे बढ़िया फूलोंकाही मधु लेती है। लीनियस बनेट आदि कई विद्वानोंकी रायमें मधुमक्षिका के कान नहीं होते। किन्तु डाक्टर बेवन (Bevan) और डाक्टर लार्डनरके (Lardner) मतसे और और जीवोंकी भांति इनकेभी कान होते हैं। लार्डनर साहबका कथन है कि छत्तेके किसी तरफ किसी तरहका शब्द होनेसे सखियों सहित रानी तुरन्त वहां पहुंचती है और शब्द होनेका कारण ढूंढ़-ती है। किसी किसी की राय है कि मक्खी के तीक्ष्ण स्मरण शक्तिभी है।

मक्खियोंकी सफाई।

पाठकगण शायद कामकाजियोंके श्रमविभाग को कार्य्य तत्प-रता और परिश्रम शीलता देखकर मोहित और विस्मित हुए हैं।

वास्तवमें मधुमक्षिकाका इतिहास बड़ा कौतूहल जनक और उप-देश दायक है। जब कामकाजी मकरन्द लेकर छत्तेकी तरफ आती हैं उस समय अगर कोई भूखी मक्खी उनके पास आजायतो वह सादर इसको मधु देकर अतिथिसत्कार करती हैं। उनको कभी कभी जल पीतेभी देखा गया है। जब वह छत्तेमें मधु रखनेमें व्यस्त रहती हैं तब प्रतिदिन सन्ध्याके तीन या चार बजे क्रमसे दो दो चार चार मक्खियां आहार ढूंढ़ने के लिये बाहर निकलती हैं और सन्ध्या होनेसे पहलेहो सब लौट आती हैं, किसी किसी फूलका मधु पीकर मधु मक्खियां कभी कभी मतवाली होजाती हैं। एक साहबने अमेरिकाके एक वैज्ञानिक पत्रमें लिखा था कि हमारे घरमें कई एक मिल्कवीड (Milk Weed) वृक्ष हैं; उन के फूलों पर बहुधा मधु मक्खियां बैठा करती हैं। जरा ध्यानसे देखनेपर कुछ मक्खियां चञ्चल और कुछ जड़की तरह निश्चल मालूम होती हैं। परन्तु जो मक्खी जितनीहों ज्यादादेर उस फूलका रस पीती है उसकी निश्चलता उतनीही बढ़ती जाती है। उक्त पत्रके सम्पादकने इसमतका समर्थन किया था इससे स्पष्ट विदित होता है कि मनुष्य समाजकी भांति मक्षिका समाजमें भी मतवालोंका अभाव नहीं है। इन मतवाली मक्खियोंसे उसका कितना अनिष्ट होता है इसका अभी तक पता नहीं लगा है।

मक्खियां सफाईके लिये बहुत मशहूर हैं उनके घर द्वार और रास्तोंमें जराभी धूल नहीं; शरीरमें कुछ मैल नहीं होता। बाजे कहते हैं कि हिन्दुस्तानी आदमियोंका शरीर जैसा साफ होता है वैसा घर नहीं और अंगरेजोंका घर बहुत साफ और सजा धजा होने परभी शरीर वैसा साफ नहीं होता। यह बात एकदम सच न होने परभी बिल्कुल झूठ नहीं है। जोहो, मक्खियोंका शरीर और घर दोनों साफ होते हैं। कामकाजी किसी तरहका जंजाल या कूड़ा करकट क्षणभरभी घरके पास नहीं रहने देतीं, देखतेही उसे दूर फेंक आती हैं। मल मूत्रादि त्याग करना हुआतो वह

छत्तेसे बाहर चली जाती हैं। जब कोई मक्खी पूरी अवस्थाको पाकर अन्डे से बाहर निकलती है तब उसके पास तीन कामकाजी आती हैं। पहली उसको पकड़कर छत्ते के बाहर लेजाती है, दूसरी उसके शरीरसे चमड़ेकी झिल्ली छुड़ादेती है और तीसरी उसका शरीर झाड़पोंछकर साफ कर देती है। अगर कोई शत्रु छत्ते में चला आवेतो मक्खियां डंक मारकर उसीदम उसकी जानले लेती हैं और उसकी लाश कहीं दूर फेंक आती हैं। अगर लाश भारी होनेके कारण उनसे न उठसके तो कामकाजी एक विचत्र उपाय काममें लाती हैं। शारीरिक विद्याके पण्डितोंका कथन है कि अगर कोई बाहिरी पदार्थ किसी कारणसे शरीरमें घुसजाय और किसी प्रकार बाहर न निकले तो शरीरके विचित्र नियमसे वह पदार्थ स्थान भेद से अस्थि उपास्थि या मांसके लोंदेसे ढक जाता है, ऐसा होनेसे उससे उसके आसपासके शारीरिक यंत्रादिको कुछ नुकसान नहीं पहुंचता। स्वभाव पण्डित मक्खियां यही उपाय करती हैं। अगर कोई घोंघा छत्तेमें घुसजाय तो कई मक्खियां मिलकर उसे मारडालती हैं और उसकी देह उठानेमें असमर्थ होकर उसमें अच्छीतरह पेड़का दूध लगादेती हैं। इसतरह मक्षिका समाज सड़े घोंघोंकी विषैली बदबू से रक्षा पाती है। किन्तु अगर घोंघा प्राण भयसे अपना शरीर अपने खोखलेमें छिपाले तो मक्खियां उसका मुंह वृक्षके रससे बन्द करदेती हैं इससे वह उसी में दम घुटकर मरजाता है! मधुमक्खियां बदबूसे बचनेके लिये कितना उपाय करती हैं! मक्षिका समाजमें मोटी तनखाह का कोई हेलथ अफसर नहीं है और म्यूनिसिपलिटी है तिसपर भी छत्ते की सफाई और पवित्रता देखकर दांतोंमें उंगली काटना पड़ती है।

क्षुद्र मधुमक्षिकाके परिश्रम की बात सुनकर मोटी तोन्द वाले विषयी और आलसी मनुष्योंका सिर लज्जासे नीचा होजाना चाहिये। रीमर साहब कहते हैं कि मधु बटोरनेवाली मक्खियां उसकी

खोजमें कमसे कम दस बार छत्ते से निकलती हैं अगर वह औसत से हरबार पौन मीलतक जाती हैं तो हरेक मक्खी दसबार जाने आनेमें कमसे कम १५ मीलका रास्ता तय करती है। इन कीड़ों की बात तो अलग रही बहुतसे मनुष्योंकेलिये यह कम परिश्रम नहीं है।

मक्खियां नम्रस्वभाव होती हैं अधिक उत्तेजित हुए बिना किसीपर हमला नहीं करतीं। विशेषकर जब इनकी औलाद बढ़ती है और वह दल बांधने लगती हैं तब सब बड़ी शान्तिके साथ रहती हैं। भारतवर्षीय मक्खियोंके सुन्दर स्वभाव की प्रशंसा अनेक अङ्गरेजोंने भी की है। रिटासाहबने शिलाङ्गमें हिन्दुस्थानी मक्खियां पालीथीं और हण्टर सहबने पहाड़ी प्रदेशमें मक्षिकालय स्थापन कियाथा। इन दोनो साहबोंने हिन्दुस्थानी मधुमक्खियोंकी बड़ी प्रशंसा की है।

कोई कोई वस्तु मधुमक्खियों को बहुत पसन्द है और किसी किसीसे इनको बड़ी घृणा है। नीले रङ्गकी चीज इनको बहुत पसन्द है। वह किसी किसी मनुष्यको तो छत्ते के पास नहीं फटकने देतीं और किसी किसीको मधु भण्डार लूट लेजानेपर भी कुछ नहीं बोलतीं। कोई कोई कहते हैं कि किसी किसी मनुष्यके शरीरसे ऐसी बू निकलती है कि वह उसे सह नहीं सकतीं। इसी लिये उन्हीं मनुष्यों पर उनका विशेष कोप देखाजाता है। डाक्टर बेवन और फिबूरियर साहब कहते हैं कि लाल और काले बाल वाले आदमियों से मक्खियोंको बहुतद्वेष है। डाक्टर बेवनने देखा है दो भाइयोंमें एकको मक्खियां खुशीसे अपने पास आनेदेती थीं किन्तु दूसरेको देखतेही आक्रमण करतीं। हण्टर साहबके बरामदेमें आठ मक्षिकालय थे हजारों मक्खियां वहां प्रति दिन आती जातीं उधरसे अनेक आदमी आते जाते पर सबको छोड़कर मधुमक्खियां केवल भाड़ूदारको ही डंक मारतीं। इससे अनुमान होता है कि वह बदबूसे बड़ी नाराज हैं। हिउबर साहबने परीक्षा

करके देखा है कि मधुमक्खियां अपने विषके गन्धसे अत्यन्त उत्तेजित होजाती हैं। जराभी विषकी गन्ध पातेही हजारों कामकाजी मस्त होकर बाहर निकलती, हैं सामने जिसको देखती हैं उसीको डंकमारती हैं और छत्ते भरमें अशान्ति फैलजाती है।

विश्राम लेनेका नियम।

जीव जगतमें परिश्रमके बीचबीच में विश्राम लेना आवश्यक है। कोई जीव लगातार परिश्रम नहीं करसकता। मधुमक्खियां अन्यान्य जीवोंकी भांति समय समय सोती हैं। कामकाजी लगातार परिश्रमसे थक जानेपर घरमें जाकर पन्द्रह या बीस मिनट आराम करती है ऐसी निश्चल बनकर बैठजाती है कि उसके अङ्ग प्रत्यङ्ग से मालूम नहीं होता वह जीती है कि मरी। केवल सांस लेनेसे शरीरकी दोनों बगल कुछ सिकुड़ते और उभरते देखीजाती हैं; दो पहरही इनके विश्रामका समय है। निखट्टू नर अठारह अठारह और कभी कभी बीस बीस घण्टेतक चैनसे सोते हैं। कामकाजियों की तरह वह घरके भीतर नहीं जाते। छत्तेके बाहर दीवारोंपर ही पड़े रहते हैं। रानी कभी कभी नर अंडोंके घरमें मस्तक और छाती रखकर देरतक सोती है उस समय कुछ कामकाजी मक्खियां प्रहरी और सहेली बनकर उसके चारोंओर बैठी रहती हैं और अपने अगले दोनों पैरोंसे रानीके पेटके खुलेहुए अंशको धीरे धीरे सहलाया करती हैं। रानीको सुलानेकेलिये निःस्वार्थ कामकाजियों की यह सेवा देखकर किसको आनन्द नहीं होगा?

सुसभ्य मनुष्य वायुमान यंत्र के (बारामिटर) पारेका चढ़ाव उतराव देखकर अगले दिन के हवा पानीके विषयकी कुछ बात जानलेते हैं। किन्तु मधुमक्खियां संस्कार वश बिना किसी यंत्रके आगामि दिनकी अवस्था अच्छीतरह जानजाती हैं। अगले दिन आंधी पानी होनेकी सम्भावना हुई तो वह मधुलेनेके लिये बहुत

दूर नहीं जातीं; छत्तेके पासके पेड़ोंसेही रस लेती हैं। डाक्टर इवान्स कहते हैं कि एकदिन आकाश एकदम स्वच्छ और मेघशून्य था मगर एकभी मधुमक्खी मधुके लिये बाहर नहीं निकली। इससे उनके मनमें विस्मय और सन्देह हुआ वह एक टक आकाश की ओर देखते रहे। कुछ देरमें बादलोंके छोटे छोटे टुकड़े एक तरफसे आकर आकाशमें छागये। यह देखकर साहब बहादुरको बड़ा आश्चर्य हुआ। तबसे वह मधुमक्षिका के इस संस्कार को बराबर सच मानतेथे।

मनुष्योंकी भांति मक्खियां भी जरूरत पड़नेपर उपनिवेश (Coloney) बसाती हैं। पहले कहागया है कि छत्तेमें एकसे अधिक रानी होनेपर मक्षिका समाज घड़ी भरके लिये भी शान्ति पूर्वक नहीं रहसकती। कभी कभी दोनों रानियोंमें तुमुल संग्राम उपस्थित होता है, कभी कभी कुछ मक्खियां पुरानी रानी को साथले अन्यत्र जाकर छत्ते लगाती हैं। बहुधा पुरानी रानीकी बसाई हुई नई बस्तीसे नई रानीकी नई बस्ती पुराने छत्ते से अधिक फासिलेपर होती है, कारण यह कि कुमारी रानीकी तरह पुरानी रानी बहुत दूरतक नहीं उड़सकती। इन छत्तोंकी संख्या ऋतु और फूलदार पेड़ोंकी संख्यानुसार न्यूनाधिक हुआ करती है। नजदीक उपनिवेश बनाने योग्य मन मुआफिक जगह न मिली तो मक्खियां ऊंची पर्वत श्रेणी और बड़ी बड़ी नदियोंको लांघकर सैकड़ों मील दूरतक चलीजाती हैं। दक्षिणमें यह कभी कभी नीलगिरि की आकाश चूमनेवाली चोटी लांघकर लगातार आठ दस दिन तक उड़ती रहती हैं। कई किस्मकी मधुमक्खियां किसी किसी पक्षीकी भांति बारहों महीने एक जगह नहीं रहतीं। भारत वर्षकी एक किस्मकी मधुमक्खियां ऐसीही हैं। यह ग्रीष्म कालमें समतल भूमि छोड़कर अन्यत्र चलीजाती हैं। और अग्र-हायण महीनेमें वापस आती हैं। इसके सिवा मकरन्द पूर्ण कुसुम का अभाव होने से, मधुका छत्ता लुटजानेसे मधु पीकर 'भण्डार

खाली होजानेसे, अनेक शत्रुओं के आगमन से या अपनी संख्या अधिक बढ़ जानेसे मक्खियां स्थान बदल लेती हैं।

मक्खीका डंक।

मधुमक्खीके पास एकमात्र अस्त्र है। असहाय बच्चों और बड़े परिश्रमसे संग्रह किये हुए अमूल्य मधुकी रक्षाके लिये प्रकृति देवीसे उसको एक भीषण अस्त्र मिला है। इसी महा अस्त्र से वह अनेक शत्रुओंसे घिरी रहनेपर भी निरापद होकर जीवन बिताती है। अन्य शत्रुओं बात दूर रहे, मनुष्यकोभी एकाएक अपरिचित छत्तेके पास जानेका साहस नहीं होता। मधुमक्खियोंके इस महास्त्र को डंक कहते हैं। साधारण लोगोंका विश्वास है कि मक्खी कुत्ते बिल्ली आदि जानवरों की तरह शत्रुको दांतसे काटती हैं; किन्तु यह सरासर भूल है। यह किसी को काटती नहीं बहुत तंग होने पर शत्रुके शरीरमें डंक मारती है। डंक उसके पेटके पिछले हिस्सेके साथ होता है। यह परस्पर सटे हुए बालोंसे भी पतली दो सुइयां हैं। दोनों सुइयों के ऊपर छोटे छोटे कांटे होते हैं। कांटे इतने छोटे और पतले होते हैं कि खुर्दबीन के बिना मालूम नहीं होते। और इन सब कांटोंका पिछला भाग मक्खीके शरीरकी तरफको मुड़ा होता है। डंक एक मजबूत कोषके भीतर होता है। डंकसे सटा हुआ विषका थैला है इस विषके थैलेके कारणही डंककी चोट विशेष कष्ट देती है। विष न होता तो केवल डंक किसी कामका न होता। आधुनिक वैज्ञानिकों ने स्थिर किया है कि सर्प खराब हवा खाता है और उसीसे जगतके हिताहित का कारण सांपका महा विष उत्पन्न होता है। किन्तु मधु मक्षिका कोई विषैली वस्तु नहीं खाती मधुही उसका मुख्य आहार है; इससे मधुसे विषका उपजना आश्चर्य मालूम होता है किन्तु मक्खीके अङ्गमें विष होता जरूर है। इसका विष इतना तेज है कि एक बूंद कबूतर आदि जानवरों

को खिला देनेसे थोड़ी देरमें उनकी मृत्यु होजाती है। मधु मक्खी के डंक मारतेही उसके विष कोषसे एक बूंद विष तुरन्त निकल कर घाव पर गिरता है। घावकी जगह देखतेही देखते सूज आती है और घायल आदमी तकलीफसे छटपटाने लगता है।

मधु मक्खियोंने सन्तान पालन और मधु भाण्डार की रक्षाके लिये ही यह महास्त्र पाया है, अकारण जीवोंको कष्ट देनेके लिये उनको यह अस्त्र नहीं दिया गया है। इसीलिये वह बहुत तंग आये बिना किसीको डंक नहीं मारतीं। पहलेही कहा गया है कि डंकमें बहुत पतले २ पेटकी ओर मुड़े हुए कुछ कांटे होते हैं। यह पतले कांटे कभी कभी मधु मक्खीके ही सत्यानाशका कारण होजाते हैं क्योंकि जिसको वह डंक मारती है उसके शरीरसे धीरे धीरे डंक न निकालनेसे वह कांटे मांसमें घुस जाते हैं और डंक टूट जाता है। डंक टूट जानेसे उसकी उसी वक्त मृत्यु होजाती है। शायद इसीसे वह किसी पर एकाएक डंक नहीं चलाती। जब वह कुसुम काननमें इस फूलसे उस फूल पर जाकर मकरन्द और पराग बटोरती है तब अगर कोई उसको छेड़ेभी तो भी वह प्राय: उसको डंक मारकर बदला लेना नहीं चाहती। किन्तु छत्ते के निकट कोई जान कर आजाय तब निस्तार नहीं; असंख्य मधु मक्खियां उसको डंक मारकर बहुत जल्द यमलोकको भेज देती हैं।

पहले कहा गया है कि निखट्टूनर के डंक नहीं होता; उसको डंक दरकार भी नहीं क्यों कि वह मधु भाण्डारकी रक्षा आदि कामोंमें कभी हाथ नहीं डालता। कामकाजियोंके डंक सीधे होते है; किन्तु रानीका डंक टेढ़ा और पैना होता है। कामकाजियोंके जीवनकी अपेक्षा रानीका जीवन जैसे अधिक मूल्यवान है वैसेही डंकमारनेमें कामकाजियोंकी अपेक्षा वह अधिक सावधानभी होती है। रानी अपने प्रति द्वन्दीके सिवा और किसी को शायदही डंकमारती है। मधुमक्षिका अगर शरीरके किसी कोमल अंशमें

डंकमारे तो वह अंग बहुत सूज जाता है और दर्दभी कुछ अधिक होता है। यह देखागया है कि पहलीबार मधुमक्षिका के डंक मारने से जितना दर्द उठता है कई बार डंक लगनेसे उतना दर्द नहीं मालूम होता। ओहो, असावधानी या शहदके लोभसे छत्ते पर अचानक गिरपड़नेसे अथवा उसको जबरदस्ती तोड़नेकी चेष्टा करनेसे अक्सर विपदमें फसना पड़ता है। बहुत लोग दिनको छत्ता तोड़ने जाते हैं और मक्खियां उनपर हमलाकर प्राण लेलेती हैं। अनेक समय असावधानी में चक्रके ऊपर गिरकर अनेक बैल, गदहे और घोड़ोंने प्राण खोये हैं। किन्तु सावधानी से धीरे धीरे हाथ चलाकर धीरे धीरे काम करनेसे विपदकी उतनी आशङ्का नहीं है। थार्कीसाहब कहते हैं कि—एक बार एक दल मधुमक्खियों को किसी वृक्षकी डालीसे मधुमक्षिका-घरमें लेजानेके समय मेरी सहायताके लिये एक दासी साथ आईथी। उसने डरकेमारे सिर और कन्धा एक कपड़ेसे ढकलिया था। मक्खियों को पेड़की डालीसे अलग करते समय अचांचक रानी उस डरीहुई दासीके सिरपर बैठ गई और फिर सब मक्खियों ने धीरे धीरे कपड़ेके नीचे जाकर उस के सिर, मुँह और छाती को घेरलिया। यों मक्खियों से घिर कर दासी प्राण लेकर भागने को हुई; मैंने उसको खड़े रहने का हुक्मदिया और तुरन्त रानीको पहचानकर पकड़लिया और मधुमक्षिका गृहमें लेजाकर रखदिया; दो तीन मिनटमें ही सब मक्खियां उसके शरीरसे उड़कर रानीके निकट चलीगईं। दासीकी जान बची, उसके शरीरमें एकभी मक्खीने डंक नहींमारा। किन्तु यदि वह चुपचाप खड़ी न रहकर भयसे हाथ पैर फेंकती इधर उधर दौड़ती तो उसकी जान कभी न बचती।

टालबेट साहबने लिखाहै कि १८२० ईस्वीमें कनाडा प्रदेशमें एक आदमीके बगीचेमें २० मधुमक्षिका गृह रखेगये थे। गर्मीके मोसिममें एकदिन किसी पड़ोसीका घोड़ा पासके मैदानमें चरता था। चरते चरते वह मक्खियोंके एक घरके पास चलागया और

थोड़ी देर में चेहलकदमी करते करते उसने घर उलटदिया। घर उलटना था कि झुण्डकी झुण्ड मक्खियां निकल कर घोड़ेके पैरमें डंक मारने लगीं। घोड़ेने यन्त्रणासे बेचैन होकर भागते भागते मक्खियोंका और एक घर उलटदिया। उसमेंसेभी हजारों मक्खियां निकलकर उसको डंक मारने लगीं। घोड़ा जमीनपर गिरकर छटपटाने लगा और पांच मिनटके भीतर मरगया।

स्काटलैण्ड निवासी मङ्गोपार्क साहब अफरीका की सैरमें कई बार मधुमक्खियोंसे सतायेगये थे। एकवार उनके कुछ नौकर शहद ढूंढ़ते ढूंढ़ते एक बड़े मधुके छत्तेके पास चलेगये। उनको मालूम नथा कि छत्ता तोड़कर शहद निकालनेमें कितना खतरा है। वह जबरदस्ती मधुलेनेको मुस्तैद हुए। बस हजारों कामकाजी मक्खियां क्रोध से भिचभिचाकर उनपर टूटपड़ीं। पासही कई लदुए गदहे और घोड़े चरतेथे, मधुमक्खियोंने उनपर भी हमला किया। आदमी, घोड़े और गदहे बिकल होकर इधर उधर भागने लगे। किन्तु सकुशल कोई न गया। सब थोड़े बहुत घायल हुए। शामको मक्खियां जब कुछ शान्त हुईं तब साहबके नौकर घोड़े और गदहोंको ढूंढ़ने लगे। बहुत खोज तालाश परभी तीन गदहोंका कुछ पता न मिला इसके सिवा दो तीन दिनमें तीन गदहों और एक घोड़ेने तड़प तड़प कर प्राण देदिये। इस प्रकार कभी कभी मनुष्य और इतर प्राणियां बेखबरी या बेवकूफीके कारण बड़ी आफतमें फंस जाती हैं।

मधुमक्षिकाके डंक का दर्द और सूजन मिटानेके लिये तरह तरह की दवाइयां की जाती हैं और सब दवाइयों से थोड़ा बहुत आराम भी होता है। अमोनिया, गोबर या तमाखू घावपर लगा देने से अक्सर दर्द मिटजाता है। खसिया पर्वत के निवासी घाव पर पान लगाया करते हैं। दक्षिणियों की रायमें पिसेहुए इमलीके पत्तोंको चौगुने जलमें गर्मकर उसी जलसे स्नान करलेनेसे दर्द और सूजन मिटजाती है। होमियोपैथी मतसे बबूलकी छालका रस

डंककी चोटकी एक औषधि है; कोई कोई वैद्य कहते हैं कि सेंधा नमक शहदमें मिलाकर लगानेसे फायदा होता है। अमेरिका वालोंके मतमें दर्दका ख्याल न करके एकदम भूलजाना दर्द मिटानेकी अक्सीर दवा है।

सिविल एण्ड मिलीटरीगजटमें एक साहबने मधुमक्खीके विषसे अपने एक टट्टूके मरनेकी बात इस प्रकार लिखीथी-एकबार मैं सफरमें अपने निवास स्थानसे कई मील दूर चलगया वहां कई वृक्षोंके निचे एक तम्बू डाला। अचानक एकदिन मधुमक्खियों के एक झुण्डने मेरे तम्बूपर हमला किया। शायद आसपास के वृक्षोंपर दो एक मधुके छत्ते थे और वहींसे मक्खियां आई थीं। तम्बूमें दोघोड़ों और एक टट्टूपर उन्होंने भयानक रूपसे आक्रमण किया, टांगनके पेट पीठ और शायद जीभमेंभी डंक माराथा। एक घोड़ेके पिछले दो पैर इतने फूलगये कि उनको जरा हिलानेकी शक्ति न थी। मैं उनको छः मील दूर अपने घर लेगया वहां पहुंचतेही मैंने टांगनको करीब आधा सेर गरम शराब पिलाई। इससे उसको कुछ आराम मिला। किन्तु उसी दिन २ बजे उसको ज्वर आया; तब अदरकके रसमें गर्म शराब (बीयर) मिला-कर पिलाई और अच्छी तरह विछौना करके उसपर उसको सुलाया। उसकी हालत धीरे धीरे बिगड़ने लगी और दर्द बढ़ने लगा। डंक मारनेके वादसे उसने कुछ नखाया। दूसरे दिन सन्ध्या के ६ बजे कुछदेर तड़पकर मरगया। शेष दो घोड़े अभीतक जीते हैं तथापि वह चार पांच दिन तक अच्छे नहीं हुए थे। अबभी वह काम करने योग्य नहीं हुए हैं। साहबने अपने टांगनकी मृत्युपर बड़ा विस्मय प्रगट किया था किन्तु बहुधा ऐसी घटना हुआ करती है; उदाहरण केलिये हम पहले मङ्गोपार्क साहब की बात लिख आये हैं।

मधुमक्खियोंकी लड़ाई।

दो या अधिक छत्ते पास पास होनेसे उनके निवासियोंमें कभी कभीतो बड़ी दोस्ती और कभी कभी विषम शत्रुता देखीजाती है। प्राय: बलवान मक्खियोंका दल बलहीन दल को हराकर उसका छत्ता लूट लेता है। इस विषयमें भी मधुमक्खियां मनुष्योंकी अपेक्षा अधिक दोषी नहीं है; आज दिनभी ज्ञान धर्म और सभ्यता का अभिमान करने वाला मनुष्य निर्विघ्न दूसरेका धन लूटनेमें पल भर भी देर नहीं करता। तुच्छ मधुमक्षिका को धर्म ज्ञानभी नहीं है, विद्याभी नहीं है। जोहो कभी कभी भिन्न भिन्न चक्रोंकी मक्खियोंमें मित्रताभी देखीजाती है। किन्तु यह मित्रता अधिक दिन तक नहीं बनी रहती; अक्सर थोड़ेही दिनमें यह मित्रताही उनकी शत्रुताका प्रधान कारण होजाती है। मक्खियां छत्ता लूटने केलिये और उसपर दखल जमानेके लिये लड़ती हैं। अर्थात उनमें चङ्गेजखां और नेपोलियन दोनों प्रकारके वीर देखेजाते हैं; कोई दूसरेका धन लूटनेमेंही सन्तुष्ट है और कोई दूसरेके राज्यपर अपना अधिकार जमानेमें व्यग्र है। काफी भोजन और घर बनानेकी सामग्री मिलनेपर मक्खियां दूसरेका घर लूटने नहीं जातीं। किन्तु उनका कोई कोई दल दो एकबार लूट पाट करके सहजमें अधिक माल पाजानेपर लुटेरा बन जाता है। वह बन या बगीचेमें जाने की तकलीफ नहीं करता। सहजमें अधिक लाभकी आशासे छत्ते की तलाशमें बन बन भटका करता है। अपनेसे कमजोर छत्ता देखतेही सब मक्खियां मिलकर उसपर आक्रमण करती हैं और बल पूर्वक मधु और पराग लूटकर अपने छत्ते में लेआती हैं। जब तक रानी मौजूद रहती है तबतक कामकाजी मक्खियां लड़ाई करती हैं, और बड़ी बहादुरी से लड़ती हैं शत्रुको सहजमें अपने अपने घरमें घुसने नहीं देतीं। कोई विपक्ष दल छत्ते केपास आजायतो उसीदम दरवाजे पर भयानक गोलमाल शुरू होता है। कान

की भिल्ली फाड़नेवाली भिनभिनाहट से विपदवार्त्ता बड़ी तेजी से छत्ते के एक सिरेसे दूसरे सिरेतक फैलजाती है, जन्मभूमि की रक्षा के लिये सहस्रों मक्खियां दरवाजे पर निकल आती हैं, और शत्रु की ओर दौड़ती है विजयी मक्खियां विजित मक्खियों को खेंच कर अलग फेंक आती हैं।

मधुमक्खियोंकी युद्ध प्रणाली भी अत्यन्त आश्चर्य जनक है। रानियोंके द्वन्द युद्ध का विषय पहले कहागया है। कभी कभी भिन्न भिन्न छत्तोंकी दो कामकाजी मक्खियोंमेंभी द्वन्दयुद्ध होता है। किन्तु एक दल मक्खियां दूसरे किसी दलके छत्तेपर अधिकार करने जायँ तो बहुधा दोनों दलोंमें साधारण युद्ध होता है। रोमर साहब ने मधुमक्खियोंका ऐसा एक युद्ध देखाथा। इसमें दोनों पक्षको अनेक मक्खियां मारीगईं तथा घायल हुईं। दोपहर से संन्ध्यातक यह लड़ाई हुईथी। यह युद्ध नियम पूर्वक हुआथा। जब दोनोंदल आमने सामने आयेतो हरेक योद्धा अपने बराबर का प्रतिद्वन्दी चुनकर उससे लड़ने लगा। देरतक मल्लयुद्ध होतारहा अन्तमें जयी मक्खियां अपने अपने दुश्मनोंकी लाशोंको दो पैरोंमें लटकाकर कुछ दूर लेगईं और फिर नीचे गिरादिया और आप सामने के चार पावोंपर उनके पास बैठकर पिछले दो पैरोंको रगड़ रगड़ कर आनन्द प्रगट करने लगीं। विलायत के एक अखबारमें मधु मक्खियों के निम्न लिखित भयानक युद्ध का विवरण प्रकाशित हुआथा। एक दल मधुमक्खियां एक नये मक्षिका गृहके निकट उड़ते उड़ते एकाएक उतरकर उसके ऊपर बैठगईं और उसको चारों ओरसे घेरलिया। थोड़ी देर बाद वह मक्षिकागृहके दरवाजे की तरफ बढ़ने लगीं और हजारों मक्खियां उसके भीतर घुसगईं पल भरमें भिनभिन शब्दसे युद्धकी घोषणा हुई; दोनों दलकी मक्खियां घरसे बाहर निकलकर आकाशमें उड़ने लगीं। आकाश मक्खियोंसे ढकगया मानो कहींसे एक भूरिरङ्गका मेघ अचानक आकर आकाश में छागया। आगे दोनो दलकी मक्खियोंमें

भीषण युद्ध आरम्भ हुआ। नीचेकी जमीन दोनों दलकी मरी और घायल मक्खियोंसे भरगई। बहुतदेर की लड़ाईके बाद एक दलकी मक्खियां विजय पाकर पासके वृक्ष पर बैठकर विश्राम करने लगीं। फिर उस मक्षिका गृहपर दखल करके शान्त भावसे अपना काम करने लगीं। जब कोई मक्षिकादल दूसरेका छत्ता अधिकार करता है तो वह सबसे पहले वृक्षके दूधसे उस छत्तेको मरम्मत करके अच्छीतरह साफ करलेता है। जबतक एक एक घर अच्छीतरह देखकर उसकी मरम्मत नहीं करलेतीं तबतक मक्खियां किसी नये छत्तेमें वास नहीं करतीं।

स्वजातीय शत्रुके सिवा भी मधुमक्खियों के अनेक शत्रु हैं। साधारण कीड़ेसे लेकर मनुष्य तक अनेक जीव इनके दुश्मन हैं। भौंरा, बर्रे, गिरगिट, मेड़क चूहा, चींटा, चींटी मधुमक्खी खानेवाली चिड़िया, भालू, मकड़ी और मनुष्य इनके प्रधान शत्रु हैं। भौंरा और भिड़ सुबीता पातेही मधुमक्खीका पेट फाड़कर उसका मधु पीजाते हैं; गिरगिट और छिपकली छत्तेके पास जाकर चुपके से बैठे रहते हैं, ज्योंही मधुमक्खी उनके पास आती है, त्योंही उसे पकड़कर निगल जाते हैं यों एक छिपकली क्षण भरमें पांच सात मक्खियों को खाजाती है। मधुमक्खियां शायद पहलेसे इन दुश्मनोंको नहीं जानतीं नहीं तो वह भला ऐसे शत्रुको छत्तेके पास फटकने क्यों देतीं? चूहा मधुमक्खीके पास नहीं जाता किन्तु मौका पानेपर उसके अंडे शहद और छत्तेको खाजाता है। काले काले चींटे छत्तेमें घुसकर शहद और अंडोंको खाजाते हैं। लाल लाल चींटियां विशेष हानि नहीं पहुंचातीं; बल्कि समय समयपर वह झाड़ूदार का काम करती हैं। एक किस्मकी चिड़िया केवल मधुमक्खी खाकर जीती है। दक्षिण अफरीकाके हाटेन्यट देश में एक तरहकी छोटी चिड़िया होती है; उसको मधु बड़ा प्यारा है। किन्तु मधुमक्षिकाके भयसे यह उसके पास जानेका साहस नहीं करती। छत्ता देखतेही यह चिड़िया भालूको ढूँढ़ने लगती है

ओर जहां पातीहै चिल्लाते चिल्लाते उसको रास्ता बताकर छत्तेके पास लेजाती हैं। भालू छत्ता तोड़कर मधु पीने लगता है उस समय जो कुछ शहद गिरता है यह उसेही चाटकर अपनेको परम सुखी समझती है। भालुओंकी भांति यह मनुष्य कोभी छत्ते के पास लेजाती है। भालू अगर मधु पाजाय तो वह और कुछ खाना नहीं चाहता। मधुमक्खियां परमशत्रु भालूको छत्ते के पास देखतेही क्रोधसे अधीर होकर उसपर आक्रमण करती हैं और कभी कभी जबरदस्त भालूभी मधुमक्षिकाके विषसे व्याकुल हो मधु छोड़कर भाग जाता है। कोड़ोंमें बहेलिया रूपी मकड़ी छत्तेके निकट जाल फैलाकर चुपचाप उसके भीतर बैठी रहती है; कामकाजी मक्खियां आते जाते समय कभी कभी जालमें फंसजाती हैं; जब वह बाहर निकलनेके लिये कुछ देर तक खूब तड़फड़ाकर हैरान होजाती हैं तब धीरे धीरे आकर मकड़ी उन्हे पकड़के खाजाती है। मनुष्य जाति मधु और मोमके लिये बहुत पुराने जमानेसे मधुमक्खियोंसे शत्रुता करती आती है। इनसब शत्रुओंके सिवा कुछ ऐसे छोटे छोटे कोड़ेभी हैं जो मधुमक्खियोंसे शत्रुता करते हैं। इनमें कोई कोई मक्खी के शरीरमें चिपटकर उनको बहुत सताते हैं। एक तरह के कोड़े इनके अण्डोंके घरकी छतपर अपने अंडे छोड़ देते हैं; कुछ देरमें इन अण्डोंसे कोड़े उत्पन्न होकर मधु, मोम और पराग खाजाते हैं। और कभी कभी तो यह ऐसे जबरदस्त होजाते हैं कि मक्खियां इनके अत्याचारसे तंग आकर अपना छत्ता छोड़कर भाग जाती हैं और नया छत्ता लगानेको लाचार होती हैं। डेथस् हेड मथ नामका एक तरहका कोड़ा पहले रानीकी तरह एक प्रकार का शब्द करके मधुमक्खियों को मोहित करलेता है पीछे हजारों मक्खियोंके बीचसे होकर छत्तेमें घुस कर बेधड़क मधुका भांण्डार लूट लेता है। मक्खियां उसपर आक्रमण तो क्या करें उसके पास जानेका भी साहस नहीं करतीं।

मधु मक्खियोंको साधारण लाड़ाई और तुमुल युद्धका विषय कहागया। अब उनकी दुर्ग बनानेकी प्रणालीका वर्णन संक्षेपमें करेंगे। मधु मक्खियोंके साहस और वीरताकी बात कुछ कुछ कही गई है। असभ्य मनुष्य शत्रुके आक्रमणसे अपनी रक्षाके लिये किला बनाना नहीं जानता; पेड़ोंकी सघन डाली या पहाड़की गुफाही उसका प्रधान आश्रय है। मनुष्य जाति सभ्यताकी सर्वोच्च सीढ़ीपर चढ़े बिना गढ़ अहाता आदि नहीं बनासकती। किन्तु मधु मक्षिकाका ज्ञान स्वाभाविक है, मनुष्य ज्ञानकी भांति सीखा-हुआ नहीं है; इनमें सभ्यासभ्य नहीं हैं; सबका काम एक सा है। बहुत प्राचीन कालमें मधुमक्खी छत्ता बनाने, सन्तान पालने, मधु बटोरने और किला बनानेमें जैसी विद्या दिखाती थी आजभी ठीक वैसाही दिखातीहै। इसकी कुछभी उन्नति या अवनति नहीं हुई। जोही सभ्य मनुष्य दूसरेसे सीखेहुए ज्ञानके प्रभावसे जैसा काम करता है संस्कार वश मधुमक्षिका उससे कम विद्या नहीं प्रकाश करती। मक्खियां प्रबल शत्रुसे रक्षा पानेके लिये जिस कौशलसे किला बनाती हैं उसे देखकर दांतोंमें उंगली काटना पड़ती है। समर विद्यामें वह इस जमानेके मनुष्योंसे किसी बातमें कम नहीं हैं। जिस शत्रुको डंक मारकर नाश नहीं करसकतीं उसके आक्रमणसे बचनेके लिये वह प्राचीर आदिके द्वारा छत्तेके दवारजेको सुदृढ़ और दुर्गम बनादेती हैं। स्वजातीय प्रबल शत्रुसेभी अपनी रक्षा के लिये उपाय करती हैं। शत्रुके डरसे वह कभी कभी छत्तेका दरवाजा मोम और पेड़के दूधसे बिलकुल बन्दकर देती हैं; सिर्फ अपने आने जानेके लिये कुछ छोटे छोटे छेद रखती हैं। छेदोंको इतना छोटा करदेती हैं कि दो मक्खियांभी एक साथ उसके भीतर नहीं जा सकतीं। डेथसहेड्मथ नामक कीड़ेके हाथसे बचनेके लिये हिउबर साहबकी मधुमक्खियोंने यह उपाय कियाथा।

डेथस् हेड्मथ कीड़ेने जब मधुमक्खियों को तंग करना शुरू किया तब हिउबर साहबने उसकी लूटपाट रोकनेके लिये उनके घरोंके दरवाजे इतने छोटे कर दियेकि उनसे मधुमक्खियोंके आनेजानेमें कोई रुकावट न हुई मगर उनके प्रबल शत्रु के घुसनेका रास्ता एक दम बन्द होगया। इससे उस कीड़ेका कुछ वश न चाला किन्तु हिउबर साहबने भूलसे कुछ घरोंके दरवाजोंको छोटा नहीं किया। उन घरोंको मधुमक्खियोंने स्वयं अपना दरवाजा छोटा कर लिया। उन्होंने पेड़का दूध और मोम अन्दाजसे मिला-कर उससे दरवाजेके आगे एक मजबूत दीवार बनाई दीवारसे दरवाजोंको अच्छी तरह बन्द करके उसमें कई छेद कर दिये। छेद इतने छोटेथे कि उसके भीतरसे एकसाथ सिर्फ दो मक्खियां आजा सकती थीं। इससे उनका जबरदस्त दुश्मन घरमें घुसने नहीं पाया। मक्खियां यह दीवार कभी ठीक दरवाजेपर, कभी कुछ पीछे और कभी सामने बनाती हैं। इनके इंजिनियर सदा एकसां किला नहीं बनाते जब जैसे किलेकी जरूरत पड़ती है तब वैसे किले बनाते हैं। कभी कभी छोटे छोटे छेद वाले सिर्फ एक दीवार बनाते हैं कभी समान अन्तर पर कई दीवारें पास पास बनाते हैं। दीवारोंके बीचकी गली इतनही तंग करते हैं किदोसे अधिक मक्खियां कभी एक साथ नहीं आ जा सकतीं। दीवारोंमें छोटे छोटे दरवाजे बनाते हैं। दरवाजे ऐसे होते हैं कि एक सीधमें कोई तीन दरवाजे नहीं पड़ते। इसलिये छत्तेके अन्दर जानेके लिये एक द्वारसे दूसरे द्वारपर जाते समय मधुमक्खियोंको एक टेढ़े रास्तेसे जाना पड़ता है। जिन्होंने आज कलके आदमियों के बनाये किसी किलेका दरवाजा देखा है वह मधुमक्खियोंके बनाये किलेके टेढ़े रास्तेसे मनुष्योंके बनाये दुर्ग द्वारकी तुलना करनेपर जरूर आश्चर्य करेंगे। मक्खियां उन दीवारोंको कभी कभी सरदर और खम्बे सहित बनाती हैं। किन्तु सरदर और खम्बे इस तरहबनाती हैं कि एक दीवारका सरदर पासकी

दूसरी दीवार के खम्बेके सामने पड़ता है इससे भीतर जानेका रास्ता टेढ़ा होजाता है। बहुत जरूरत पड़े बिना वह कभी किला नहीं बनातीं। और जिस शत्रु को डंकसे मार सकती हैं उसके डरसे भी कभी किला नहीं बनातीं। स्वजातीय प्रबल शत्रु के हाथसे बचने के लिये वह ऊपर लिखी रीतिसे किला बनाती हैं। मगर छेद इतना छोटा करती हैं कि सिर्फ एक कामकाजी उसके भीतरसे जासके और थोड़ीसी मक्खियां भीतर की तरफ संतरी बन कर तैनात रहें तो वह सहजमें जबरदस्त से जबरदस्त दुश्मनको भी हरा सकती हैं। पाठक! आपने सन् १८५७ के गदरका इतिहास पढ़ा है? आरामें अंगरेजोंने एक छोटेसे किलेमें रह कर किस कौशलसे बागी सिपाहियोंके हाथ से आत्मरक्षा की थी वह याद है? मधुमक्खियां भी उसी तरह अपनी बनाई दीवारकी ओझलमें रहकर जबरदस्त शत्रु से अपनी रक्षा करती हैं और अक्सर कामयाबभी होती हैं। जब मक्खियोंकी वंशवृद्धि होकर उनका एक एकदल जन्मभूमि छोड़ताहै उस समय इस दीवारके रहनेसे जानेमें बहुत रुकावट पड़तीहै इसलिये वह उस समय दीवारको तोड़देती हैं और भारी विपद आये बिना फिर नहीं बनातीं।

मधुमक्षिकासे उपकार।

संसारमें सजीव पदार्थ हो चाहे निर्जीव-प्राणीहो चाहे उद्भिद, छोटे छोटे कीड़ेहों या मोटे शरीर धारी जीव सब किसी न किसी उद्देश्यसे उत्पन्न कियेगये हैं। ऐसी कोई बुरी वस्तु नहीं बनीहै जिससे पृथिवीका कुछ उपकार न होताहो। सांपके विषसेभी कुछ न कुछ लाभ होता है। क्षुद्र मधुमक्षिकासे भी कम उपकार नहीं होता। मधु और मोम जितनी कामकी चीजें हैं वह किसीसे छिपी नहीं हैं। मधुकीसी मीठी वस्तु बहुत कम मिलती है, विशेष कर असभ्य जातियोंमें मधुही मुख्य मिठाई है। मोमभी अनेक कामोंमें आताहै। इसके सिवा मधुमक्खीसे पृथिवीका और एक भारी

उपकार होता है वह शायद सब लोगोंको बिदित नहीं है। हम संक्षेपमें उसका वर्णन करते हैं।

पाठकोंको याद होगा कि मक्खी फूलसे पराग और मधु यहीदो चीजें लेती हैं। मधुकी अधिक जरूरत पड़ने पर वह अधिक मीठे फूलपर जाती है और परागकी अधिक जरूरत पड़नेपर पराग वाले फूल पर जाती है। यहां एक बात कहना है कि जीवजन्तुओं की भांति उद्भिदोंमें भी स्त्री पुरुष होते हैं। किसी कसी वृक्षके हरेक फूलमें नरकेशर और स्त्री केशर होती है; और किसी वृक्षके किसी फूलमें केवल पुरुष केशर और किसीमें केवल स्त्री केशर होती है। इसके सिवा किसी वृक्षमें केवल पुरुष केशर वालाही फूल खिलता है और किसीमें केवल स्त्री केशर वाला है। इस बातके कहनेकी जरूरत नहीं है कि पुरुष केशरका पराग स्त्री फूलकी रजसे मिले बिना वृक्षमें किसी प्रकार फल नहीं लग सकता। जिन पेड़ोंके फूलमें स्त्री और पुरुष दोनों प्रकारकी केशर होती है उनमें सहजमें फल लगानेकी सम्भावना है। क्योंकि इन फूलोंके बीचमें स्त्री केशर और उसके चारों ओर पुरुष केशर होती है। इससे धीमी हवा बहनेसे भी पुरुष केशरसे पराग निकालकर स्त्री केशरके ऊपर गिर जाती है। जिन वृक्षोंके जुदाजुदा फूलोंमें स्त्री और पुरुष केशर होती है उन सबको हवासे विशेष लाभ नहीं है वह मधु और पराग ढूंढ़ने वाली चींटी, भौंरे तितली मधुमक्खी आदि कीड़ोंके द्वारा फलवान होते हैं। जब मक्खी आदि कीड़े मधु और परागके लिये एक फूलसे दूसरे फूलपर जाते हैं तब उनके पैरमें लगी हुई पुरुषरेणु स्त्री फूलपर झड़-जाती है इससे उसमें फल लगता है। किन्तु जिन पेड़ोंके फूल केवल स्त्री केशर वाले या केवल पुरुष केशर वाले होते हैं उन वृक्षोंको हवासे बहुधा कुछभी उपकार नहीं होता चीटियां अक्सर एकही वृक्षके फूलोंसे पराग लेती हैं, इससे उनसेभी इन पेड़ोंको फलवान होनेमें कुछ सहायता नहीं मिलती।

मधुमक्खी और भौंरा आदि उड़ने वाले कीड़ोंसे ही उनको रज एक वृक्षसे दूसरे वृक्ष तक पहुंचती है। और इसीसे उन वृक्षोंमें फल लगते हैं। लावक, स्प्रेङ्गेल आदि विद्वानों का कथन है कि पहले कहे हुए दो जाति के वृक्ष मधुमक्खी परिन्दे कीड़ों की सहायता बिना हवा या चींटी द्वारा फलवान होभी सकते हैं; किन्तु पीछे कहे हुए वृक्षोंमें उक्त कीड़ोंकी मदद बिना किसी तरह फल नहीं लग सकता। कौन नहीं कहेगाकि मधुमक्खीसे उद्भिद राज्यका भारी उपकार होता है? वृक्ष कीड़ों को मधु और परागका लोभ देकर इस तरह उनसे अपना काम कराते हैं।

मधुमक्षिका पालन।

सभ्यताके साथ मनुष्यका ज्ञान जितनाही बढ़ता है उतनाहीं वह अपने प्रयोजनीय पदार्थ को उन्नति करता है। वह अब किसी वस्तुकी स्वाभाविक अवस्था पर सन्तुष्ट नहीं है। वल्कि अपनी बुद्धि और ज्ञानसे वह सब विषयोंमें स्वभावकी सहायता करके अपनी सुख सामग्री बढ़ानेके लिये बराबर चेष्टा कर रहा है। वह खानेयोग्य पदार्थको रन्धन करके पाचन शक्तिकी सहायता करता है, रोगीको उपयुक्त औषधि खिलाकर नीरोग करनेके विषयमें स्वभावकी सहायता करता है; और अच्छे अच्छे खादसे फल फूलकी उसने कुछ बहुत उन्नतिकी है। कुछ दिनसे मधु और मोमके लिये मनुष्यकी आंख मधुमक्खियों पर पड़ी है। मनुष्य अब थोड़ेसे जंगली मधु और मोम पर सन्तुष्ट नहीं है। सभ्य जगत यही उपाय निकालनेकी चेष्टामें है कि जिससे मधुमक्खियां अल्प समयमें अधिक शहद बटोर सकें। इस बातकी बराबरकी शिक्षा होरही है कि जिसमें मक्खियोंको शत्रु न सताने पावे, उनको किसी प्रकारकी बीमारी नहो, वह खूब परिश्रम करने पावें, हर समय प्रचुर भोजन सहजमें पावें और थोड़े समयमें अच्छा और अधिक मधु सञ्चय

कर सकें। इसीसे आज कल अनेक देशोंमें मधुमक्खियां हिफाजतसे पाली जाती हैं। वह अच्छे अच्छे घरोंमें रखी जाती हैं और अधिक मधु उत्पन्न करके पालकके परिश्रम का सौगुना फल देती हैं। अन्यान्य विद्याओंकी भांति मधुमक्खी पालने की विद्याका आदर आजकल युरोप और अमेरिका में खूब होरहा है। युरोपके लगभग सब देशों मे मधुमक्खी पालीजाती है विशेष कर जर्मनी और इङ्गलेण्डमें इस विद्याकी अधिक उन्नति हुई है। इंगलेण्डमें बहुत लोग ऐसे हैं जो मक्खी पालकर केवल मधु, मोम रानी या मक्खीका दल बेचकर आनन्दसे जीविका निर्वाह करते हैं किसी किसीका मुख्य रोजगार मधुमक्खी पालने के लिये जरूरी सामान बनाना और बेचना है। इंगलेण्डमें "ब्रिटिश बीकी पर्स एसोसियेशन" नामसे मधुमक्खी पालने वालोंकी एक प्रधान सभा है; जुदा जुदा स्थानोंमें उसकी औरभी कई शाखाएं हैं मक्खी पालनेकी रीति की उन्नति करनाही इनका उद्देश्य है। उक्त प्रधान सभासे "ब्रिटिश बीकीपर्स जरनल" नामका एक मासिक पत्र भी निकलता है। उसमें केवल मधुमक्षिका पालन सम्बन्धी लेखहोते हैं। पहले अमेरिकामें पालनेयोग्य मधुमक्खियां नहीं थीं; पीछे युरोपसे वहां लाईगई और फिर सारेदेशमें फैलगई। इस समय पृथिवीके सब देशोंकी अपेक्षा अमेरिका वालों ने अधिक मधुमक्खियां पाली हैं और इसमें सफलता प्राप्तकी है। अमेरिका में इनके पालनेका रोजगार इतना अधिक और आम होगया है कि लोगोंको मधुमक्खियोंसे तंग आकर कभी कभी अदालतकी शरणभी लेनीपड़ती है। हम "हेरिस बर्गटेलीग्राफ" नामक अखबारसे एक खबर नकल करते हैं। वेष्टफेयरविय् नामक एक छोटे शहर के दो आदमियों के पास १३० छत्ते थे। एक बार गर्मीके मौसिम में मक्खियोंको काफी भोजन नहीं मिला इससे वह बहुत क्रोधित हुईं। दरवाजे पर छत्ते लटकते थे। एककी घर वालोंको दरवाजा खोलनेका साहस नहीं होताथा;

खिड़की से वह किसीतरह आती जाती। उस रास्तेसे जो आदमी आजाता मधुमक्खियां उसको डंक मारतीं। फल, अचार या कोई मीठी चीज बाहर रखनेसे पलभरमें झुंडको झुंड मधुमक्खियां आकर उसे चटकर जातीं। कभी कभी एक एक मकान मक्खियों से भरकर कालेरंगका बनजाता। शहरके लोग यों कई महीनेतक तंग हुए अन्तमें सबने मिलकर मधुमक्खी पालनेवालोंके नाम अदा-लत में नालिश कीथी। अमेरिका में थोड़ेही दिनमें मधुमक्षिका की इतनी वंश वृद्धि और उसके पालनेकी इतनी उन्नति हुई है कि कि देखकर आश्चर्य होता है। जोहो अमेरिकामें सबकुछ सम्भव है, अमेरिकाकी बातें अद्भुत हैं। अब हमारे देश की ओर दृष्टि फिरीजाय, हमारे देशमें और और विषयोंकी भांति मधु मक्खीके सम्बन्धमें भी माल मसाले की कमी नहीं है, केवल कारीगरोंकी कमी पाईजाती है। मधुमक्खियां भारतमें सर्वत्र देखीजाती हैं। जल वायु भी इनके अनुकूल हैं; तब भारतमें मधुमक्खी पालनेसे क्योंनहीं सफलता प्राप्त होगी?

अलीपुर में डगलस साहब, शिलाङ्गमें रीटा साहब, पहाड़ी देशमें हंटर साहब और टाड साहब को छोड़कर भारत में शायद और किसी ने वैज्ञानिक उपायसे मधुमक्खी नहीं पाली। मगर डगलस साहबके मुंहसे सुना है कि बङ्गालमें कहीं कहीं दो एक देशी वैज्ञानिक नियमसे मधुमक्खी पालते हैं। जोहो, वैज्ञानिक उपाय से मक्षिका पालन इस देशमें अबभी उचित रीतिसे जारी नहीं हुआ यह बात सत्य है और खेद की है। अतएव अब अधिक विलम्ब करना ठीक नहीं है। वैज्ञानिक उपायसे मधुमक्खी पालने की रीति सर्वसाधारण को सुगमतासे बताकर उन्हें इसके लिये उत्साहित करनाही हमारा उद्देश्य है। यहां यह भी कह देना आवश्यक है कि इनके पालनेसे धन लाभके सिवा इनके आचार व्यवहार स्वभावादि देखकर चित्तको जो आनन्द मिलता है वह आनन्द पालने वाले के सिवा और कोई अनुभव नहीं कर

सकता। हम भारतके मक्षिका पालन, जंगली छत्तोंके लूटने और मधु निकालने की बात संक्षेपमें कहकर आगे वैज्ञानिक उपायसे मधुमक्षिका पालनेके विषय को सरल भाषामें पाठकों को बतानेकी चेष्टा करेंगे।

भारतमें मक्खी पालने और मधु निकालने की रीति।

उद्भिद विद्याके पंडित लोग कहते हैं कि बङ्गालमें सालमें दस महीने मधुमक्षिका के मधु और पराग संग्रह के उपयोगी फूल खिलते हैं केवल पौष और माघ महीनेमें ऐसे फूलोंका अभाव होता है। इससे मक्खी पालनेमें कुछ अड़चल पड़नेका खटका नहीं है। उक्त दो महीनोंमें मक्खियां संग्रह किये हुए मधुके जरिये या बनावटी उपायसे सहजमें पाली जासकती हैं। बङ्गालके अनेक स्थानोंके निवासी मधुमक्षिका पालते हैं। सुना जाताहै कि यहां हांड़ीमें मधुमक्खी रखी जाती है मगर हमने कभी नहीं देखी। एक बङ्गाली बाबूने "ष्टेटसमेन" पत्रमें लिखाथा कि घरमें कनस्तरेमें, खिड़की पर और कभी कभी घरकी ठाकुरवाड़ी में देवताकी चौकीके नीचे मक्खियां बड़े बड़े छत्ते लगाती हैं। यह बहुत सीधी होती हैं कभी किसीको नहीं सतातीं। शहद जाड़े के सिवा प्राय: सब मौसिमोंमें पायाजाता है। उसके संग्रह करनेका ढङ्ग यह है कि किसी लकड़ीका एक हिस्सा आगमें जलाकर मधुके छत्तेके निकट कुछ देरतक इसतरह रखते हैं कि उसका धुआं छत्तेमें लगे। मक्खियां धीरे धीरे वहांसे हटजाती हैं, किन्तु उड़कर भाग नहीं जातीं। उनके जरा हट जानेपर मधुके घरमें एक छेदकरके उसके नीचे एक बर्तन रख देते हैं, रस चूकर बर्तनमें जमा होता है। यों हरबार एक डेढ़ सेर शहद मिलजाता है। मक्खियां इतनी चालाक होती हैं कि छेद करके मधु निकालनेके समय थोड़ी थोड़ी देरमें नये नये छेद किये बिना काम नहीं होता। वह छेदके पास जाकर चारों ओर इसतरह उसपर मोम चिपका देती हैं कि उससे जराभी मधु नहीं गिरने पाता। उक्त बङ्गाली

बाबू कहते हैं कि कलकत्तेके नीमतल्ला मुहल्लेके एक जमींदारकी जमींदारी पूर्व बङ्गालमें है; इस जमींदारीकी मालगुजारीका बहुत हिस्सा कमल वनके मधुसे अदाहोता है। सुन्दरवनसे भी हरसाल जंगली शहद आता है। यहांके शहद निकालने वाले छत्ते पर चढ़ाई करते समय शरीरमें लहसुनका रस मललेते हैं। लहसुनकी बूसे घबरा कर मक्खियां भाग जाती हैं और लूटपाटमें कोई विघ्न नहीं डालतीं। कोई कोई हाथमें तुलसी दलका रस लपेटकर छत्तेके पास जाते हैं। इसको परीक्षा हमनेकी है। तुलसीदलकी सुगन्धि से मुग्धहोकर हो चाहे किसी कारण से हो मक्खियां डंक नहीं मारतीं।

आसामके खसिया और जयन्तिया पहाड़के निवासी लकड़ीके कोटरमें मधुमक्खी पालते हैं। उसकामुंह घास या तिनके से ढकदेते हैं। साढ़े तीनफुट मोटी वृक्षकीजड़ मिलजाय तो वह उसीसे काम लेते हैं। जङ्गली छत्तेपर दखल करने के लिये छः सात खसिया वासी आदमी एक साथ जाते हैं। मक्खियोंके हाथ से बचने के लिये वह थोड़ी अदरक चबा लेते हैं। जब वहलोग जंगली मक्खियोंका झुण्ड पकड़ना चाहते हैं तो पहले रानी को पड़क कर एक बाल या सूतके डोरेमें एक लकड़ीसे बांध देते हैं, पीछे जब सब मक्खियां रानीके पास आकर एकत्र होजाती हैं तब सबको उस लकड़ी में रखकर घर लेआते हैं और कुछदिन रानीको बंधी हालतमें ही रखते हैं। वह लोग उनके अण्डोंको आगमें भूनकर बड़े प्रेमसे खाते हैं!

रंगून निवासी मधुके लिये जंगलमें जानेके पहले शरीरमें अच्छी तरह सरसों का तेल और प्याजका रस लगाते हैं। पेगूके वाशिन्दे खोखली लकड़ीके दोनों तरफ चमड़ा लपेटकर उसमें मक्खी पालते हैं। तिनासरम स्थानमें मक्खियां अक्सर पेड़की ऊंची डालीपर छत्ते लगातीं हैं। उन छत्तोंसे मधु निकालनेके लिये वहांके निवासी यह उपाय करते हैं पहले पेड़को कईजगह कुल्हाड़ी से

काट डालते हैं, कभी कभी हाथके सहारेके लिये पेड़से कुछदूर बांस गाड़ देते हैं फिर एक आदमी एक मशाल, एक बांसकी टोकरी (जिसके छेद गोंदसे खूब बन्द करदेते हैं) एक रस्सी और एक तेज चाकू लेकर धीरे धीरे पेड़ पर चढ़ता है। जलती हुई मशाल सामने करके पेड़की एक डालीसे दूसरी डालीपर जाकर वह धीरे धीरे छत्तेके पास पहुंचता है। उसके पहुंचने पर मधुमक्खियां अचांचक भारी बला सिरपर देखकर भयसे छत्ता छोड़ भाग जाती हैं। कितनीही मक्खियां मशालकी आगमें पड़कर जलजाती हैं बहुतसी मशालके धुएंसे बेहोश होकर जमीनपर गिर पड़ती हैं। रातको इस प्रकार हमला करनेसे सब जमीनपर गिरकर मरजाती हैं। दिनमें करनेसे कुछ मक्खियां आकाशकी ओर उड़कर किसी तरह अपनी जान बचाती हैं। तब निर्दय लुटेरा टोकरी को रस्सी में बांधकर किसी डालीमें लटका देताहै और छत्तेको चाकूसे टुकड़े टुकड़े करके उसमें फेंकता जाता है। जब टोकरी भरजाती है तब उसे उतारकर साथियोंके हाथोंतक पहुँचा देता है। मनुष्यमें कितनी निर्दयता और स्वार्थ भराहुआ है! अपने थोड़ेसे फायदेके लिये दूसरेकी जान लेनेमें वह जरा भी नहीं हिचकता।

ब्रह्मदेशके निवासी घरके पास मक्खीका झुण्ड आने या छत्ता बनानेसे बड़ा अशकुन समझते हैं। किन्तु अंगरेज लोग मधु-मक्खियों का झुण्ड आने पर उसे नीचे उतारनेके लिये ढोल या कनस्तरा खूब जोरसे बजाते हैं। दोनो जातियोंमें कितना फर्क है! जो हो, अंगरेजभी इस विषयमें कुसंस्कारसे खाली नहीं हैं। अनेक अंगरेजोंको यह दृढ़ विश्वास है कि अगर कोई मक्खी पालनेवाला मरजाय और उसकी खबर किसी तरह शब्द करके उसकी मधुमक्खियों को न दीजाय तोसब मक्खियां तुरत मरजाती हैं।

जहांतक हम जानते हैं युक्त प्रदेशमें मधुमक्खी पालनेका रिवाज नहीं है बाज लोग कहते हैं कि वहां उनके पालनेसे कुछ

फायदा नहीं क्योंकि उधर फूलका मौसिम बहुत कम है। जो हो, परीक्षा किये बिना कोई बात साफ नहीं कही जासकती। युक्त प्रान्त के निवासियों को इधर ध्यान देना चाहिये।

नेपाली लेपचा और भुटिया लोग पेगूदेश निवासियोंकी भांति खोखली लकड़ीके दोनों तरफ चमड़ा लपेटकर उसमें मक्खी पालते हैं। दारजिलङ्गमें कृष्ण पक्षकी अन्धेरी रातमें छत्तेसे मधु निकाला जाता है *

भारत वर्षका स्वर्ग कश्मीरदेश मधुमक्खी पालनेके लिये बहुत प्रसिद्ध है। कश्मीरके बराबर भारतके अन्य किसी देशमें बहुतायत से मक्खियां नहीं पाली जातीं। पीढ़ी दरपीढ़ी पालेजाने के कारण वहांकी मक्खियोंका स्वभाव बहुत सीधा होगया है। वहां का शहदभी शुद्ध निर्मल और बहुत मीठा होता है। शहद इस इफ-रातसे होता है कि वहांके निवासी उसको छोड़कर चीनी या और कोई मीठी चीज काममें नहीं लाते। कश्मीरके लोग आम तौरपर मधुमक्खी पालते हैं। हरेक मकान में दस बारह छत्ते होते हैं। कश्मीरी लोग मकान बनाते समय हरेक घरकी दीवारमें १४ इंच व्यासके और २ फुट गहरे दो एक छेद कर देते हैं; छेदोंके भीतर की ओर मट्टी या चूनासुर्खीसे अच्छी तरह पोतदेते हैं और उनको

---

* मधुसंग्रह के समयके विषयमें भारतवर्ष में दो अलग अलग मत हैं। कुछ लोग कहते हैं कि मधुमक्खियां पूर्णिमाके दिन सब मधु खाजाती हैं इसलिये पूर्णमासि दो एक दिन पहले ही मधु ले लेना चाहिये। और किसी किसी प्रदेशके लोगोंकी रायमें अमा-वस्या से दो एकदिन पहले मधु लेलेना चाहिये, क्योंकि अमावस्या को वह छत्तेका सब मधु चटकर जाती हैं। इनमें कोई सत्यभी है सो हम नहीं कह सकते, क्योंकि मधु गृह एकबार मोमसे बन्द करदेने पर विषम सङ्कट पड़े विना मक्खियां उसका दरवाजा फिर नहीं खोलतीं। तथापि हम यहभी नहीं कह सकते कि यह खयाल विलकुल गलत है।

एक चपटे खपरैल से इस तरह बन्द कर देते हैं कि जब चाहें तब सहजमें खोल सकते हैं। यही सब छेद कश्मीरकी मधुमक्खियों के घर हैं। जब इन घरोंसे शहद निकालना होता है तब मकानका मालिक एक हाथमें सुलगते हुए तिनके लेकर दूसरे हाथसे वह खपरैल अलग कर देता है फिर वह आग गढ़ेके मुँह पर लेजाता है। मधुमक्खियां धुँआं न सहकर छत्तातोड़ ऊपरको उड़ जाती हैं। कभी कभी अधिक धुएंसे बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ती हैं। घरवाला निर्विघ्न शहद निकालकर खपरैल को फिर जहांका तहां लगादेता है। मक्खियां धीरे धीरे शान्त होकर फिर पुराने घरमें लौट आती हैं और पहलेकी तरह अपने काममें लगती हैं। इस प्रकार कश्मीरी लोग एकदल से एक या कई बार शहद पाते हैं। कश्मीर में नया दल इंगलेण्ड आदि देशोंकी भांति जंगलसे पकड़कर लाया जाता है।

पंजाबमें मधुमक्खी पालीजाती है। जाड़ेके मौसिममें पंजाबी लोग इसको चीनी और सत्तू या आटा खानेको देते हैं। बेया नदी के किनारेके गांवोंमें खोखली लकड़ियां मक्खियोंके घरके काममें आती हैं। और भरपूर आहारके सुबीतेके लिये बीच बीच में उनको एक जगहसे दूसरी जगह लेजाया करते हैं।

सुना है कि मध्यप्रदेशमें मक्खी पालनेका बिल्कुल रिवाज नहीं है; वहां शहद बिल्कुल जंगल से आता है। नागपुर में भी वह नहीं पालीजाती; मेलघाट (मधु घाट) नामक बनमें शहद इफरातसे होता है। चांदा जिलेमें सवेरे छत्तेमें धुआं देकर मधु निकालते हैं। पश्चिम भारतमें बहुत बढ़िया मधु जंगली छत्तोंसे इफरातसे आता है। किन्तु छत्ते बड़े बीहड़ स्थानमें होतेहैं। इससे मधु बड़ी मुशकिल से मिलता है।

कुर्ग प्रदेशमें मधुमक्खी पाली जाती है। वहां जितना जंगलमें मधु मिलता है उसका लगभग दो तिहाई घरेलू मधुमक्खियों

द्वारा पैदा होता है। कुर्ग देशके निवासी माघ या फाल्गुण महीने में एक हांड़ी के भीतर अच्छीतरह मोम और मधु लपेटकर और उसके तलेमें कई छोटे छोटे छेद करके उसको उलटे मुंह जंगलमें रख आते हैं। कोई दस बारह दिन में मधुमक्खियां आकर उसके भीतर छत्ता बनाना शुरू करती हैं। तब वहां वाले उस हांड़ीको रातको घरपर लाकर उचित स्थानमें रखदेते हैं। जेठ वैशाखमें मक्खियां खूब मधु बटोरती हैं। तब पालनेवाले अन्धेरे में हांड़ी को कुछ ऊंची करके उसके भीतर धुआं देते हैं। मक्खियां घबरा कर ऊपरके छेदोंको राहसे जंगलको भागती हैं। उनको रोकनेके लिये हांड़ीके ऊपर एक और हांड़ी रखदेते हैं धुआं देनेसे वह कभी कभी ऊपरकी हांड़ीमें जाकर छिपती हैं किन्तु अक्सर भाग जाती हैं।

मैसोर राज्यमें भी मधुमक्खी पालीजाती है। यहां आषाढ़का महीना मधु संग्रह करनेका समय है। मैसोर निवासी शरीर पर एक कम्बल ओढ़कर मधु निकालते हैं किन्तु मक्खियोंको एकदम भिखारी न बनाकर उनके लिये कुछ मधु छोड़ देते हैं। मैसोर वाले पुराने घड़े या हांड़ीके बाहरकी तरफ धुआं देकर उसको काला करते हैं, फिर उसके भीतर मधु लपेटकर, उसमें छोटे छोटे छेद करते हैं और उस वर्तनका मुंह मोटे कपड़ेसे बांधकर जंगलमें रख आते हैं। जब मक्खियां उसमें आकर छत्ता बनाने लगती हैं तब उसे घर उठालाते हैं। मधु लेनेकी दरकार होती है तब कपड़े को खोलकर भीतर कुछ धुआं देकर मक्खियों को अलग करदेते हैं। यहांकी मक्खियां बहुत सोधी होती हैं और इनका मधु बहुत बढ़िया होता है।

दक्षिण भारतमें कुर्ग और मैसोरके सिवा और कहीं मधुमक्खियां घरमें नहीं पालीजातीं। वह अक्सर ऊंची बीहड़ पहाड़की चोटीपर पहाड़के आसपास या पेड़की ऊंची चोटीपर छत्ता बनाती हैं। वह दक्षिण पश्चिम की हवासे बचनेकेलिये बहुधा पहाड़ आदिके उत्तर

पूर्वमें छत्ते बनाती हैं। असभ्य जातियां एक तरहकी लतासे बनी सीढ़ीके द्वारा पहाड़की चोटीसे बीस पचीस हाथ नीचे बने छत्ते के निकट आकर छुरी और मशालकी सहायता से उसको लूटती हैं। अमावस्या की रातके नौ बजेके बादही छत्तेपर अधिकार करने का सबसे अच्छा अवसर है। सोई हुई मक्खियां अचानक जलती मशाल देखकर चौंक उठती हैं और किंकर्तव्य विमूढ़ होकर छत्ता छोड़ इधर उधर भनभनाती भागती हैं। हजारों मक्खियां पहाड़, जमीन और आसपास के आदमियों पर गिरती हैं किन्तु बेचारी उस समय भी जबतक घायल नहीं होतीं उन लुटेरोंको कुछ नुकसान नहीं पहुँचातीं ; पासमें नदी हो तो बेशुमार मक्खियां और अंडे उसमें गिरकर मछली आदि जलचरोंके पेटमें जाते हैं। त्रिचनापल्लीके निवासी पहाड़के ऊपर से खांचेमें रखकर एक आदमीको नीचे लटका देते हैं। निल्गोरके निवासी छत्ते को तोड़ते नहीं ; मधु भाण्डार के ऊपर दो चार छेद करके नीचे एक बर्तन् रखदेते हैं। कड़ापा, कर्नूल आदि स्थानोंके निवासी ऊंचे पहाड़से शहद लेनेके लिये नये बांसकी एक सीढ़ी बनाते हैं। कर्नूलमें एक विचित्र रिवाज है ; जो आदमी छत्ता तोड़ने जाय, उसका साला या बहनोई उसके पास खड़ा रहकर पहरा देता है !

पाठकोंको विदित होगया कि हिमालय प्रदेश, काश्मीर और कुर्ग प्रदेशमें मधुमक्खी पालनेका रिवाज कसरतसे जारी है। इसके सिवा बङ्गाल, पंजाब, मैसोर और खसिया पहाड़ पर कुछ कुछ मक्खियां पाली जाती हैं ;किन्तु काश्मीर या कुर्ग प्रदेशमें जिस ढङ्गसे वह पालीजाती हैं उसको ठीक मधुमक्षिका पालन नहीं कह सकते। मक्खियोंका दल घरमें लाकर एक हांडीके भीतर या दीवारके गढ़ेमें रख छोड़ना और मधु लेनेके समय धुआं देकर मधु मक्खियों को भगादेना मधुमक्षिका पालन नहीं कहलाता। आजकल जर्मन और अमेरिकन लोग जिस उत्तम रीतिसे मक्खी

पालते हैं वही रीति अवलम्बन करना चाहिये। भारतवर्ष के मधुमक्षिका पालकों का अपनी मक्खियोंपर केवल यही इखतियार है कि वह जब चाहते हैं उनको यों मारकर, भगाकर या धुएंसे बदहवास करके मधु लेलेते हैं। किन्तु वैज्ञानिक रीतिसे मक्खी पालनेवालों का मधुमक्खियोंके ऊपर पूरापूरा इखतियार है वह जबचाहें उनको जराभी कष्ट न देकर जरूरतके मुवाफिक शहद ले सकते हैं, वेरोकटोका उनकी विचित्र काररवाई अपनी आंखसे देखकर विशेष आनन्द पा सकते हैं। एक दल मक्खियोंको चाहें तो कई दलोंमें बांट सकते हैं, जरूरतके मुताबिक रानीसे राजकुमारी वाला अण्डा उत्पन्न करा सकते हैं अथवा उस अंडेका घर काटकर रानीका अण्डा देना बन्दकरा सकते हैं। इतनाही कहना काफी होगा कि आज कल के वैज्ञानिक मधुमक्षिकापालकों का मधु छत्तेकी हरेक कोठरी और हरेक मक्खीपर पूरा पूरा अधिकार रहता है। तिस परभी वह गंवार और अशिक्षितोंकी तरह मक्खियोंको जराभी कष्ट नहीं देते। मधुमक्षिका पालनकी उन्नति होनेसे सिर्फ यही नहीं हुआ है कि मधुमक्खियोंके ऊपर आदमियोंका इखितयार बढ़ा है और पालनेके विषयमें जानकारी अधिक हुई है, वरंच कह सकते हैं उनका सताना विलकुल छूटगया है। पाठकोंने पढ़ा है किभारतवर्षमें जहां जहां मक्खियां पालीजाती हैं प्राय:उन सबस्थानोंमें उनको बहुत सताया जाता है। और जंगली मधु संग्रहके समय तो हजारों निरीह परिश्रमी जीवोंको रातके वक्त उनके बटोरे हुए मधुसे वंचित करके, घरसे निकालकर धुएंमें बेहोश करते हैं और आगमें जलादेते हैं। यों हरसाल कितनीही बेचारी मधुमक्खियों की अकाल मृत्यु होती है। इङ्गलेण्ड आदि देशोंमें अबतक मधुमक्खियों से बड़ा निर्दय. वर्ताव कियाजाता था। डाक्टर बेयनने लिखाहै कि पहले इङ्गलेण्डमें दिहातोंमें पालतू छत्तेसे मधु निकालते समय निर्दयी पालक एक गढ़ेमें रात को दो चार दियासलाई जलाकर मक्खीके घरको उलटकर उसपर

रखदेताथा और कोई मक्खो भागने न पावे इसकेलिये चारों तरफसे मट्टी बटोर कर उसे अच्छोतरह बन्द करदेता था फिर ऊपरसे छत्त को एक दोबार हिला देता। इससे सब मक्खियां गढ़ेमें गिर पड़तीं और वह आदमी छत्तेको वहांसे अलग कर गढ़ा बन्द कर देता। इसतरह पालक पिता अपनी पालिता मक्खियोंको जीते जी कब्र देकर उनका उद्धार करता! किन्तु धन्य है विज्ञानको जिसने मधुमक्खियोंको मनुष्योंके इस अत्याचारसे बचाया। दूसरे भागमें हम वैज्ञानिक रीति और उसकी आवश्यकीय सामग्रियोंका वर्णन करेंगे।

॥ इति ॥

निवेदन।

यह प्रबन्ध वङ्गभाषाके एक बहुत पुराने मासिकपत्रसे संग्रह करके अनुवाद किया गया है। इसके असली लेखकका नाम बाबू कालीकृष्ण बसाक बी० ए० है। आपने अलीपुरके प्रसिद्ध मधुमक्षिका-पालक डगलस साहबकी बनाई पुस्तकोंके सहारे इसे लिखा था। मैंने हिन्दी पाठकोंके मनोरञ्जनके लिये इसका तरजमा करके पुस्तक रूपमें प्रस्तुत किया है। शीघ्रताके कारण पुस्तक का आकार बड़ा न होने पर भी दो भाग करना पड़ा है।

इस पुस्तकमें जो कुछ है वह पाठक पढ़ही चुके दूसरे भागमें इसका शेष वर्णन होगा। हिन्दीमें प्राणी विद्याकी कोई पुस्तक नहीं देखी जाती और न इस ढङ्गकी पोथी लिखनेका रिवाज है। इससे मधुमक्षिका हिन्दीमें अपने ढङ्गकी पहली पुस्तक कही जा सकती है। जोहो, यदि इससे पाठकोंको कुछ आनन्द मिलेगा तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूंगा।

अनुवादक।

मांसभोजनविचार के प्रथम भाग का उत्तर ॥

अर्थात

जोधपुर के नामछिपे किसी एक उपदेशक ने आयुर्वेद सुश्रुत के प्रमाणों से मांसभक्षण करना सिद्ध किया था

उस का

अच्छे २ प्रबल पुष्ट युक्ति प्रमाणों द्वारा ब्राह्मण सर्वस्व के सम्पादक पं० भीमसेन शर्मा ने उत्तर दिया

और

ब्रह्मयन्त्रालय–इटावा में छपा

संवत १९६४ वि० । सन् १९०७ ई०

द्वितीयवार ५०० पु०

मूल्य प्रति पु० -)

08

प्रस्तावः ।

सर्वसाधारण महाशयों को विदित हो कि "मांस भोजन विचार„ नामक पुस्तक तीन भाग जोधपुर में छपे थे। जिनका खण्डन लिखकर हमने संवत् १९५३ में प्रथम वार प्रकाशित किया था। उस समय आर्यसमाज के साथ हमारा सम्बन्ध था। इस से समाजी मत का कुछ२ गन्ध इन पुस्तकों में भी आगया था। उसको इस वार छपाने में शोध दिया है। अब ये पुस्तक सर्वग्राह्य होगये हैं। मांस भक्षण काम विशेष कर हिंसादोषग्रस्त होने से बुरा है यही सनातनधर्म का सिद्धान्त है। मांस पार्टीवाले समाजियों ने राज्य से १००) मासिक हम को दिलाने आदिका उद्योग किया कि पं० भी० श० भी मांसभक्षण को वेदानुकूल कह दें। पर हमने वैसा न किया इस से उन का पक्ष निर्बल होगया। और हमारे लिखे इन पुस्तकों का किसी ने कुछ भी जवाब नहीं दिया। इस कारण यह भी सिद्ध होगया कि हमारा यह खण्डन सर्वथा ठीक सत्य है।

ह० भीमसेन शर्मा सम्पादक ब्रा० स० इटावा

मांसभोजनविचार प्रथम भाग का उत्तर ॥

सब महाशयों को विदित हो कि जब आर्यसमाजियों में मांसपार्टी का प्रादुर्भाव हुआ था तब राजधानी जोधपुर में कई स्वार्थी साधु ब्राह्मणों ने अपना २ मतलब सिद्ध करने के लिये महाराजा प्रतापसिंह जी को सुझाया था कि मांस खाना वेदशास्त्रानुकूल कर्त्तव्य काम है ऐसा पंडितों से कहला वा लिखवा लेने पर आप को मांसाहारी होने से कोई बुरा नहीं कहे मानेगा। इसी विचार से हम (सम्पादक ब्रा० स० भी० श०) को भी जोधपुर में बुलाया गया और १००) मासिक घर बैठे राज्य से मिलने आदि का लोभ भी हमें दिलाया तथापि हमने मांस भक्षण को अच्छा कर्त्तव्य काम नहीं कहा वा नहीं लिखा। तब अन्य लोभी पण्डितों ने मांसभोजन विचार के तीन पुस्तक भाग १। २। ३। बनाये छपाये जिन का यह खण्डन हमने बनाया छपाया है॥

यद्यपि इस प्रथम भाग पर कुछ लिखने का हमारा संकल्प इसलिये नहीं था कि यह सुश्रुतादि आयुर्वेद कोई धर्मशास्त्र नहीं है और हमारा यह पक्ष पूर्व से भी न था न अब है कि मांसभक्षण पहिले समय में कोई नहीं करता था वा किसी ग्रन्थ में मांसभक्षण नहीं लिखा

किन्तु हमारा साध्य पक्ष सदा से यही है कि किसी शास्त्रकार ने मांसभक्षण को धर्म नहीं माना किन्तु धर्माधर्म के विचार के अवसर पर प्रायः सभी सच्छास्त्रों में मांसभक्षण पाप माना गया है। इसी के अनुसार सुश्रुत में भी धर्म मान कर मांस को भक्ष्य नहीं लिखा तो फिर उस का उत्तर क्या लिखें। तथापि अनेक धर्मशील महाशयों की सम्मति से इस विषय पर संक्षेप से कुछ लिखना चाहते हैं। यहां मांसभक्षण वालों की ओर के कथन के आरम्भ में मांसाशी वा मांसोपदेशक का संकेत मां० लिखेंगे तथा अपनी ओर से उत्तर दाता का उ० लिखेंगे।

मांसाशी-बहुत लोग कहते हैं कि मांस भोजन की विधि महर्षि धन्वन्तरि जी ने किसी स्थल पर नहीं लिखी।

उत्तरदाता-इस प्रकार मांसोपदेशक जी ने प्रश्न गढ़ कर स्वयं उत्तर दिया है कि " इस पुस्तक को आप लोग आद्यन्त विचारेंगे तो इस का उत्तर अवश्य ही आ जावेगा" बड़े आश्चर्य का स्थान है कि विधि शब्द का अर्थ वा सिद्धान्त न जान कर लिखना कैसा महा अज्ञान है। विधि शब्द का अर्थ पूर्वमीमांसा शास्त्र के प्रारम्भ में लिखा है कि "चोदना लक्षणोऽर्थो धर्मः" चोदना नाम विधि जिस के लक्षण नाम देखने जानने का साधन है वह धर्म है। और विधि का अर्थ नियोग आज्ञा (हुक्म) है कि ऐसा करो, वा ऐसा २ करना धर्म है, ऐसा ही करना चाहिये, वा ऐसा करना योग्य है। ऐसा मत करो, ऐसा

काम नहीं करना चाहिये। ये सब विधि के स्वरूप हैं ऐसे ही वेदस्थ विधिवाक्यों से धर्म लखाया गया वा लखा जाताहै इसीलिये वह धर्म चोदना लक्षण कहाता है। वेद के विधिवाक्य प्रधान वा मुख्य कर धर्म के लक्षक हैं और उसी चाल का अनुकरण लेकर बनी स्मृतियों के वाक्य भी वेदानुकूल होने से धर्मलक्षक हैं। इसी से उन का नाम धर्मशास्त्र है। क्योंकि उन मनुस्मृति आदि ग्रन्थों में प्रायः वेद के अभिप्रायों को लौकिक संस्कृत की चाल में प्रकारान्तर से ऐसा वर्णन किया है जिस से मनुष्यों की समझ में शीघ्र आ जावे। इस से सिद्ध हुआ कि विधिवाक्यों का प्रचार मुख्य तो वेद में द्वितीय कक्षा में मनुस्मृति आदि धर्मशास्त्रों में है। किन्तु अन्य ग्रन्थों में विधि शब्द का वाच्यार्थ नहीं घटता। यद्यपि व्याप्त विचार से देखें तो वेद के सब शब्द व्याप्त अर्थ के बोधक हैं इसी से वे सामान्य यौगिकार्थ माने जाते हैं तदनुसार विधि शब्द का अर्थ भी कुछ२ सर्वत्र मिलेगा। तथापि जैसे सब शास्त्रों में अन्य २ शास्त्रों के विषयों का प्रसङ्गानुसार कुछ २ कथन वा वर्णन आजाने पर भी उसका नाम वही रक्खा वा माना जाता है कि जिस विषय का वर्णन उसमें प्रधानता से किया गया हो। जैसे महाभारत पुस्तक के कई स्थलों में सांख्य वा योगशास्त्र सम्बन्धी विषयों का वर्णन आजाने पर भी महाभारत का नाम सांख्य वा योग नहीं कहा वा माना

का केवल धीरे २ बढ़ाते जाना यही विधि उनको है किन्तु एक साथ परिवर्त्तन से दुःख अधिक हो सकता है। इस में सन्देह नहीं कि सुश्रुत के आहार वा कृतान्नवर्ग में मांस का बहुत वर्णन किया गया है जो बात प्रत्यक्ष है उस के लिये कोई न लिखे तो भी सभी जानते हैं। पर शोचना केवल यह है कि जो पदार्थ जगत् में खाने पीने के काम में आते थे वा आते जिन से क्षुत्पिपासादि व्याधियों की निवृत्ति होती थी वा होती है उन सब का वर्णन करना सुश्रुत का विषय है। व्याकरण में परस्त्रीगमन, चोरी, द्यूत, व्यभिचार, मिथ्या अत्याचारादि शब्दों की भी सिद्धि दिखायी जाती है। चोरी आदि शब्दों का पठन पाठन भी होता है। और जगत् में परस्त्रीगमनादि भी सदा से होते ही आते हैं। पर व्याकरण यह व्यवस्था नहीं करता कि चोरी करना किस का काम है किस का नहीं। जैसे धर्म शब्द के सिद्ध करने से व्याकरण धर्मशास्त्र नहीं होता वैसे अधर्म की सिद्धि दिखाने से वह अधर्मशास्त्र भी नहीं कहा जा सकता। धर्म अधर्म आदि जिन २ शब्दों का लोक में प्रचार देखा उन २ सब की सिद्धि दिखाना व्याकरण का मुख्य उद्देश है। वैसे ही जो पदार्थ लोगों के खानेपीने के व्यवहार में आते देखे उन २ सब के गुण अवगुण दिखाना चिकित्साशास्त्र का विषय वा प्रधान उद्देश है। किन्तु कौन पदार्थ धर्मानुकूल भक्ष्य तथा कौन

अभक्ष्य है यह विषय वैद्यकशास्त्र का नहीं। गेंहूं, रोटी, पूरी, खीर आदि में जो २ गुण सुश्रुतकार ने लिखे हैं वे चुरा कर लाये गेंहूं आदि में न घटें यह नहीं हो सकता। अपने दूध में जो गुण होगा वही गुण चुराये में भी अवश्य होगा। पर चुराये गेंहूं दूध आदि का खाना धर्म विरुद्ध और अपने का खाना धर्मानुकूल है यह विषय वा उद्देश सुश्रुत का नहीं है। किन्तु यह धर्मशास्त्र का विषय है वा जिस २ ग्रन्थ में ऐसे विषय का वर्णन हो वही धर्मशास्त्र है। इस से यह सिद्ध हो गया कि पिये जाने वाले वस्तुओं में जैसे मद्य का वर्णन है बहुत लोग पहिले भी मद्य पीते मांस खाते थे उन को आहार में सामिल किया देख कर उस का वर्णन आहार वा कृतान्न वर्ग में किया गया। परन्तु इस के साथ में ही यह भी सिद्ध हो गया कि मद्यपान वा मांसभक्षण को धर्मानुकूल वा धर्म विरुद्ध सिद्ध करना इस ग्रन्थ का विषय नहीं है और यदि मांसोपदेशक जी वा उनके अनुयायी कोई अल्पाशय साहस रखते हों तो सुश्रुत का ऐसा कोई प्रमाणादि लावें जिस में कहा हो कि मांसभक्षण करना धर्मानुकूल है। निश्चय है कि जन्मान्तर में भी उन लोगों को ऐसा प्रमाण सुश्रुत में न मिलेगा और मनु आदि के धर्मशास्त्र में सैकड़ों वचन मिलेंगे जिन में मांसभक्षण को धर्म विरुद्ध वा अधर्म कहा हो तो सिद्ध हुआ कि मांस मद्य के भक्षण पान विषय में धर्माधर्म का विवेचन करना इस

ग्रन्थ का उद्देश ही नहीं तो आहार वा कृतान्नवर्ग में मांस का वर्णन आने से भी क्या हुआ ? । हमारा साध्य पक्ष जब यह नहीं था कि सुश्रुत के आहार वा कृतान्न वर्ग में मांस का वर्णन नहीं है किन्तु हमारा साध्य यह था और है कि मांसभक्षण धर्मानुकूल नहीं किन्तु धर्म से विरुद्ध है । तो अब शोचिये तो सही इस से हमारा उत्तर क्या हुआ अर्थात् कुछ भी नहीं । सुश्रुत के वाजी करण प्रकरण में लिखा है कि "पिबेच्छुक्राणि वा नरः" वाजीकरण चाहता हुआ पुरुष भेड़ा बकरादि के शुक्र वीर्य पीवे तो क्या मांसाहारी लोग जो आर्य बनने वा कहाने के लिये इच्छा रखते हैं वे इस को घृणित न समझेंगे ? । हमारा विचार तो यह है कि वैद्यक शास्त्र में सब प्रकार के मनुष्यों के लिये उपाय लिखे हैं म्लेच्छ जाति के लोग चाण्डालादि ऐसा काम कर सकते हैं। ऐसे कामों से ही वे नीच हैं । इसी प्रकार आहार प्रकरण में आसुरी प्रकृति वाले जो स्वभाव से मांसादि का आहार स्वयं करते हैं उन को गुणदोष बताये हैं कि अमुक २ के मांस में अमुक २ गुण वा दोष हैं । यदि हमारे मांसोपदेशक जो सुश्रुत के आहार प्रकरण में मांस का वर्णन देख के उस को भक्ष्य धर्मानुकूल ठहराने का कुछ भी साहस रखते हों तो यही बतावें कि सुश्रुत में अभक्ष्य अन्य वस्तुओं तथा मांस का भी कहीं परिगणन है ? अथवा मनुस्मृति से मांसभक्षण सिद्ध करते समय तो आपने अनेक प्राणियों का मांस अभक्ष्य मानकर शेषों

का भक्ष्य ठहराने के लिये अच्छे प्रकार पंख फटफटाये क्या मनुस्मृति में जो अभक्ष्य थे वे सुश्रुत में सब भक्ष्य हो गये ? मांसोपदेशक जी ! सावधान रहो अब पकड़े गये हो भाग नहीं सकोगे। कपोतादि बहुत पक्षी मांसवर्ग में प्रतुद नाम अपनी चोंच से छेदन कर २ अन्य कृमि कीटादि को खाने वाले गिनाये हैं जिन को मनुस्मृति के (अ० ५ श्लोक १३। प्रतुदान् जालपादांश्च०) श्लोक के अनुसार मांसभोजन विचार द्वितीय भाग के पृष्ट ६ में मांसोपदेशक जी ने अभक्ष्य लिखा है और सुश्रुत के मांसवर्ग में उन्हीं को भक्ष्य लिखा। अब पाठक महाशयो ! विचारिये कि इन की कौन बात सत्य है। वा आप लोग मांसभक्षी लोगों से इस का उत्तर मांगिये इस का उत्तर वे जन्मान्तर में भी नहीं दे सकते। आगे मांसोपदेशक जी ने स्वयमेव एक प्रश्न बना कर कि "आयुर्वेद तो धर्मशास्त्र नहीं" इस का उत्तर स्वयमेव मांसाचार्य जी देते हैं कि–

मां०–भ्रातृवर्ग ! यदि महर्षि की शासना धर्मशास्त्र नहीं तो फिर और कौन धर्मशास्त्र बन सकता है। इत्यादि।

उ०–हम पूछते हैं कि क्या व्याकरण महाभाष्य (पतञ्जलिकृत) अल्पर्षि की शासना है? क्या महाभाष्य धर्मशास्त्र है ? वा नहीं, पिङ्गल सूत्र पिङ्गल ऋषि का बनाया, यास्क कृतनिरुक्त, पाणिनिकृत अष्टाध्यायी, वात्स्यायन कृत कामसूत्र, धनुर्वेद अर्थवेद, गान्धर्ववेद इत्यादि पुस्तक क्या अल्प-

र्षियों के बनाये हैं ? क्या सुश्रुत ही महर्षि का बनाया है ? क्या कोई नियम है कि महर्षि का बनाया जो २ हो वह २ धर्मशास्त्र अवश्य कहावे क्या किसी महर्षि ने अर्थशास्त्र कामशास्त्र मोक्षशास्त्रों को नहीं बनाया वा नहीं बना सकता ?। यदि महर्षियों के बनाये सभी धर्मशास्त्र हैं तो अर्थशास्त्र भी धर्मशास्त्र होगया व्याकरण अष्टाध्यायी को भी धर्मशास्त्र मानो जब कोई कहै कि यह धर्मशास्त्र में लिखा है तो व्याकरण के सूत्रों में खोजा करो। वास्तव में इन की बुद्धि महापक्षपातरूप अन्धकार में दबी है इनको अच्छा मार्ग सूझना ही कठिन है (यस्य नास्ति स्वयंप्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम्) जिसको स्वयं समझने की शक्ति नहीं उसके लिये शास्त्र का उपदेश कुछ नहीं कर सकता। जो धर्मशास्त्र नहीं वह अधर्मशास्त्र नहीं कहा जासकता। जैसे वृष नाम धर्म का अलम् नाम समाप्ति वा नाश करने वाले का नाम मनुजी ने वृषल लिखा है यह व्याकरण का वा निरुक्त का विषय है इतने से मानवधर्मशास्त्र का नाम व्याकरण वा निरुक्त नहीं होता वा रक्खा जाता। इसी प्रकार सब शास्त्रों का कुछ२ विषय सब में आया करता है परन्तु जिस विषय का अधिकांश प्रधानता से जिस में वर्णन है वह शास्त्र उसी नाम से पुकारा जाता है। जैसे अग्नि सर्वत्र व्याप्त है तथापि पृथिवी पर्वत और जलाशयों का नाम अग्नि नहीं रक्खा जाता क्योंकि वहां२ पृथिवी और जलतत्त्व प्रधान है। लोक में प्रधानांश प-

रक शब्दों का प्रयोग होता वहीं प्रधान वाच्य वाचकांश में शब्दों का सर्वत्र प्रचार हो रहा है। वैसे ही धर्मसम्बन्धी अंश कुछ२ सर्वत्र व्याप्त हैं तदनुसार आयुर्वेद में भी कुछ२ धर्मसम्बन्धी अंश भले ही माना जाय इसके हम प्रतिपक्षी नहीं हैं पर इतने से चिकित्साशास्त्र का नाम धर्मशास्त्र नहीं हो सकता क्योंकि जिस ग्रन्थ में जिस विषय का उद्देश वा अधिकार करके वर्णन किया जाता है उसी अभिप्राय से उसका नाम भी पड़ता है। जैसे योग में योग का उद्देश वा अधिकार, सांख्य में प्रकृति पुरुष के संख्या भेद का उद्देश रख कर वर्णन करने से उन२ का नाम योग सांख्यादि रक्खा गया है वैसे आयु नाम अवस्था की प्राप्ति के उद्देश से बने सुश्रुतादि का नाम आयुर्वेद रक्खा गया। उस में धर्म के व्याख्यान का कहीं नाम भी नहीं है। और मनुस्मृति के आरम्भमें"धर्मान्नो वक्तुमर्हसि,, वर्णों और वर्णसंकरों के धर्म पूछे गये और धर्मों के ही व्याख्यान का आरम्भ किया गया तथा वार २ यथावसर धर्म का नाम मनु जी वा भृगु जी ने लिखा है–

धर्मकोशस्य गुप्तये। स हि धर्मार्थमुत्पन्नः। मूर्त्तिर्धर्मस्य शाश्वती। अस्मिन्धर्मोऽखिलेनोक्तः। देशधर्मान् जातिधर्मान् कुलधर्मांश्च शाश्वतान्। पाखण्डगणधर्मांश्च शास्त्रेऽस्मि-

न्युक्तवान् मनुः ॥ योधर्मस्तन्निबोधत । वेदोऽखिलो धर्ममूलम् । साक्षाद्धर्मस्यलक्षणम् । धर्मं जिज्ञासमानानाम् ॥

इत्यादि प्रकार सहस्त्रों वार धर्म शब्द मनुस्मृति में आया है । और स्वयं कह भी दिया है कि "इस शास्त्र में सम्पूर्ण धर्म ही कहा गया है" । और सुश्रुत ग्रन्थ में चार छः स्थानों में भी धर्म शब्द का लेख मिलना दुर्लभ है । यदि मांसोपदेशक जी को थोड़ी भी लज्जा हो वा कुछ भी अपने लेख को सत्य मानने का साहस रखते हों तो बतावें कि आयुर्वेद में धर्म का लक्षण वा स्वरूप कहां लिखा है ? यदि न बता सकें तो अपने लेख को मिथ्या मानलें और प्रसिद्ध करदें कि हमने भूल से लिखा था । आशा है कि हमारे पाठक महाशय समझ गये होंगे कि मांसाशी उपदेशक का लेख सर्वथा मिथ्या है । यह भी ध्यान रहे कि अपने २ विषय के यथावत् कहने से वे वे सभी शास्त्र प्रशंसा के भाजन हो उन २ के कर्त्ताओं की प्रतिष्ठा कराते हैं । जैसे पाणिनि आचार्य की चिकित्सांश के न कहने से वा धर्म का व्याख्यान न करने से अप्रतिष्ठा नहीं हुई वा व्याकरण अष्टाध्यायी को धर्म शास्त्र मानलें तब पाणिनि जी की प्रतिष्ठा समझी जाय सो नहीं है किन्तु व्याकरण के विषय को ठीक २ यथोचित कहने से पाणिनि आचार्य की प्रतिष्ठा है वैसे ही धर्म का पछड़ लगाने वा न लगाने से धन्वन्तरि जी की प्र-

तिष्ठा अप्रतिष्ठा भी नहीं किन्तु आयुर्वेदीय विषय के यथोचित कहने से ही उन की यथोचित प्रशंसा चली जाती है। इस से सिद्ध हो गया कि आयुर्वेद धर्मशास्त्र नहीं, यह मांसोपदेशक का केवल स्वप्न का सा बड़बड़ानामात्र है। आगे मांसोपदेशक जी ने स्वा० द० को संस्कार विधि जो द्वितीयावृत्ति में छपी है प्रमाण दिया है।

मां०—"इसलिये गर्भाधानादि संस्कारों के करने में वैद्यकशास्त्र का आश्रय विशेष लेना चाहिये। अब देखिये सुश्रुतकार परम विद्वान् कि जिन का प्रमाण सब विद्वान् मानते हैं" यह लेख संस्कार विधि का प्रमाण में दे कर उपदेशक जी ने लिखा है कि गर्भाधान विधि आयुर्वेद नाम सुश्रुत और उपनिषद् में लिखे अनुसार करना चाहिये ॥

उ०—हम पूछते हैं कि स्वा० द० के इस लेख से उपदेशक जी का पक्ष क्या सिद्ध हो गया ?। यद्यपि स्वा० द० कोई प्रामाणिक आचार्य नहीं तथापि (परमतमप्रतिषिद्धं स्वमतम्) के अनुसार स्वा० द० ने जैसा लिखा है वैसा हम स्वयं भी मानते हैं कि धन्वन्तरि जी वास्तव में बड़े विद्वान् पूज्य थे यह उन के ग्रन्थ को जो कोई सादर देखेगा वह निस्सन्देह उनको परम विद्वान् कहे और मानेगा। पर इतने से उन की विद्वत्ता आयुर्वेद के व्याख्यान में ही मानी जायगी किन्तु धर्मविषय में नहीं क्योंकि न धर्म का व्याख्यान उन्हों ने किया न वह

ग्रन्थ धर्मशास्त्र है। क्या पाणिनि महर्षि को व्याकरण के विषय में कोई परम विद्वान् माने तो धर्म के व्याख्यान विषय में भी उन की विद्वत्ता मानना आवश्यक है? वा धर्मविषय का व्याख्यान उन्हों ने नहीं किया इस से धर्म विषय में अष्टाध्यायी का प्रमाण कोई न माने तो व्याकरण विषय के व्याख्यान से हुई प्रतिष्ठा वा विद्वत्ता पाणिनि आचार्य की क्या नष्ट हो सकती है? कदापि नहीं। किसी अंगरेज़ी के प्रबल विद्वान् की प्रतिष्ठा जो उस भाषा में अधिक जानकारी होने से हुई हो वह क्या संस्कृत न जानने से मूर्ख अविद्वान् वा निन्दित अप्रतिष्ठित हो सकता है? ऐसे ही धन्वन्तरि जी की प्रतिष्ठा प्रशंसा आयुर्वेद के व्याख्यान से हुई है धर्म विषय से नहीं। आयुर्वेद का काम भी मनुष्यों को बहुधा पड़ता है उस के यथार्थ जानने से सुख भी मिल सकता है इसी से वह परोपकारक शास्त्र है। आयु का सम्बन्ध शरीर के साथ है शरीर का अच्छा हृष्ट पुष्ट नीरोग रखना ठीक २ रक्षा करना इससे भी शरीर सम्बन्धी सुख और अवस्था बढ़ती है। परन्तु सुख दुःख का विशेष सम्बन्ध मन और आत्मा के साथ है। मानस और आत्मिक सुख की मुख्य प्राप्ति धर्म के आधीन है इस से अन्तरङ्ग होने के कारण आयुर्वेद की अपेक्षा धर्मशास्त्र बड़ा है। धर्मानुकूल मन और आत्मा की शुद्धि वा सुधार हुए विना शरीर की भी यथोचित रक्षा नहीं हो सकती क्योंकि आत्मा वा मन में जैसी विचारशक्ति हो

गो वैसा ही शरीर का भी प्रबन्ध कर सकता है अच्छी समझ होने से ही सब काम अच्छे हो सकते हैं। और गर्भाधानादि संस्कारों के करने में आयुर्वेद का आश्रय अवश्य लेना चाहिये सो ठीक है पर इस कथन से यह कैसे सिद्ध हो गया कि मांस खाना सामान्य दशा में अच्छा है वा गर्भाधान में खाना आवश्यक है। सुश्रुत में गर्भाधान का विषय शारीर स्थान में है। सुश्रुत शारीरस्थान के शुक्रशोणितशुद्धिनामक द्वितीयाध्याय में गर्भाधान के पूर्व स्त्री पुरुषों के लिये भोजनार्थ विचार लिखा है कि—

ततोऽपराह्णे पुमान् मासं ब्रह्मचारी सर्पिःस्निग्धः सर्पिःक्षीराभ्यां शाल्योदनं भुक्त्वा मासं ब्रह्मचारिणीं तैलस्निग्धां तैलमाषोत्तराहारां नारीमुपेयाद्रात्रौ सामादिभिर्विश्वास्य विकल्प्यैवं चतुर्थ्यां षष्ठ्यामष्टम्यां दशम्यां द्वादश्यां चोपेयादिति पुत्रकामः ॥

अर्थः—तदनन्तर अर्थात् ऋतु समय में तीनदिन यथोचित आचार विचार रख के स्नान कर शुद्ध हुई स्त्री शृङ्गारादि शुद्धि करके सबसे पहिले अपने पतिका दर्शन करे तत्पश्चात् ऋतुदर्शन से चौथे छठे आठवें दशवें अथवा बारहवें दिन दोपहर पीछे महीने भर पहिले से ब्रह्मचारी रहा पुरुष घी दूध मीठा मिला के शालिनामक चा-

से विरुद्ध तथा परस्पर विरुद्ध होने से स्वयमेव प्रायः खंडित हैं तब पूर्व पक्षी स्वा० द० के लेख का प्रमाण वा उदाहरण नहीं दे सकते क्योंकि स्वा० द० प्रामाणिक कोटि से गिर चुके हैं। इस कारण हम ब्राह्मणादि श्रुतियों वा अन्य प्रमाणों पर स्वतन्त्र राय लिखेंगे ॥

अब रहा संस्कारविधि की द्वितीयावृत्ति में „उपनिषदि गर्भलम्भनम्„ इस आश्वलायनीय सूत्र का लिखना सो उस सूत्र का अभिप्राय पुंसवन प्रकरण से है क्योंकि„ उपनिषदि गर्भलम्भनं पुंसवनमनवलोभनंच” इतना बड़ा आश्वलायन का सूत्र है। इस का स्पष्टार्थ यही है कि उपनिषद् में ऐसा विचार लिखा है कि जिस से गर्भस्थिति निर्विकल्प हो और पुंस नाम पुत्र ही उत्पन्न हो किन्तु कन्या न हो और उस पुत्र का अवलोभन नाम नाश वा मृत्यु भी न हो किन्तु बना भी रहे। इस से उपनिषद् के प्रमाण से आश्वलायन जी ने तीन बातें दिखाई हैं १-गर्भाधान व्यर्थ न जावे गर्भस्थिति अवश्य हो। २-पुत्र ही हो। ३-वह पुष्ट दीर्घायु भी हो बना रहे मर न जावे। यही आशय वहां टीकाकार ने भी लिखा है गर्भाधान के समय मांस खाना चाहिये यह अभिप्राय सूत्र और उसके भाष्य में कहीं भी नहीं है।

अब हम शतपथब्राह्मण के उस वाक्य की कुछ व्यवस्था लिखते हैं आशा है कि हमारे पाठक तथा मांसोपदेशक वा मांसाहारी लोग विशेष ध्यान देकर शोचें देखेंगे।

मांस भोजन विचार के तृतीय भाग के खण्डन में जो वेद मन्त्रों पर हमने लिखा है कि मांस शब्द का सामान्यार्थ खाये पिये वा उपयोग में लाए हुये वस्तुओं का तीसरा परिणाम है। अर्थात् खाने पीने शब्दों का व्यवहार वृक्ष वनस्पति घास आदि में भी होता वे भी खाते पीते हैं। इसी से खात डालने का प्रयोजन खाद्य से है कि जो वस्तु खात के नाम से आलू गोभी गेंहूं जौ आदि में डाला जाता है उसको वे खाते हैं। उस खाद्य से जो परिणाम वा विकार बनता वह रस धातु, द्वितीय परिणाम का नाम रक्त वा रुधिर तथा उस से जो तीसरा परिणाम बनता है उस का नाम मांस है। यह बात सुश्रुत के रक्त वर्णनीयाध्याय में स्पष्ट लिखी भी है कि—

उपयुक्तस्याहारस्य सम्यक् परिणतस्य यस्तेजोभूतः सारः परमसूक्ष्मः स रस इत्युच्यते। तथा रसाद्रक्तं ततो मांसं मांसान्मेदः प्रजायते ॥ इति।

इस प्रकार आयुर्वेद के सिद्धान्तानुसार वृक्ष, फल, मूल, कन्द, वनस्पत्यादि में भी इसी प्रकार खाये पीये का प्रथम परिणाम रस, द्वितीय शोणित वा रक्त और तीसरे परिणाम वा विकार का नाम मांस है। जिसको लोक में गूदा कहते हैं। और मनुष्य पशु पक्ष्यादि के शरीरों का भी गूदा रूप भाग ही वास्तव में मांस कहाता है। लोक वा लौकिक ग्रन्थों में मांसादि शब्द विशेष अर्थों

और उचित हो है। और उक्त तथा वृषभ का बैल अर्थ भी लोक में प्रधान ही रहेगा पर हिंसा दोष के अवसर में हिंसा को बचाने के लिये उन का ग्रहण नहीं करना चाहिये। तथा द्वितीय विचार यह भी अवश्य शोचनीय है कि आयुर्वेदीय ग्रन्थों में रसायन, मेधायुष्करण, पुष्टि वाजीकरण अर्थात् बलवीर्यवर्द्धक ओषधियों का जहां २ वर्णन लिखा गया है वहां २ मांस का नाम भी नहीं लिया गया किन्तु अन्य ओषधियों के सहस्रों योग लिखे हैं इन से भी स्पष्ट सिद्ध है कि अन्य ओषधियों के समान वा उन से अधिक वाजीकरण गुण मांस में उन लोगों ने नहीं माना था इन से भी गर्भाधान के प्रकरण में उक्त वृषभादि शब्दों से उन्हीं ओषधियों का ग्रहण करना चाहिये क्योंकि वे ओषधियां ही वाजीकरण में प्रधान हैं और उन का ग्रहण वैद्यक ग्रन्थों में लिया भी गया ही है तो निर्विकल्प सिद्ध हो गया कि बृहदारण्यक के उन वाक्यों का यही अर्थ है और मांसोपदेशक जी का अर्थ वा विचार सर्वथा युक्ति प्रमाण शून्य है।

यदि कोई महाशय हठ करें कि तुमने श्रुति के अर्थ में खेंचतान की है सो ठीक नहीं बृहदारण्यक श्रुति में मांस शब्द का प्रसिद्धार्थ लेना ही ठीक है तो हम इस पक्ष के अनुसार भी उत्तर देते हैं कि बृहदारण्यकमें पांच पक्ष हैं और वे पांचो काम्यविधि हैं किन्तु नित्य विधि नहीं हैं। और काम्यविधि करने का वही अधिकारी है

जिस को वैसी कामना हो। और कामना पूर्व संस्कार वा प्रारब्ध भोग के अनुसार होती है। और मुख्य धर्म वही है जो कामना विशेष आदि कारण के विना ही कर्त्तव्य ठहरे। इस से यह गौण है। सुनने में प्रिय कोमल अन्य के मन को अपनी ओर खेंचने वाली वाणी शुश्रूषिता कहावेगी ऐसी वाणी संप्रति अंगरेजों में है। यह अधिकांश सत्य से विपरीत होती है। इस कारण यहां मांस की प्रशंसा नहीं सिद्ध हुई। और मांसाहार धर्म नहीं किन्तु हिंसा दोषग्रस्त होने से पाप ही है। तब उस की इच्छा करने वाला पिता तथा पुत्र पूर्वजन्म के मांसाहारी सिद्ध होंगे उसी कुसंस्कार से मांसौदन पकाने खाने की इच्छा हो सकती है। क्योंकि सब चीज की इच्छा सब को नहीं होती इस से मांस की प्रशंसा सिद्ध नहीं होती। सारांश यह कि बृहदारण्यक श्रुति का अभिप्राय यह नहीं है कि मांस खाना चाहिये किन्तु जिन को यह इच्छा हो कि हमारा सन्तान ऐसा २ हो वे मांसौदन खा कर गर्भाधान करें। और इच्छा पूर्त्ति के लिये जो २ काम किये जाते हैं उन से होने वाले अपराध वा पाप का भागी भी करने वाला ही होता है यह युक्ति प्रमाणों से सिद्ध है। शास्त्र का दोष कुछ नहीं है। स्त्री पुत्रादि सम्बन्धी सुख लाभ के लिये हम लोग विवाह करते हैं तब उस में जो कुछ दोष अपराध हों उनके भागी भी हमी होंगे॥

अब इन के प्रथम भाग पर केवल थोड़ासा विचार और प्रकट करना है-सुश्रुत मांसवर्ग के आरम्भ में मांसोपदेशक जीने अपने प्रथम भाग के पृष्ठ १३ में यों लिखा है-

अत ऊर्ध्वं मांसवर्गानुपदेक्ष्यामः-तद्यथा जलेशया आनूपा ग्राम्याः क्रव्यभुज एकशफा जाङ्गलाश्चेति षण्मांसवर्गास्तेषां वर्गाणामुत्तरोत्तरं प्रधानतमाः ॥ सुश्रु० अ० ॥ ४६ ॥

अर्थः- इस से आगे मांस वर्गों का व्याख्यान करेंगे। जल के भीतर रहने वाले, दोनों ओर जल हो ऐसे जल समीपी स्थल में रहने वाले, ग्रामवासी, कच्चा मांस खाने वाले, जुड़े खुरों वाले घोड़ा आदि और जङ्गल में रहने वाले हरिण शृगाल आदि ये सब छः भागों में विभक्त मांस के छः समुदाय कहाते हैं। इन छहों में पिछले २ की अपेक्षा से अगले २ समुदाय का मांस उत्तम है। यह तो सुश्रुत का अक्षरार्थ रहा । अब हम न्यायशील पाठक महाशयों को सूचित कर ध्यान दिलाना चाहते हैं कि=इन छः वर्गों में पहिला वर्ग जलेशय नाम जल में रहने वाले प्राणी हैं जिन में भी मछली प्रधान कर खाई जाती है। यहां मांसाचार्य जी का यह अभिप्राय तो अवश्य ही है कि सुश्रुत के प्रमाण से ये सब भक्ष्य हैं परन्तु मनुस्मृति में यद्यपि "(मत्स्यादः सर्वमांसादस्तस्मान्मत्स्यान्विवर्जयेत) मछली खाने वाला सब मनुष्यादि के मांस

का भी खानेवाला है इससे मछलियों को न खावे।"
यह श्लोक मांसाचार्य जी ने चुरा लिया अर्थात् पञ्च-
माध्याय के अन्य श्लोक भक्ष्याभक्ष्य सम्बन्धी लिखते स-
मय अपने द्वितीय भाग में इसको नहीं लिखा तथापि
मनुस्मृति पुस्तक में तो विद्यमान ही है। इस श्लोक से
स्पष्ट मत्स्य भक्षण की निन्दा है और यहां सुश्रुत से स-
भी जलचरों का भक्ष्य होना मांसोपदेशक जी मानते हैं
तो इन दोनों में क्या सत्य है? एक को मिथ्या मानना
पड़ेगा क्योंकि इन के मत में दोनों ही धर्मशास्त्र हैं। सो
आशा है कि हमारे पाठक उन लोगों को ठीक उत्तर
देने के लिये बाधित करेंगे।

सुश्रुत के मांसवर्गों में तीसरा वर्ग ग्राम के रहने वाले
गाय,भैंस,भेड़ बकरी आदि हैं जिन सबको सुश्रुत धर्मशास्त्र
के प्रमाण से भक्ष्य ठहराने का उद्योग मांसाचार्य जी ने
किया है। और मनुस्मृति अ०५। श्लोक ११ को मांसभोजन
विचार द्वितीय भाग के पृष्ट ५ में लिखा है "तथा ग्राम
निवासिनः" (ग्रामके रहने-वाले पशुपक्षियों को न खावे)
मांसाचार्य जी के मत में सुश्रुत बड़ा धर्मशास्त्र है क्योंकि
इसमें मांस खाने का विधान अधिकहै और मनु को क-
दाचित छोटा धर्मशास्त्र मानते हों तथापि इनको लज्जा
नहीं आती कि मनुके प्रमाण से जिन ग्रामनिवासियों को
अभक्ष्य कहते उन्हीं को सुश्रुत के प्रमाण से प्रथम भाग
में भक्ष्य ठहराते हैं तब कहिये मांसाचार्य जी! आप
अपने प्रथम भाग के लेख को सत्य ठहरावेंगे वा द्वितीय

के को, एक आपको अवश्य मिथ्या कहने मानने पड़ेगा। स्मरण रक्खो अब दो में एक को मिथ्या कहे विना छूटोगे नहीं ॥

इन्हीं मांस वर्गों में चौथे क्रव्यभुज-कच्चामांस खाने वाले गीध, चील कौवा आदि पशु पक्षी हैं जिन को यहां सुश्रुत के प्रमाण से मांसाचार्य जी ने भक्ष्य कहा और माना तथा भाग २ के पृ० ५ में मनु० अ० ५ के श्लोक ११ "क्रव्यादान् शकुनीन्सर्वान्०,,से अभक्ष्य कहा वा माना है। तो कहिये कौनसा लेख इन का सत्य माना जाय ?। तथा इन मांसवर्गों में पांचवें वर्ग के एकशफ-एक खुर वाले घोड़ा गधादि को सुश्रुत से मांसोपदेशक जी ने भक्ष्य माना और मनु० अ० ५ श्लोक ११ तथा मांसभोज० भाग २ पृ० ५ में "एकशफान्०,,लिख कर उन्हीं एक खुर वाले घोड़ा गधा आदि को अभक्ष्य लिखा है। क्या द्वितीय भाग लिखते समय ये रोगादि के कारण थे और प्रथम भाग लिखते समय रोगादि को हटाने वाले ये ही होगये ?। सो पाठक महाशयो ! इन मांस पार्टी के आ० समाजी लोगों से बल देकर पूछिये उत्तर मांगिये कि इन परस्पर विरुद्ध दो लेखों में तुम्हारा कौनसा लेख सत्य है ? बताओ। एक को अपने मुख से मिथ्या कहो। तथा प्रथम भाग के २१ पृष्ठ में ग्राम कुक्कुट को मांसचार्यजी ने भक्ष्य माना और अच्छी प्रशंसा की है तथा भाग२ के पृष्ठ ५ में मनु अ० ५ के १२ श्लोक को लिख कर ग्राम के मुर्गा को अभक्ष्य कहा है। तथा भाग एक के २१ पृष्ठ में

कोयष्टिनामक पक्षी को सुश्रुत के प्रमाण से भक्ष्य और उसी को भाग२ के ६ पृष्ठ में अभक्ष्य कहा है। चोंच से छेद२ पीड़ित कर२ कीड़ों को खाने वाले परेवा कबूतर गलगलिया शुक सारिकादि को सुश्रुतकार ने प्रतुद कहा और माना है जिनको मांसाचार्य ने प्रथम भाग के पृष्ठ २१ में लिखा है और भाग२ के पृष्ठ ६ में मनु अ० ५ के १३ वें श्लोक (प्रतुदान्०) इत्यादि को लिखकर अभक्ष्य ठहराया है। तथा शुक और सारिका को पृष्ठ ५ में मनु अ० ५ के श्लोक १२ से अभक्ष्य कहा और भाग १ के पृष्ठ१२ में सुश्रुत के प्रमाण से उन्हीं दोनों को भक्ष्य कहा है। भाग २ के पृष्ठ ५ में जल में गोता लगाने वाले प्लवनामक पक्षियों को मनु के प्रमाण से अभक्ष्य कहा है और प्रथम भाग के ३३ पृष्ठ में सुश्रुत के प्रमाण से उसी प्लवनामक पक्षी जाति को भक्ष्य माना है। तथा हंस चक्रवाक और सारस को द्वितीय भाग के ५ पृष्ठ में मनु के प्रमाण से मांसाचार्य ने अभक्ष्य माना और इन्हीं तीनों को प्रथम भाग के पृष्ठ३८ में के सुश्रुत प्रमाण से भक्ष्य लिखा है।ऐसे सैकड़ों दोष प्रमाद वा परस्पर विरोध इन के लेख में विद्यमान हैं। उदाहरण (नमूना) मात्र लिख दिये वा दिखा दिये हैं। अब कहिये मांसोपदेशक जी! क्या उत्तर दोगे अपने प्रथम भाग पर हरताल फेरोगे वा द्वितीय को मिथ्या कहोगे। स्मरण रक्खो अब तुम को दो में एक लेख मिथ्या अवश्य मानना पड़ेगा छूटोग नहीं ठीकर पकड़े गये हो। पाठक

महाशयो ! ध्यान देना कि सुश्रुत और मनुस्मृति से प्रथम द्वितीय भाग में मांस सिद्ध करने में इनका लेख के मारे स्पष्ट ही परस्पर विरुद्ध है। और हमारे मत में इनमें से कोई दोष इस लिये नहीं है कि सुश्रुत को हम विधायक धर्मशास्त्र नहीं मानते किन्तु सब पदार्थों के गुण [illegible] का वर्णन करना उस ग्रन्थ का प्रधान काम है और [illegible] के उन श्लोकों की व्यवस्था इन के द्वितीय भाग के [illegible]न में लिखी गयी है। आशा है कि इन बातों [illegible]सार हमारे पाठक लोग मांसाहारियों से बचेंगे।

इससे आगे प्रथम भाग के पृष्ठ ६४ से लेकर लिखा है कि स्वा० द० ने गर्भाधानादि विधि सुश्रुत के अनुसार करनी लिखी है। इस का उत्तर हम पूर्व दे चुके हैं। इन मांसाचार्य जी को गर्भाधान के समय मांस खाने का विधान कहीं सुश्रुत में नहीं मिला तो गर्भस्थिति के समय दौहृद आदि समय पर मांस खाने का प्रमाण लिखा है कि-

गोधामांसाशने पुत्रं सुषुप्सुं धारणात्मकम्।
वराहमांसात्स्वप्नालुं शूरं संजनयेत्सुतम्॥

सुश्रुत शारीरस्थान अ० ३। गर्भिणी को गोह के तथा सुअर के मांस खाने की इच्छा हो और दिया जाय तो अधिक सोने वाला धारणाशील शूर वीर पुत्र उस के होवे।

उ०-प्रथम तो यहां मांस की कोई प्रशंसा विशेष नहीं है। द्वितीय शोचनीय यह है कि मांसाहारिणी स्त्री को

ऐसी इच्छा होना सम्भव है। जो जिस काम को कभी नहीं करता उसको उसकी इच्छा भी नहीं हो सकती। सब इच्छा गुप्त वा प्रकट प्रत्यभिज्ञान नाम पूर्व के स्मरण से होती हैं। यदि गर्भस्थ की इच्छा से गर्भिणी को इच्छा होती वह गर्भस्थ जीवात्मा पूर्व जन्म का मांसाहारी अवश्य होगा। जैसे मद्यपानी अफीमी आदि को वह २ वस्तु न मिलने से उन को महा कष्ट वा मरण तक हो जाता है वैसे मांस की इच्छा उत्कट हो और मांस न मिले तो गर्भस्थ को भी हानि पहुंचे यह सम्भव है तथापि इतने से मांसभक्षण धर्म वा कर्त्तव्य कोटि में नहीं आसकता। ऐसा हो तब तो मद्य मैथुन भंग अफीम आदि भी उन २ व्यसनियों के लिये धर्मानुकूल मानने पड़ें तथा चोरी करने का अवसर मिले विना चोर को भी हानि और उस को कष्ट होता है तो चौर्य कर्म भी कर्त्तव्य में ठहराने पड़ेगा। क्या मांसाचार्य जी सब दुष्ट व्यसनों को कर्त्तव्य ठहरा सकेंगे?। तथा हम पूछते हैं कि सुश्रुत के शारीरस्थान के उसी तीसरे अध्याय में यह भी लिखा है कि "गवां मांसे च बलिनम्०" गौ का मांस खाने की इच्छा गर्भिणी को हो और गोमांसखाने को मिले तो पुत्र बलवान् होगा। इस प्रमाण को मांसाचार्य जी ने क्यों छोड़ दिया?। क्या इस को मांसोपदेशक जी प्रक्षिप्त मानेंगे? जब कि सुश्रुत को मांस भक्षण करने के लिये धर्म शास्त्र मानने का उद्योग करते

हैं तो धर्म शास्त्रमें ऐसी बात देखकर डरे होंगे कि हम को लोग अत्यन्त बुरा कहेंगे। और हमारे मत में तो यह दोष इस कारण नहीं है कि हम सुश्रुत को धर्मशास्त्र नहीं मानते किन्तु ईसाई मुसलमान आदि से भी हमारे समान ही सुश्रुत का सम्बन्ध है। जो स्त्री वर्त्तमान जन्म में गोमांस खाती रही है वा जिस गर्भस्थ बालक ने पू जन्म में गोमांस खाया है उन्हीं को गर्भावस्था में भी उस मांस के खाने की इच्छा हो सकती है। उन्हीं के लिये सुश्रुत का कथन सिद्धानुवाद है विधिवाक्य नहीं है।

इसी प्रकार गर्भावस्था के भिन्न २ महीनों में गर्भिणी के भोजनों में मांस का नाम जहां २ आया है वहां भी मांसाहारिणी स्त्रियों के लिये दिखाया गया है स के लिये नहीं और मांस के प्रसंग में सुश्रुतकारने ध कहीं नहीं लिखा कि सामान्य कर वा विशेष कर कि को किसी का मांस खाना धर्म है। इस से भी सुश्रुत धर्म से सम्बन्ध न होना सिद्ध हो है। इस प्रकार सुश्रु त के धर्मशास्त्र न होने, स्वा० द० का प्रमाण देना मिथ्य होने तथा मनु के प्रमाणों से द्वितीय भाग के लिखे ले से अधिकांश विरुद्ध होने आदि के कारण इन का प्रथ भाग का सब लेख मिथ्या सिद्ध हो गया। आशा है कि पाठकों को इतना ही लिख देने से मांसपार्टी वाले आ समाजियों का लेख वा अन्यमांसाहारियों का पक्ष अच्छे प्रकार तुच्छ प्रतीत हो जायगा॥

इति॥